बम्बई चिन्तामणि पार्श्वनाथादि

स्तवन-पद-संग्रह

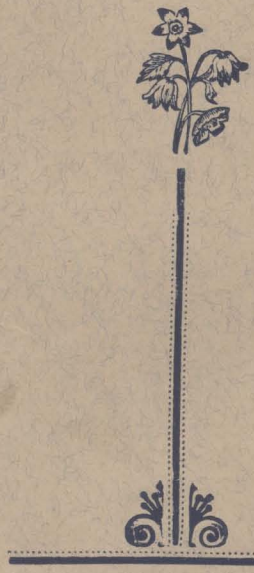

प्रकाशकः—

ट्रस्टीगण

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ मन्दिर, बम्बई

Jain Education International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अभय जैन ग्रन्थालय ग्रन्थाङ्क १८

खरतर गच्छीय वाचक श्रीअमरसिन्धुर जी

रचित—

बम्बई चिन्तामणि पार्श्वनाथादि

स्तवन-पद-संग्रह

सम्पादकः—

अगरचन्द नाहटा

भँवरलाल नाहटा

प्रकाशकः—

ट्रस्टीगण

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर, बंबई,

सं० २०१४.] [मूल्य प्रभुभक्ति.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१. प्रस्तावना से ६
२. प्रतिमालेख ७ से १०
१. आदिजिन स्तवन पृ. १
२. नेमिजिन पदानि पृ. १ से २५ तक
३. गौड़ी पार्श्वनाथ होरी २५
४. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवनानि २६—६२
५. जिन स्तवनानि (जयमाला, जिन वाणी) ६३—८७
६. सिद्धाचल स्तवन (सं. १८६० बम्बई) ८८
७. ज्ञान पंचमी स्तवन ८६—६१
८. दादा गुरु गीतानि (जिनदत्तसूरि, जिनकुशलसूरि, जिन महेन्द्रसूरि) ६२—१०५
६. भैरव गीतानि १०६—११०
१०. पद, होरी संग्रह ११०—१४८
११. पटवा संघ तीर्थमाला (मध्य त्रुटित) सं. १८६३ १४६
१२. शान्ति-पार्श्व स्तवन (त्रुटित) १५५
१३. जिन कुशलसूरि छंद (सं. १८८२) १५६
१४. चक्रेश्वरी और अंबिका गीत १६१

मुद्रक:—
जैन प्रिन्टिंग, प्रेस
कोटा (राजस्थान)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

जैन धर्म में ज्ञान, दर्शन और चारित्र को मोक्ष का मार्ग बतलाया है। जैनेतर दर्शनों में उनकी संज्ञा, भक्ति, ज्ञान और योग या कर्म मार्ग है। वैष्णव धर्म में भक्ति को प्रधानता दी गई है, वेदान्त में ज्ञान को और मीमांसक आदि में क्रिया काण्ड को तथा योग दर्शन एवं गीता में जो कर्म एवं योग मार्ग की प्रधानता हैं इन सब का समन्वय जैन मनीषियों ने 'ज्ञान, दर्शन और चरित्र' इस त्रिपुटी रुप मोक्ष मार्ग में कर लिया है। गुणी जनों के प्रति आदर भाव, मानव में गुणों के विकास करने का सरल मार्ग है। किसी आप्त पुरुष के प्रति श्रद्धा होने पर उनके बतलाए तत्व ज्ञान व धर्म मार्ग के प्रति श्रद्धा होती है और उन विशिष्ट ज्ञानियों के प्रति श्रद्धा व आदर का भाव ही भक्ति की मूल चेतना है। भक्ति की अन्तिम परिणति भक्त का भगवान् के साथ अभेद या तादात्म्य संबंध स्थापित होना है। गुणी पुरुष का गुणगान करके मनुष्य उन गुणों के प्रति आकर्षित होता है और अपने में उन गुणों का विकास करने की भावना व प्रयत्न, उसे आगे बढ़ा कर परमात्म स्वरूप बना देता है। इसीलिए सभी धर्मों में अपने उपकारी व गुणी महापुरुषों, भगवान व परमात्मा के गुणगान की प्रवृत्ति नजर आती है। जैन धर्म में भी तीर्थंकरों और गुरुओं के स्तुति व गुणानुवाद रुप भक्ति पदों का प्राचुर्य मिलता है। आत्मोन्नति के लिए समय २ पर आत्मा को प्रबोध देने वाली वैराग्य और आध्यात्मिक भावनाओं का विकास आवश्यक होने से प्रेरणा दायक वैराग्योत्पादक और आध्यात्मिक पद भी जैन कवियों ने प्रभूत मात्रा में रचे हैं। वैसे ही भक्ति और प्रबोधक पदों का यह संग्रह ग्रंथ पाठकों के समक्ष उपस्थित है। खरतर गच्छीय वाचक अमरसिंधुर के समय-समय पर निकले हुए भावोद्गार प्रस्तुत संग्रह में संकलित किये गये

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हैं। आशा है पाठकों को भक्तिविभोर करने और आध्यात्मिक प्रेरणा देने में ये स्तवन-पद सहायक सिद्ध होंगे।

इस ग्रंथ में जिन वाचक अमृत सिंधुर की पदावली का संग्रह है उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दे देना आवश्यक हो जाता है। 'बृहत् खरतर-गच्छ' के सुप्रसिद्ध छोटे दादा साहब-गुरुदेव-श्री जिन कुशल सूरि जी की शिष्य परंपरा में ही वाचक अमर-सिंधुर हुए हैं। इनका मूल नाम अमर-चन्द था। सं० १८४० की चैत्र बदी ४ को जैसलमेर में जिन लाभ सूरि के पट्टधर जिनचन्द्र सूरि जी ने इनको दीक्षा दी। दीक्षानंदी की सूचि में इनका मूल नाम अमरा, दीक्षा नाम अमर सिंधुर और इन्हें युक्ति सेन गणि का पौत्र (पोता-चेला) लिखा है। अमर सिंधुर जी ने अपने रचित 'निनांणुं प्रकार की पूजा' की प्रशस्ति में उस पूजा की रचना का समय स्थान और अपनी गुरु परंपरा निम्नांकित पद्यों द्वारा बतलाई है:—

अढारैं अठ्यासी वरसे, सुदि तेरस सलहीजे ॥भ० जा० ॥
वैशाख मास मंबई बिंदर, बिंदर मेरु वदीजे ॥भ० जा०॥१२॥
तेवीसम जिनवर त्रिभुवन पति, सकलाई सलहीजे ॥भ० जा०॥
श्री चिंतामणि पास पसाये, गुणमणि नित गाईजे ॥भ० जा०॥१३॥
सदगुरु कुशल सुरीसर साहिब, गछ खरतर गाईजे ॥भ० जा०॥
सकल संघ सुख संपत्ति दायक, पद युग नित प्रणमीजे ॥भ० जा०॥१४॥
सूरि सिरोमणि आंण अखंडित, हरष सूरीसर राजे ॥भ० जा०॥
वड खरतर चौशाख विराजे, क्षेम शाख चढत दिवाजे ॥भ० जा०॥१५॥
वाचक युक्तिशेन जस धारी, तेहनो सीस तवीजे ॥भ० जा०॥
जैसार सीस वाचक पदधारी, अमरसिंधुर सलहीजे ॥भ० जा०॥१६॥
पूज निनांणुं प्रकारनी कीधी, भविजन मिल गाईजे ॥भ० जा०॥
मंगल माल वधे तिहां दिनदिन, वंछित फल पाईजे ॥भ० जा०॥१७॥

इति श्री सिद्धाचल जी निनांणुं प्रकारनी पूजा संपूर्ण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यह पूजा 'श्री जिन पूजा महोदधि' नामक ग्रंथ में प्रकाशित हो चुकी है। इसकी रचना सं० १८८८ वैशाख सुदि १३ को बंबई में श्री चिंतामणि पार्श्व नाथ के प्रसाद में हुई। श्री जिन कुशल सूरि जी के शिष्य महोपाध्याय विनय प्रभ उनके शिष्य उपाध्याय विजयतिलक और उनके शिष्य वाचक क्षेम कीर्ति हुए। जिनकी शिष्य संतति क्षेम शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई है। उसी शाखा में वाचक युक्तिसेन के शिष्य वाचक जयसार के शिष्य वाचक अमर सिंधुर हुए। आपके गुरु जयसार जी के रचित दो ग्रंथ उपलब्ध है जिनमें से कार्तिक-पूर्णिमा व्याख्यान, संस्कृत गद्य में सं० १८७३ जैसलमेर में रचा गया और दूसरा ग्रंथ 'श्रेणिक चौपाई' राजस्थानी पद्य में है जिसकी सं० १८७६ की लिखी हुई प्रति श्री बद्रीदास जी के संग्रह(कलकत्ता) में है। उसमें दी हुई गुरु परंपरा के अनुसार आप महोपाध्याय सहज कीर्ति जैसे विद्वान की परंपरा में हुए हैं। महो. सहजकीर्ति के शिष्य पुण्यसार उनके शिष्य कनकमाणिक्य के शिष्य रत्नशेखर के शिष्य दीपकुंजर के शिष्य हर्षरत्न के शिष्य युक्तिसेन के शिष्य जयसार हुए। उपाध्याय सहजकीर्ति का विशेष परिचय जैन सिद्धांत भास्कर वर्ष १६ अंक २ में हम प्रकाशित कर चुके हैं। अतः उनकी पूर्व परंपरा और उनकी रचनाओं आदि का परिचय उस लेख में देखा जा सकता है।

अमर सिंधुर के निनांणुं प्रकार की पूजा के अतिरिक्त प्रदेशी चौपाई (सं० १८६२ काती वदी ६ बंबई), और १६ स्वप्न चौढ़ालिया प्राप्त है, इनके अतिरिक्त प्राप्त छोटी समस्त रचनाओं का संग्रह इस ग्रंथ में किया जा चुका है। पर इनमें कई रचनाएँ त्रुटित रुप में प्राप्त हुई हैं। जिस प्रति से इनका संकलन किया गया है वह गुटका कवि के स्वयं लिखित हमारे संग्रह में है। इसमें करीब २५० पदादि रचनाएँ हैं, जिनमें से कुछ ही दूसरे कवियों की हैं बाकी अधिकांश अमर सिंधुर जी के ही रचित हैं। इस गुटके के प्रारंभिक २६ पत्र जिनमें ३६ स्तवन-पद थे, प्राप्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नहीं हुए और इसी तरह पत्र ४२ से ६२ तक के २१ पत्र भी इसमें नहीं हैं जिनमें नं० ५१ से ७७ तक के २२ पद थे। फिर नं० ६४ और ७०–७१ वाले ३ पत्र भी इस प्रति में नहीं हैं। जिनमें नं० ७६–८० वाले पद्यों का अंत व आदि का कुछ भाग और नं० ६१ से ६४ तक के पद्य थे। अन्य प्रति के नहीं मिलने से हम अमर सिंधुर जी के इस प्रति में अप्राप्त करीब ६५ स्तवन–पदों को इस ग्रंथ में सम्मिलित नहीं कर सके। इस गुटके के अंतिम पत्रों में जैसलमेर के बाफणा–पटवा–सेठ बहादुरमल आदि ने जो शत्रुंजय आदि तीर्थों की यात्रा के लिए विशाल संघ निकाला था, उसका विवरण देने वाली तीर्थमाला है जिसके १५½ पद्य लिखने के बाद रिक्त स्थान छूटा हुआ है आगे के पद्य नहीं लिखे गए। उस रचना के अंतिम कुछ पद्य एक अन्य पत्र में प्राप्त हुए जो इस प्रति का अंतिम पत्र था। उसमें जितने पद्य मिले वे भी इस ग्रंथ में दिये गए हैं फिर भी बीच के ८ पद्य अभी तक त्रुटित ही रहे हैं। इसी प्रकार श्री जिन कुशल सूरि जी के छंद की प्रति का भी अंतिम तीसरा पत्र ही मिला, जिससे इस छंद के भी करीब ४६ पद्य दिये नहीं जा सके। इसी तरह प्राप्त गुटके में भी बीच २ के जो पत्र कम हैं, उसके कारण आदि जिन स्तवन, पार्श्व स्तवन और शांति स्तवन भी त्रुटित रूप में ही दिये जा सके हैं। किसी सज्जन को इन त्रुटित रचनाओं की पूरी प्रति और अप्राप्त करीब ६५ पद जो इस संग्रह में नहीं दिये जा सके; प्राप्त हों तो हमें सूचित करने की कृपा करें। 'चक्रेश्वरी' और 'अंबिका' के दो गीत जो अंत में दिये गए हैं वे एक अन्य प्रति में थे। इनके रचयिता अमर व अमरेस, वाचक अमर सिंधुर ही हैं, यह निश्चय–पूर्वक तो नहीं कहा जा सकता पर संभावना के रूप में ही उनको यहाँ संग्रहीत किया गया है। अमरसिन्धुर के उपलब्ध पद बिना किसी क्रम के लिखे हुए मिले थे और उनका उनके अंत में रचनाओं का नाम भी नहीं दिया गया है। इसलिए हमने अपने विचारों के अनुसार रचनाओं का नाम करण और अनुक्रम ठीक करके इस ग्रंथ को संकलित किया है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाचक अमरसिंधुर जी ने यह गुटका सं० १८८८ बंबई में अपने शिष्य पं० रुपचन्द और आनन्दा के वाचनार्थ लिखा है। पदांक १२५ के बाद लेखन प्रशस्ति इस प्रकार दी गई है :— ॥ सं० १८८८ वर्षे मिती फागुन सुदी ६ रवौ श्री मंबुई विंदरे एकादसवीं चतुर्मासी कृता। लिखतम् वाचक अमर सिंधुर गणि पं० रुपचंद पं० अणन्दा वाचनार्थम् श्री बृहत खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिन कुशल सूरिशाखायाम् ॥

वैसे यह गुटका सं० १८६१–६३ तक लिखा जाता रहा है पदांक १ से ६२ के बाद फिर नई संख्या १ से प्रारंभ होती है और नं० १७ तक संख्या देकर पिछले पदों के संख्यांक नहीं दिये गये। सं० १८६२ में जिन हर्ष सूरि जी के स्वर्गवास के बाद उनके २ शिष्य जिन सौभाग्य सूरि जी और जिन महेन्द्र सूरि जी से दो अलग शाखाएँ हुई। वाचक अमर सिंधुर इनमें से जिन महेन्द्र सूरि जी के अनुयायी रहे।

वा. अमर सिधुर जी ने उपरोक्त लेखन प्रशस्ति में सं० १८८८ में बंबई का ११ वां चौमासा लिखा है। इससे सं० १८७७ से सं० १८६१ तक तो वह बंबई में रहे, निश्चित है। फिर सं० १८६२ में पटवा के संघ में सम्मिलित हुए होंगे। उन्होंने बंबई में रहते हुए ही अधिकांश रचनाए की हैं और एक विशिष्ट और चिर स्मरणीय कार्य यह किया कि श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ का मंदिर, धर्मशाला व उपाश्रय श्रावकों को उपदेश देकर प्रतिष्ठित किया। इनके लिए ८ वर्ष तक उन्हें प्रयत्न करना पड़ा। चिंतामणि जी का मन्दिर कोठारी अमरचंद, भाई वृद्धिचन्द के पुत्र हीराचंद ने बनाया जिनका उल्लेख उन्होंने "चिंतामणि–पार्श्वनाथ स्तवन" में किया है जो इस ग्रंथ के पृष्ठ २६ में मुद्रित हुआ है। पृष्ठ ३० में प्रकाशित स्तवनों में मूल नायक प्रतिमा के सूरत से आने का उल्लेख है। सबसे अधिक स्तवन बंबई के चिंतामणि पार्श्वनाथ की स्तुति के रूप में ही बनाए गए हैं इसलिए उसी की प्रधानता को प्रकट करने के लिए इस ग्रंथ का नाम 'बंबई चिंतामणि पार्श्वनाथादि स्तवन संग्रह' रखा गया है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इस चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर के प्रतिमा लेख जो भँवरलाल ने बम्बई जाने पर नकल किये थे, उन्हें भी यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। कुछ प्रतिमा लेख पच्ची में दब जाने आदि के कारण नहीं लिए जा सके। उन्हें संभव हुआ तो अगले संस्करण में दिये जायेंगे।

बम्बई के चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर के ट्रस्टी महोदयों को, इस मंदिर के बनाने की प्रेरणा और प्रतिष्ठा करने वाले वाचक अमर सिंधुर जी की प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने के लिए कहा गया तो उन्होंने भी इसे आवश्यक कर्त्तव्य समझ कर मंदिर जी के फण्ड से ही प्रकाशित करने की स्वीकृति दे दी इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है भविष्य में भी वे जैन साहित्य के प्रकाशन में इसी प्रकार सहयोग देते रहेंगे। महोपाध्याय श्री विनयसागर जी ने प्रूफ संशोधन कर इसे शीघ्र प्रकाशित करने में सहयोग दिया इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

अगरचन्द नाहटा
भँवरलाल नाहटा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर, बम्बई के

प्रतिमा लेख—

(नं० १,२,५ व नं० २४ वाली मूर्तियां सूरत से आई हुई हैं। अन्य मूर्तियों में से कुछ आनन्दपुर लक्ष्मणपुर (लखनऊ) एवं कांपिल्यपुर में प्रतिष्ठित हैं, बाकी बम्बई में।)

१. **मूलनायकजी** सं.१८२८ शा.१६९४ व.। वै. सु. १३ गुरु ओ.। वृ. शा.। भाईदासेन श्री गौड़ीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितंच। श्री खरतर गच्छे भ.। श्री जिनलाभसूरिभिः ॥

२. **मूलनायकजी** से बांये ओर– सं० १८२८ शा. १६९४ वै. सु. १३ गुरौ से.। भाईदासेन अनन्तनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे भ। श्री जिनलाभसूरिभिः **सूरत** विंदरे ॥

३. **मूलनायकजी** से बांये–सं. १८९३ व। माघ सुदी १० बुध····· श्राविका बाई श्री चन्द्रप्रभबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे भ। श्री जिनहर्षसूरि पट्टदिवाकर जं.। यु.। भट्टारक। श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभिः ॥

४. **पित्तल मय यंत्र**–सं.१९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री सिद्धचक्र जंत्र प्र। भ। श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभि का। गो। छाजेड़ ओसवाल हरप्रसाद तत् भारज्या सोनाबीवी श्रेयोर्थ–मानंदपुरे।

५. **मूलनायक जी** से दाहिनी ओर– स १८२८। वै.। शु.। १२गुरौ सेठ भाईदासेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतरगच्छे भ. श्रीजिनलाभ·····

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

६. दाहिनी ओर श्याम पाषाण प्र.–सं. १५ (?) १६ मि । वैशाख सुद ३ दिने श्री जिनस्यबिंबं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतरगच्छे·····

७. मूलनायकजी सं. दाहिने– ·· ····· कारापिता कोठारी सा. हीराचन्द तत्पुत्रः ····· ···

भमती में दाहिनी ओर देहरियों में—

८. सं. १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री पद्मप्रभजिनबिंबं कारितं श्रीमालान्वये भांडिया गो.। मूलचंद्र पुत्र जात्रीमल्लेन प्र.। वृ.। भ.। खरतर (?) श्री जिनचन्द्रसूरिभिः श्री ·····

९. संवत् १९२० फाल्गु सिति बुधे श्री शांतिनाथ पंचाल देशे कांपिल्यपुरे प्रतिष्ठितं श्रीमद् बृहद्भट्टारक खरतरगच्छाधिराज श्रीजिन–अक्षयसूरिपद·····भ श्रीजिन ·····

१०. सं. १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्रीयुगमंधर जिनबिंबं कारितं ·· श्रीमालान्वये फोफलिया गो.।··· · राय पुत्र सुखरायेण प्र.। वृ.।·····

११. सं. १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री सुविधिनाथ जिनबिंब कारितं ओसवंशे चोरड़िया गौत्रे चैन सुख पुत्र रत्नचन्द्रेण। प्र। वृ। भ। खरतरगच्छाधिराज श्री जिनचंद्रसूरिभिः श्रीजिनाक्षयसूरिपदस्थितै

१२. श्री चक्रेश्वरीजी १९७१

१३.·····०६ पो। ३ भ। श्रीजिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठिता

१४. सं० १८८८ माघ सुदि ५ श्री महावीरबिंबं कारितं श्री मालान्वये फोफलिया गोत्रे बखतावरसिंहस्य भार्या ज्ञाना·····

१५. संवत् १९१० फाल्गु सिति बुधे श्रीमा० महमवाल गो.। ला.। छजमल तत्पुत्र शिवपरसादेन श्री सुमतनाथ जिन बिंबं।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१६. सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री सुविधिनाथबिंबं कारितं श्री मालान्वय महिमवाल गोत्रीय जोतमल्लस्य भार्या रुपाख्यया पुत्र धूमीमल्लेन । प्र. । वृ. ।...................... ..

१७. सं. १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्रीचंद्रप्रभ जिनबिंबं कारितं । प्र. । वृ । भ । खरतरगच्छाधिराज श्रीजिनचंद्रसूरिभिः श्रीजिनाक्षयसूरिपद्स्थैः

—ः दोतल्ले स्थित लेख ः—

१८. संवत् १६२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ सुमति जिनबिंबं कारितं श्रीमाल छम.....जी भावसिंघ...

१६. सं. १६०४ । माघ शुक्ल १२ बुधे श्री शीतलनाथबिंबं पचालदेशे **कांपिल्यपुरे** प्रतिष्ठितं च श्रीमद्बृहत्भट्टारक खरतरगच्छीय श्रीजिन...

२०. सं० १८७७ माघ सु० १३ बु । उसवा. छजलानी गो...

२१. सं. १६०४ वर्षे शाके १७६६ प्र । माघ मासे...

२२. सं. १८८८ माघ शुक्ल ५ सोमे श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं ओसवंशो...

२३. संवत् १६।१३ शाके तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ५ भृगुवासरे श्रीमत्शांतिनाथ जिनदीक्षा कल्याणक पादुका ओसवंशे वैद महता गोत्रीय ...प्रसाद कालिकादास तत्पुत्र अबुजि तत्पुत्र शिखरचंद्रादि सपरिवारेण बृहत्खरतरगच्छीय भ. जिनजयशेखरसूरिभिः श्रेयः

२४. सं. १८२८ शा. १६६४ प्र. वै. सु. १२ गुरौ सा. । भाईदासेन श्री पद्मावतीमूर्ति कारिता प्र । श्रीखरतर ग...

२५ सं. १८८८ वर्षे मिती वैशाख सुदि...खेमचंद गोरा भैरव मूर्ति कारापिता प्र । वाणारस अमरसिंधुरगणिः खरतरगच्छे ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

२६. सं. १८६२ चैत्र शुक्ल राकायां चन्द्रवासरे लक्ष्मणपुरस्थ श्रीमालान्वये भांडियागोत्रे हिरदेसिंघ भार्या चुनियाख्या आचाम्ल तपोद्यापने श्रीसिद्धचक्रयंत्र कारापितं श्रीमद्बृहत्खरतरगच्छाधीश्वर जं.। यु.। भ.। श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थ भ० श्री जिननंदीवर्द्धनसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

२७. सं. १८६२ चैत्र शुक्ल राकायां चंद्रवासरे लक्ष्मणपुरस्थ श्रीमाल दुसाज उमदामल पुत्र। उमरामल तत्पुत्र बहादरसिंह माय मुनीयाख्या सिद्धचक्र कारापितं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतरगच्छाधिराज श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थ नंदिवर्द्धनसूरिभिः ।।

२८. संवत् १६१० फाल्गुन सिति २ बुधौ श्री धर्मनाथ जिनबिंबं पांचालदेशे कांपिल्यपुरे प्रतिं ··

२६. सं. १८८८ माघ शुक्ल ५ भौमे श्री अभिनंदन जिनबिंबं का.। ओसवंसे बहोरागोत्रे हर्षचंद्र पुत्र कीर्तिसिंहेन भार्या दुनिख्या ··

३० सं. १६२४ माघ शुक्ल ५ गुरौ नमीनाथ ··

नीचे गुरु मन्दिर में

३१. संवत् १६४२ शाके १८०७ माघ मासे भेशु शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ रविवासरे दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजिचरणकमलन्यास उद्धार कारापितं श्रीसंघेन श्री बृहत्खरतर गच्छीय जं। प्र। भ। श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।।श्री।। कल्याणनिधानगणिः उपदेशात् शुभं ।।

३२. संवत् १८८८ वष मिती वैशाख सुदि ३ सेठजी श्री मोतीचंदजी खेमचंद श्री कालभैरव मूर्ति कारापितं प्रतिष्ठितं वाणारस अमरसिंधुर गणि श्री खरतरगच्छे।

(प्र. जैन सत्य प्रकाश वर्ष २१ अंक ८)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खरतरगच्छीय वाचकोत्तंस

श्री अमरसिंधुरगणि रचित

बम्बई चिन्तामणि-पार्श्वनाथादि स्तवन-संग्रह

श्री आदि जिनस्तवन

जै बोलौ आदि जिनेसर की जै बोलौ।

.....।१।जै.।

.....छबि छाजत है कंचन की।२।जै.।

आदि राय नै आदि जिणेसर, आदि केवल महिमा इनकी।३।जै.।

तरत आप भविजन कुँ तारे, वाणि गरज है जिमघन की।४।जै.।

दीन दयाल कृपाल कही जै, पार न पावै को गुण की।५।जै.।

पूज रचावौ जिन गुण गावौ, अंगिया रचौ भल फूलन की।६।जै.।

आदीसर अलबेला साहिब, 'अमर' करै जै जै जिन की।७।जै.।

श्री नेमनाथ बोली

सुख संपत दायिक, जगत्रय नायक, लायक नेम जिणंद।

जादव कुल मंडण, दुःख विहंडण, प्रगट्यो पूँनिमचंद॥

शिवा देवी जायो, कुमरी गायो, सूतक क्रम मिल कीध।

सुरगिर न्हवराव्या, सुरपत आया, सकल मनोरथ सीध॥१॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रम महोच्छव कीधो, जग जस लीधो, समुद्र विजै सुपहांन।
अपछर मिल आवै, हरष वधावै, गोरंगी करि गांन॥
भोजन भल भगतैं, कीधो जुगतैं, पोषी सब परवार।
बोलावै वांणी, चित हित आंणी, नवलो नेमकुमार॥२॥
ब्रह्म व्रतधारी, जग हितकारी, सयल जीव सुखकार।
जे अनंग नें खंडी, रह्यो पग मंडी, छंडी राजुल नार॥
गिरवर गिरनारै, चढीय तिवारै, दीख ग्रही गुण धाम।
पंच महबय पालै, दोषण टालै, केवल वरीयो ताम॥३॥
तृ(त्रि)पदि मनरंगै, अधिक उमंगै, जंपै जगदाधार।
गणधर गुणधारी, परउपगारी, सूत्र रचै सुखकार॥
निज क्रम मल सोधै, भवि प्रतिबोधै, पवित्र करै पृथमाद।
क्रोधादिक वारी, समताधारी, निज तीरथ कर आद॥४॥
गए मुगत गिरंदै, सुरनर वंदै, लहै जिण सुक्ख अनंत।
अवन्यासी वासो, जोतप्रकाशी, भांगै साद अनंत॥
भवि भावन भावो, जिनगुण गावो, अधिक धरी आणंद।
नेमीसर नमियै, पातक गमीयै, 'अमर' लहो सुख कंद॥५॥

इति श्री नेमिनाथजीरी पूजारी बोली।

नेमि-राजमती-स्तवन

(राग—खम्भायती)

दीजीयै वधाई श्री महाराज. आवै छै जी आवै छै जी राज० दीजियै० जादव जांनी आवै छै जी राज। दीजीयै०। ए आंकणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दसे दसार नें रांम कन्हईयो, सकल रायां (राजन) सिरताज। दी.१।
कुंवर साढा तीन कोड हैं संगी, देव कुवर समराज। दी०२।
जादव जांनी खूब विराजै, सबल वएयो छै जी साज। दी०३।
शिवदेवी रुकमण सत्यभामा, सोल सहस गोपी गाज। दी०४।
ताल कंसाल मृदङ्ग वजत है, नौबत गहिरी गाज। दी०५।
केसरियो वर वींद विराजै, नेम कुमर महाराज। दी०६।
जांन बधाई बात श्रवण सुणी, खुसी भए महाराज। दी०७।
दीध बधाई हरष सवाई, उग्रसेन महाराज। दी०८।
राजुल पिण भई है बहुराजो 'अमर' बधाई आज। दी०९।

—:०:—

नेमि-राजुल-स्तवन

(राग—जंगलो अडाणो)

[अम्बिलै की डारी डारी कोइल बोलै कारी कारी।
पापी पपईयै मोहि आन सताई विरह की मारी॥
कोइल बोलै कारी कारी, अम्बिलै की०। ए चाल।]

सांवरे सैं हारी हारी, तज गयो प्यारी प्यारी। सां. त. १।
नाह विहुँणी मैं भई निरधारण, विरह नें मारंमारी। सां. त. २।
प्रिय संग जब रस रंग रमुँगी, हस दैंगें तारी तारी। सां. त. ३।
अब हुं भी मेरो प्रीत मनायो, जाउँगी मै लारी। सां. त. ४।
सहसा वन जाय संयम ल्युंगो, ममताकुँ मारी मारी। सां. त. ५।
नेमि राजुल मिल मुगत सिधाए, 'अमरेस' वारी वारी। सां. त. ६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजुल-स्तवन

(राग—जंगलै मैं ठुमरी)

(मन मैं पड्या अब प्रेम फंदा, छुड़दा नांहीं मेरे रांम । ए चाल मैं)

विण अवगुण मोहि नाह विसारी, गयो गिरंद मेरो आतम रांम । वि.
मैं याको कछु गुनह न कीनौ, सांवरो भज गयो मेरो सांम । वि.१।
पहिली प्रीतरीत दरसाई, कैसो अब नीपायो कांम । वि.२।
द्रोही नर इण सम नव दीठो, धीठो नर नहीं एहो गाम । वि.३।
बहियां देकै वैर विसायो, सासुअै स्युं जायो जांम । वि.४।
नव भव संगी आतम रंगी, नेम को रहिज्यो जुगजुग नांम । वि.५।
राजुल नवली प्रीत रची है, 'अमर' तणौ ए साचौ सांम । वि.६।

नेमि-राजुल-स्तवन

(राग—जंगलो)

कैसे समझाउँ सहीयां जदुपति मानै नहीं रे । कैसे०
पहिली प्रीत बनाय कै, झटक दिखायो छेह ।
राख्योही पिण नां रह्यौ, निगुण तजी गयो नेह । कैसे० १ ।
सुणौ सही प्राणेस विन, जमवारो किम जाय ।
विरहानल तन पीडियो, किसकुं कहीयै जाय । कैसे० २ ।
निरधारी तज नाहलो, चढियो गढ गिरनार ।
प्रीतरीत तज बावरै, विरवो कीध विचार । कैसे० ३ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वालमीयै विन सेजडी, रंग विरंगी जोय।
वहिली जाय ने बहिनडी, कंत मनाओ कोय। कैसे० ४।
झुरझुर पिंजर मैं भई, राजिंद विन दिनरात।
जमवारो किम जावसी, समरूँ सासो सास। कैसे० ५।
एक अंधारी ओरडी, बीजी वैरण रात।
काम कटक केडै लग्यौ, सबल लग्यो संताप। कैसे० ६।
इम किम रहीयै एकला, मैं जाऊँ पिउ पास।
नवलो नेह लगायकै, वसियै एकण वास। कैसे० ७।
राजुल इम आलोच ने, गढ पहुंती गिरनार।
सहिसा वन संयम लीयो, लहि केवल सुखकार। कैसे० ८।
सिव मंदर सुख सेजडी, रमै सदा मन रंग।
'अमर' वसै आणंद सुं, अवचल प्रीति अभंग। कैसे० ९।

नेमि-राजुल-स्तवन

(राग—अडाणौ चाल कैरवै री)

जादव वस करली ताबे मेरी ज्याँन। जादव०
सदरंग रसिया मनडै वसीया, जुगत भुगत कै जाण। जा० १।
तोरण आय कै पीछे सिधाए, हेतकी करकै हांन। जा० २।
जाय गिरनार भये हैं जोगी, मेरो न रह्यौ मांन। जा० ३।
मैं भी पिया संग संयम ल्युंगी, शील धरम सुप्रमांण। जा० ४।
नेम राजुल नवलौ नेह बाधौ, वसियै 'अमर' विमान। जा० ५।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजीमति-स्तवन

(मत वाहि छडीयां लग जायगी, ए जाति वसंत)

गिरनार पिउ कै संग जाउँगी, संग जाउँगी फिर घर नहीं आउँगी ।
भोग तजी ने जोग धरचो है, गुण वाही के नित गाउँगी । गि.१।
जोवन मेरो अंग भित है, ताहि बात दरसाउँगी । गि.२।
कह्यो मानै जो कंत हमारो, तो पीछो घर लाउँगी । गि.३।
जिम तिम प्रीत रीत कर कोरण, रुठडो नाह मनाउँगी । गि.४।
जो जग जीवन गेह न आवै, पतियाँ फेर पठाउँगी । गि.५।
'अमर' वधै जिम प्रीत अमारी, सोई सुजस बढाउँगी । गि.६।

नेमि-राजीमति-स्तवन

(राग—बसन्त)

कीनी मै सुखकारी, सखी मेरी इण भव ए इकतारी ।
नेम नगीनो है मेरो बालम, मैं हुँ उनकी नारी ।
भज तज मत जा प्रेम पियारे, मैं तेरी बलिहारी । सखी. १ ।
मैं तो तेरो अंग न तजहुँ, जो मोहि दैगौ गारी ।
जो गिरनार गिरंद चढैगो, तौ मैं आउँगी लारी । सखी. २ ।
सहसावन जाय संयम लीना, दोनूँ भए ब्रह्मचारी ।
'अमरसिंधुर' बाकुं नमन करत है, धन वह नर वा नारी । स. ३ ।

इति श्री पदम् ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजुल-स्तवन

(राग—बसन्त)

विभचारी भयो मेरो बालमीयो, आज भेद मै पायो। वारी. आज.।
सिव गणिका सै संकेत करीनैं, गढ गिरनारै छायो।
वारी गढ० विभ० आज० ॥ १ ॥

कुलवंती याकुं काहि कुं चहियै, वाहिसै चित ललचायो ;
मैं हि निगोरी भोरी भई हुं, यातै प्रेम लगायो।
वारी यातै० विभ० आज० ॥ २ ॥

कपट कीयै सै कारो भयो है, देवै प्रगट दरसायो ;
नव भव की इण प्रीत न जांणी, छिन मैं छेह दिरायो।
वारी० छिन० विभ० आज० ॥३॥

हम भी शिवत्रिय संग रहैगे, सुख हुय जेम सवायो ;
नेम राजुल मिल अचल वसे है, 'अमर' आणंद वधायो।
वारी अम० विभ० आज० ॥४॥

—:०:—

नेमि-राजीमति-स्तवन

(राग—फाग)

भोरी में सहियर बहुत भई, भोरी में।
पहिली इनकुं नहीं रे पिछाण्यौ, विरह वियापित तेण भई।भो.१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कालो नर सो कपटी होयै, ए ओखांणो जगत सही ।भो.२।
मुखड़ै रे मीठो चितड़ै रे झूठो,उर की बात सो आज लही ।भो.३।
पहिलो मोसै प्रीत वणाई, त्रिटक झटक छटकाय दई ।भो.४।
निसनेही मेरो नवल सनेही, इण की बात न जाय कही ।भो.५।
नव भव की इण प्रीत न जाणी, मेरी सार न एण लही ।भो.६।
एण तजी पिण हुँ नवि तजहुँ, ए मैं हिव इकतार गही ।भो.७।
सहिसा वन जाय संयम लीनो, तप जप केवल तबहि लही ।भो.८।
शिव मंदिर हिल मिल कै खेलैं, 'अमर' प्रिया प्रिय मीत भई।९।

—:०:—

नेमि-राजिमती-स्तवन

मनुआ मेरौ बावरो रे, राख्यो ही न रहाय । सहीयां.।
पहिली प्रीत पिछाण कै रे, जादव पासे जाय । सहीयां मनु.।
पहिली प्रीत लगाय के रे, इण चितड़ो लियो जी चोराय । स.।१।
नव भव नो ए नाहलो रे, इण लालच रही ललचाय । स. मे.।
मैं गोरी भोरी थई रे, कांई अंतरगत न लखाय । सहियां मे.।२।
धीठा मुह मीठा हुवै रे, भोला तिण भरमाय । सहियां मेरो.।
शिव रमणी संकेत सुँ रे, मोकुं छटक दई छिटकाय । सहियां ।३।
संग करी सुगुणा तणो रे, लै संयम सुखदाय । सहियां मे.।
नेम राजुल मुगते गया रे, प्रीत 'अमर' जिहाँ थाय । सहियां ।४।

—:•:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि राजिमती स्तवन

[टुनवा कर कर सांवरै मेरो मन हर लीनो जाय सहियां।
मेरे आंगण बोरड़ी वे मेरा पिया विण बोर कुण खाय सहियां–
ए चाल में वसन्त छै]

जदवा कर कर सांवरै रे, मेरो मन हर लीनों जाय, सहीयां जदवा०
मेरै जोवन झिल रह्यो रे, मेरै पिया विन किम रहवाय सहीयां। ज.१।
जान करी नें जुगत सुँ रे, अंग धरी उच्छाह सहीयां। ज. २।
गोखे ऊभी मैं गोरड़ी रे, निरखुँ नवलो नाह सहीयां। ज. ३।
अण परण्यां पाछा वल्या रे, दिलड़ै क्या आई दाय सहीयां। ज.४।
पशुअ पुकार को मिस करी रे, जादव पाछो जाय सहीयां। ज. ५।
पाछो रथड़ो फेरतां रे, कांइ मुखड़ो नहीं लजाय सहीयां। ज. ६।
मैं तो माहरै शील छुं रे,नहीं तो अवर लगन ले जाय सहीयां। ज.७।
लोक कहा सो सहु को करै, कांइ मुखड़ो किम देखाय सहीयां। ज.८।
तरणी परणी जे तजै रे, कल औखाणो थाय सहीयां। ज. ९।
मैं इक तारी मन धरी रे, इण भव ए वर थाय सहीयां। ज. १०।
पहिली प्रीत दिखाय कै रे, छटिक दई छिटकाय सहीयां। ज. ११।
विन अवगुण वनिता तजी रे, निस वासर किम जाय सहीयां। ज.१२।
कालो नर कपटी हुवै रे, सुगुण वयण कहिवाय सहीयां। ज. १३।
ए औखाणो ओलख्यो रे, जादव गिरवर जाय सहीयां। ज. १४।
पिउ पासे संयम लीयो रे, केवल पद दरसाय सहीयां। ज. १५।
नेम राजुल मुगते गया रे, 'अमर' आणंद वधाय सहीयां। ज. १६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजिमती-स्तवन

(ढाल—हुं तो नर हुँ तुहारा नगर में, धोलै धाहड़ै हां रे धोलै धाहड़ै मोहन लूँट लई, हुं तो० । ए चाल में छै—वसन्त)

हुँ तो न रहुँ तुहारा मंदिर में,
मैं जाऊँगी हांरे मैं तो जाऊँगी पिया के संग सखी, हुँ० ।

तोरण आए पशुअ छुराए,
कांइ हम पर रीस करी रे (२) मैं तो० ।१। हुँ तो० ।

कंत हमारा दयाल कहावौ,
तो मो पर महिर करो रे (२) मैं तो० ।२। हुँ तो० ।

रथड़ो फेरी शिव त्रिय हेरी,
जीवन जोग वरो रे (२) मैं तो० ।३। हुँ तो० ।

विन अपराध तजत हौ वनता,
कछु ही विचार करो रे (२) मैं तो० ।४। हुँ तो० ।

तरण पणै तरुणी नै तजता,
नहीं सोभाग वरो रे (२) मैं तो० ।५। हुँ तो० ।

राजुल जायके संयम लीनो,
केवल लाछ वरो रे (२) मैं तो० ।६। हुँ तो० ।

नेम राजुल परमानंद पायो,
"अमर" सुजस उचरो रे (२) मैं तो० ।७। हुँ तो० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजीमति-स्तवन

राग—काफी वसन्त

[ए री मेरो अंचरा पकर कै गयो,
चल्यो जा ऐसो खिलारू भयो न भयो, मेरो०, ए चाल]

ऐरी मेरो पिउ गिरिंद कै गयो,
सखीरी ऐसो नेह कियो न कियो।
ऐसो नेहरौ नोज भयौ,
मेरो पिउ गिरिंद गयो, सखि मेरो० ।१। आं०
अरज करी बहु एक न मानी,
कहो सखि कपट कियौ न कियौ ।२। स. ऐ.।
पहिली प्रीत लगाय प्रिया से,
कहो सखि छेह दियौ न दियौ ।३। स. ऐ.।
अब इनको वेसास न आवै,
कहो सखि मरम लह्यौ न लह्यौ ।४। स. ऐ.॥
तरणी मन हरणी नवि परणी,
कहो सखि जोगी भयौ न भयौ ।५। स. ऐ.।
द्वारिकावासी मुगत अभ्यासी,
कहो सखि पातिक दह्यो न दह्यो ।६। स. ऐ.।
मैं भी पिया दें संयम ल्युंगी,
कहो सखि नेहरो रह्यौ न रह्यौ ।७। स. ऐ.।
पिउ प्यारी अमरापुर वसियै,
सुगुणां सुक्ख भयो री भयो ।८। स. ऐ.।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजुल-स्तवन

राग—सोरठ वसन्त

(इस बांभण कै छोकरै, मेरे खेलत कंकर मारयो लला, इस० कंकर मारयो नै चुरीयां फोरी, बांहीयां पकर झकझोरी लला, इस चाल में छै)

इस जादव जादू (जुल्हम) किया,
मेरो चित चोरी कै गयो री लला । इस० ।
चितरो चोरी ने रथरो फेरी,
गिरवर जोगी भयो री लला । इस० ।१।
नगिनी जोरी भयो धम धोरी,
प्रीत रीत नहीं गिनी री लला । इस० ।२।
नेह की दोरी निगुणै तोरी,
नीत रीत इण छिनी रे लला । इस० ।३।
ममता मोरी काम कुं छोरी,
मै मन भोरी सुणि री लला । इस० ।४।
तज गयो गोरी नायो होरी,
इसरी सीख किण दई रे लला । इस० ।५।
दिल जाय दोरी न रहै ठौरी,
नेह कुं खोरी लगाई लला । इस० ।६।
मैं जाऊँ धोरी प्रीत न तोरी,
राजुल नेम सुं मिली री लला । इस० ।७।
न लगी खोरो जुगति जोरी,
'अमर' आणंद सै झिली री लला । इस० ।८।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजुल-स्तवन

(क्या बांन परी पिया तोरी रे, म्हांसुँ खेलण आया होरी
ए चाल मैं—वसन्त)

मैं चतुर न कीनी चोरी रे,
किम नाह तजी गयो होरी।
मैं चतुर०। तिण तज०। आंकणी

विण अपराध तजी क्युं वनता,
मोहन गयो मुख मोरी रे। किम० मैं च० १।

पशुवन की तैं पीर पिछाणी,
गुनह विनां तजी गोरी रे। किम० मैं च० २।

मात तात जादवपत वरजत,
गयो गिरनारै दोरी रे। किम० मैं च० ३।

विरह विथा कुं दूर विडारी,
रमियै रस रंग सोरी रे। किम० मैं च० ४।

प्रीत पुरांणी कबहुँ न तजीयै,
किम रहीयै इक कोरी रे। किम० मैं च० ५।

'अमर' कहै आनंद वधावो,
नेम राजुल मिली जोरी रे। किम० मैं च० ६।

—:o:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजीमति-स्तवन

राग—गहिर मल्हार

सहेली म्हारी आयो श्रावण मास ।
प्रीतमजी गिरनार पधारे, मोकुँ तजीय निरास । सहेली० १ ।
भोग तजी इण जोग भज्यो है, वेरी दे बे सास । सहेली०
तोरण आए मो मन भाए, आंणी अधिक उल्हास । सहेली० २ ।
पशुअ पुकार की पीर पिछानी, वसे सहसा वन वास । सहेली०
अलवेसर मो तजीय इकेली, बालम देवे सास । सहेली० ३ ।
राज पधारो रंग महिल मै, वसीयै जिम घर वास । सहेली०
विन अवगुण तजीयै किम वनिता, बालम हियडै विमास । स० ४ ।
मोपर मोहन महिर धरीजै, सेज रमो सुखवास । सहेली०
'अमर' प्रीत बाधी अलवेसर, वरतै लील विलास । सहेली० ५ ।

—:०:—

नेमि-स्तवन श्रावण तीज

राग—मल्हार

सहेली म्हांरी आई श्रावण तीज ।
सब सखियन सिणगार सजत है, मोहि बढत है खीज । स० १ ।
झूलरीयै मिल चलत है रमझम, दुखरो गयो तिहां छीज । स० २ ।
सुगुणा नाह निज निज सुंदरी कुं, चोही देत सब चीज । स० ३ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गज गमनी शशिवदनी सबही, ज्युं बादल की बीज । स०४ ।
मैं मंद भागन सब बनिता मझ, विरहन मैं रही भीज । स०५ ।
नेम नाह जो अब घर आवै, 'अमर' सफल हुय तीज । स०६ ।

नेमि-राजुल-स्तवन-वर्षा

राग—गहिर मल्हार

सहियां सांवण आयो, सखी मोरी, भोरी भाद्रव आयो ।
मेहरो री वरसै री जीवरो तरसै, नेम नगीनो न आयो ।
सखी मोरी भोरी भाद्रव आयो । आंकणी ।१।
चमकै दामिनि चिहुँ दिस चपला, घोर घटो घन छायो ।
घन गरजत विरहनकुँ री तरजित, मोर भिंगोर मचायो ।
सखी मोरी भोरी भाद्रव० ।२।
पिउ पिउ करत पुकार पपियडो, मैं जाण्यौ पिउ आयो ।
चमकि उठीनें चिहुं दिस निरखत, पिउ को दर्स न पायो ।
सखी मोरी भोरी भाद्रव० ।३।
गयो गिरनारी भोग विडारी, मैरै वस मैं नायो ।
जाय सखी समझाय सयांनी, गढ गिरनारै छायो ।
सखी मोरी भोरी भाद्रव० ।४।
सहिसा वन जाय संयम लीनो, सुगति महल सुख पायो ।
अवचल प्रीत वधी अलवेसर, गुण अमरेसर गायो ।
सखी मोरी भोरी भाद्रव० ।५।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-स्तवन-वर्षा

राग—चलित मल्हार

बरसण लागी काली बदरीया,
झिरमिर झिरमिर लागी झरईया। वर० ।१।
घोर घटा कर घन गरजत है,
चिहुं दिसि दांमनि चपल चरईया। वर० ।२।
मोर झिंगोर करत गिर शिखरन,
पर नाली बहु नीर परईया। वर० ।३।
सूती सुन्दर सेज इकेली,
काम संतावत ताप करईया। वर० ।४।
विरहानल पिउ आय बुझावत,
भामणतो आणंद भरईया। वर० ।५।
जाय सखी समझाय सयांनी,
भोग तजी किम जोग धरईया। वर० ।६।
सहसा वन जाय संयम लीनों,
'अमर' प्रीति आणंद वरइया। वर० ।७।

नेमि-राजुल-स्तवन-वर्षा

राग—अहाणो मल्हार

हां हो लाल परनाली सें परै नीर नीर। हां हो.।
वरषा बुंदन सैं वाई सक भीजत है चीर चीर। हां हो.।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीखी लागत है या तन पर, जांणि बूही तीर तीर। हां हो.।२।
वैरण रैण बीजरियां चमकत, घन गरजत धीर धीर। हां हो.।३।
बालम विन कहो कोन बुझावत, विरहानल पीर पीर। हां हो.।४।
सुसनेही सहसा वन छाए, तासै मेरो सोर सीर। हां हो.।५।
तरणी अणपरणी तज चाल्यो, बाई नणंद वीर वीर। हां हो.।६।
नेम नाह को संग राजुलकुं, जाण मीठो खीर खीर। हां हो.।७।

—००००—

नेमि-राजुल-स्तवन-श्रावण वर्षा

राग--अडाणो मल्हार

श्रावण बुँद सुहाई, संयोगणि. श्रावण० ।
प्रिउ की महिर सुपवन सुहावत,
लहिर बादरिया लाई। संयोगणि श्रा०।१।
वचन सुधारस सोई घन बरसत,
दृग दांमनीय चलाई। संयोगणि श्रा०।
हास विलास सों घन गरजत है,
प्रेम सुनीर चढाई। संयोगणि श्रा०।२।
मेरो पिउ मो छांड चल्यो है,
छयल रहै वन छाई। संयोगणि श्रा०।
राजिंद जो रंग सेज पधारत,
वरतै रंग बधाई। संयोगणि श्रा०।३।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बालम सै तब प्रीत वधावण,
संयम लै सुखदाई। संयोगणि आ०।
'अमर' प्रीत बाधी अलवेसर,
ऐसी भरीयां लाई। संयोगणि आ०।४।

—×+×—

नेमि-राजुल-स्तवन-भाद्वा

राग—मल्हार

भाद्रव इम मन भावै, सखी मेरी भाद्रव० ।
इन्द्र आए हैं कर असवारी, बादल तंबू बनावै। सखी. भा. १।
बदरी स्यांम सोगज संचारत, लस सो तेजी लावै। सखी. भा.
बाय सु बाय सुतोप बनी है, मधुर मधुर गरजावै। सखी. भा. २।
प्रथवी नार मिलै ब सुरपति, नेह सुजल बरसावै। सखी. भा. ३।
काल चाल भाजेवा कारण, दांमनीया दरसावै। सखी. भा.
नेह निजर निरखी निज पतकी, एम दरस दिखलावै। सखी. भा. ४।
रंग सुरंग सुदोब बनी है, सोवर वेस बनावै। सखी. भा.
ताकी खूबी देख त्रिया सब, सोल शृङ्गार सभावै। सखी. भा. ५।
गीत गावत है सब मिल गौरी, राजुल मन नही भावै। सखी. भा.
जादव जो अपने घर आवै, 'अमर' आनंद वधावै। सखी. भा. ६।

—०००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-राजिमती-स्तवन-भाद्रव

राग—मल्हार

भाद्रवडो मन भावै, सखी मेरी भाद्रव० ।
प्रथवी नार हरित तन खूवां, वस्त्र सुवेस बनावै । स. भा. १।
सोल शृङ्गार सभै सब वनिता, रंग सुरंग सुहावै ।
गीत गावत है सब मिल गौरी, भोरी रंग वधावै । स. भा. २।
राजुल ने चित कांइ न राचै, विरह बहुलता जावै ।
नेम नाह जो नयण निहालै, 'अमर' आणंद वधावै। स. भा. ३।

—००००—

नेमि-राजिमती-स्तवन-भाद्रव

राग—मल्हार

भाद्रवडौ मन भावै, सखी मेरी भाद्रव० ।
नेम नाह जो अब घर आवै, हीयडै हुंस वधावै । स. भा. १।
सोल शृङ्गार सजी सखीयन मिल, गीत मल्हार गवावै ।
काजल तिलक तंबोल सुहावै, विरहानलकुं बुझावै । स. भा. २।
राजिंद विण किम रात रहीजे, सेजडली संतावै ।
काम अरि मो केडै लागो, निस सम नींद न आवै । स. भा. ३।
जाय सखी समझाय सनेहो, इहां अलवेलो आवै ।
'अमर' प्रीत वाधै अति अनुपम, दिन २ चढते दावै । स. भा. ४।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमि-स्तवन-होरी

राग—धंगलौ

[या बृजराज कुं लाज नहीं मोकुं गारी देत लाख सामें, ऐरी सखी ऐरी गारी० या बृज०। सब सखियन प्रिया संग खेलै, मैं भूमती मेरे मन में, ऐरी २ मैं भू० या बृजराज० मोकुं०, ए चाल मैं वसन्त]

मेरो पिया मेरे संग नहीं,
मैं तो कैसे खेलुँ होरी मैं एरी एरी सखि।
कै० मेरो० मैं तो०।

गोपियन संग गोवरधन खेलत,
मैं भूरत गोखन में एरी सखि मैं०।१। मे०।
अलवेसर मोकूँ छांड चल्यो है,
सगुणा सहसावन में एरी एरी स०।२। मे०।
दिल दरियाव विरह जल उलटे,
नीर झरत आंखन में एरी एरी नी०।३। मे०।
भाद्रव की सी झरी री लगी है,
बुँद परत छिनछिन में एरी एरी बुं०।४। मे०।
शिव गणिका याके कान लगी है,
भरमायो तिण भरमें एरी एरी भ०।५। मे०।
खून बिना चित खार धरी नें,
घर तज भज गए वन में एरी घ०।६। मे०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पिउ की कुटिलता आज पिछानी,
यह विभचारी जन में एरी य० ।७। मे० ।
दीख लेइ केवल पद पायो,
जाय बसे शिवघर में एरी जा० ।८। मे० ।
नेमीसर निज नेह निबाह्यो,
'अमर' प्रीत शिवपुर में एरी अ० ।९। मे० ।

—·|·—

नेमि-राजिमती-होरी

राग—वसन्त

कहो री सखि कैसे खेलै होरी,
मेरो तो नाह गयौ घर छोरी ।१। क० ।
विन अवगुण मोहि विरह जगायौ,
नेह की दोरी ए ततखिण तोरी ।२। क० ।
शिव रामा उनकुँ भरमायौ,
चित मेरो तिण लीधो चोरी ।३। क० ।
सहसावन जाय संयम लीनौ,
नेमजी नाह भये ध्रम धोरी ।४। क० !
सेंहथ से जाय संयम ल्युंगी,
काम क्रोध मद मोह कुँ मोरी ।५। क० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सौकड़ली हम संग रमेंगे,
गुणवंती वा भी है गोरी।६। क०।
नेम राजुल मिल मुगत सिधाए,
'अमर' रमे हैं सिवसुख होरी।७। क०।

—०÷०—

नेमिनाथ होरी

राग—फाग

सहसावन सरस मची होरी। सहसावन०
समुद्र विजै सुत जग स लहीजै,
नेम नगीनो धरम धोरी। सहसा०।१।
दसे दसार खडे आय दह दिस,
राम किसन बंधव जोरी। सहसा०।२।
कुंवर कोडि मिल मिल कै संगी,
आवत है टोरी टोरी। सहसा०।३।
शशि वदनी मृग नयणी सुन्दर,
हस आवै रमवा होरी। सहसा०।४।
छयल छबीली है अलवेली,
गोपी सोल सहस गोरी। सहसा०।५।
वसंत वेष सब खूब वण्यो है,
रंग सुरंगी है चौरी। सहसा०।६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेम पिचरका नीर सुधारैं,
वाहत है तक तकि गोरी। सहसा०।७।
लाल गुलाल मुट्ठी भर डारत,
अबीर उडावत भर झोरी। सहसा०।८।
चंग बजावत गारी गावत,
हस हस बोलत है होरी। सहसा०।९।
बाल गोपाल सबे मिल खेलत,
नवली नेह लगी दोरी। सहसा०।१०।
जोरैं व्याह मनायो जदुपति,
'अमर' दंपत अवचल जोरी। सहसा०।११।

—००००—

नेमि-राजिमती-होरी

हसि हसि खेलूँ होरी री, सखि हसि हसि खेलूँ होरी।
प्राणनाथ जो गेह पधारैं,
जुगत बनैं तो जोरी री। सखि हसि०।१।
जदुपत ने जायकै समझावौ,
घर आवो हठ छोरी री। सखि हसि०।२।
विन अवगुण क्युं विरह सतावै,
गुणवंती तज गोरी री। सखि हसि०।३।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भोगी भमर भामण कुं भजणां,
नेह न तोरो दोरी री। सखि हसि०।४।
पशुअ पूकार सुणि प्राणेसर,
मोसैं चितरो लीधो चोरी री। सखि हसि०।५।
गिरवर तजीयै घरकुं भजियै,
अरज सुणी जै गोरी री। सखि हसि०।६।
गिरवाइ गुणवंत धरावो,
'अमर' करो ए जोरी री। सखि हसि०।७।

—०:❀:०—

नेमि-राजिमती-होरी

[होरी खेलूँ गी संग लीयां सजनां, संग लीयां सजनां वालम लीयां अपनां. होरी खेलूँ। आओ मेरे बंभना, बैठो मेरे अंगना, थाल भर मोतियां को चुङ्गी मैं दखणां, होरी खेलूँ गी०। ए चाल में वसन्त छै]

होरी खेलुंगी संग मिल्यां सजना,
संग मिल्यां सजना वालम मिल्या अपना। हो.।
आवो मेरे सजना, घर नाहिं तजना,
भोरी से राग भली पर भजनां। हो.।१।
चित हित धरणां, विलंब न करणा,
पशुअ पुकारन क्या चित धरणा। हो.।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भामण वरणां, जोग न धरणा,
जोवन वय सखि सफला करणां । हो. ।३।
जोग कुं तजणा, भोग कुं भजणा,
नीत रीत भल चित हित धरणा । हो. ।४।
नेह जो करणा तो प्रीत न तजणा,
ए उत्तम कुल की है आचरणा । हो. ।५।
वयातीत संयम त्रिय वरणा,
पीछे भव सायर कुं तरणां । हो. ।६।
राजुल नेम वियोग है हरणां,
'अमर' प्रीत भई शिव सुख वरणां । हो. ।७।

—:o:—

गौडी-पार्श्वनाथ-होरी

राग—फाग

गवड़ी प्रभु जिनवर गुण गावो । गौड़ी० ।
अंगी चंगी पहुप बनावो, टोडर कंठ बले ठावौ । गौ. ।१।
मणि माणिक मोतीयड़े वधावो, तन मन इक ताने लावो । गौ. ।२।
क्रोध मान दोय ताल बजावो, सुमता केसर छिड़कावो । गौ. ।३।
ज्ञान गुलाल अबीर उडावो, सुच संतोष भल जल ल्यावो । गौ. ।४।
दरस सरस करकै सुख पावो, ल्यो नर भवनो इम लाहो । गौ. ।५।
'अमरसिंधुर' भवि मिल गुण गावो, परम संपदा जिम पावो । गौ. ६।

——

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवनानि

बम्बई-चिन्तामणि-प्रासाद-स्तवन

(देशी—मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ के—एहनी)

सुखदायक हो चिंतामणि साम कि, "मुंबईपुर" मन रंग नमो।
दरसण करहो लहो नयणानंद कि, दुख दोहग दूरे गमो।
पावडिया हो तिहा 'सात' प्रसिद्ध कि, देवल चढतां दीपतां।
दोय पासै हो प्रतिहार प्रधान कि, जुगतै अरि गण जीपतां। सु.१।
"उपासरै" हो अति सोभउदार कि "खरतरगछ" चढती कला।
सदगुरु जी हो "श्रीकुशलसुरिंद" कि, पूजीजै पगला भला।
पटधारी हो प्रणमी गुण पायक, लायक गुरुगुण दीपतां।
भविबोध कहो सौधिक जांण कि, पंचेन्द्रिय विषय जीपतां। सु.२।
दिस दोए हो पावडीय प्रधांन कि, सुन्दर अति सोहामणी।
चढि चौपैं हो लहो परमानंद कि, देवल छवि सोहांवणी।
जच राजा हो चिन्तामणि जांणिक, चित नी चिंता ते हरै।
गुणवंतो हो गोरल वडवीर कि, भोग सुजस लखमी भरै। सु.३।
मन गमतो हो भमतीय भमंतक, मंदिर शिखर सोहांवणो।
धजदंडै हो सोहै श्रीकारक, कलश कंचन रलियामणो।
बिहुं पासै हो अति उन्नति जांणिक, भ्रमशाला दोपै भली।
भ्रम कारण हो करवानें काजक, देख्यां पूरै मन रली। सु.४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

"मूलनायक" हो राजै महाराजकि, श्री "चिंतामणि" सुखकरू।
उपगारी हो त्रिभुवन आधारकि, दरसण दुख दोहग हरू।
तेवीसम हो जगतारक जाणकि, दोहग दुरति निकंदणो।
पुन्ययोगे हो लायक सुविलासक, दरसण लहय राजिंदनो। सु.५।

सुविवेकै हो मिलि चौविह संघकि, विनय सहित वंदन करै।
पूजा विध हो ग्रह समय उदारकि, करतां पुण्य दसा भरै।
पदमावति हो पूरै मन आसकि, "स्याम भैरव" सुप्रसन्न सदा।
आराध्यां हो आवै अधिक आनंदकि, प्रघल दीयै सुख संपदा। सु.६।

चढि चौमुख हो "चंद्रप्रभु" चंगकि, "अजित-सुमति-संभव" सही।
भल दरसण हो करतां भलभावकि, जात्रा पुन्य पांमै सही।
"कोठारी" हो कुल मंडण जाणकि, "अमरचंद" चढती कला।
भाई भलहो "वृधीचंद" सुजाणकि, "हीराचंद" सुत तसु भला। सु.७।

देवल भल हो दीपायो जेणकि, देव भुवन सम दीपतो।
अति ऊँचो हो सोहै श्रीकारक, मोह मिथ्यामत जीपतो।
भल लीधो हो लखमीनों लाहकि, पुन्य भंडार भरावीयो।
धमधोरी हो गावै गुणवंतकि, जग जस पडह वजावीयो। सु. ८।

गछ "खरतर" हो गणधर गुणवंतकि, "हरषसूरीसर" हित धरू।
आणाधर हो वाचक पद धारक, 'अमरसिंधुर' महिमा वरू।
ए उद्यम हो करतां मन रंगकि, वच्छर "आठ" बोलावीया।
प्रतिष्ठा हो कीधी सुप्रधानकि, गुणीयण मिल गुण गावीया। सु.९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए मिंदर हो रहो अचल आणंदकि, थिर जिम सुर गिर सासता।
चिंतामणि हो पूजे ज्यों जामकि, अधिक वधे ज्यों आसता।
सुप्रसन मन हो सेवो प्रभु पायक, त्यां सुप्रसन्न जदा तदा।
हुवो या घरहो सुख संपत धामक, वधज्यो मंगल मालिका। सु.१०।

—:०:—

चिन्तामणि-प्रासाद-निर्माण-स्तवन

राग—फाग

निरुपम मिंदर भल निपजायो। निरुपम०।
दंड कलश वर धजा विराजै,
सिंघ सकल कै मन भायो।१। निरुपम०।
जिहां "चिंतामणि" जिनवर राजै,
दरस सरस कर सुखपायो।२। निरुपम०।
तीन लोक तारक भय वारक,
धणी एक चित में ध्यायो।३। निरुपम०।
नायक लायक है वर दायक,
फणिपति लंछण कहिवायो।४। निरुपम०।
"कोठारी" कुल मंडण कहियै,
"अमरचंद" धम बुध लायो।५। निरुपम०।
लखमी लाह लियो भल लायक,
सुजस सहु जन मिल गायो।६। निरुपम०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

"हीराचंद" हीयै बहू धरकै,
देवल भल ए दीपायो ।७। निरुपम०।
सुख संपत नित वधो सवाई,
'अमर' आनंद मन उपजायो ।८। निरुपम०।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

(पुनः तेहिज चाल वसन्त)

मुख पेखी महाराज कौ रे,
मैं वारी जाऊँ वार हजार सहीयां । मुख० । १ ।
सोना रूपा ना फूलड़े रे,
मोतीयन थाल विशाल सहीयां । मुख० । २ ।
वधाऊँ मैं विनय सुं रे,
मन धर हरख विशाल सहीयां । मुख० । ३ ।
नयणे निछरावल करुँ रे,
घोल करुं घन रंग सहीयां । मुख० । ४ ।
भामणा ल्युँ भल भाव सुं रे,
नमन करुँ धर नेह सहीयां । मुख० । ५ ।
चैत्यवंदन कर चौप सुं रे,
मो मन भक्ति अछेह सहीयां । मुख० । ६ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

"सूरत" थी भल साहिबा हो,
"मुंबई" बिंदर महाज सहीयां । मुख० । ७ ।
आया इहां आणंद सुँ रे,
सहुना सीधा काज सहीयां । मुख० । ८ ।
महिर लहिर लटकै करी रे,
लीला लहिर रसाल सहीयां । मुख० । ९ ।
'अमर' आणंद वधावणा रे,
घर घर मंगल माल सहीयां । मुख० । १० ।

—०×०—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

सकल सिंघ सुखदाई, सदाई वाजत रंग बधाई ।
"सूरत" सै प्रभु सुनिजर धरकै,
"मम्बई" प्रगट पुन्याई । सदाई० सकल० । १ ।
श्री "चिन्तामणि" पास पधारे,
घर घर रंग बधाई । सदाई० सकल० । २ ।
आराधिक नी आशा पूरै,
ए प्रभु नी अधिकाई । सदाई० सकल० । ३ ।
माहाराज मिंदर मझ बैठे,
भवि मिल पूज रचाई । सदाई० सकल० । ४ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भावन भावो जिन गुण गावो,
संपद सनमुख आई। सदाई० सकल० ।५।
महानंद दायिक महाराजा,
'अमर' सेवो सुखदाई। सदाई० सकल० ।६।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—गरबो

आज सु दीह सुहायो, सिंध सकल केरै मन भायो।
"मंबुई" विंदर मैरे रंगै, पधराव्या प्रभु चित हित चंगै। आ.।१।
तेवीसम जग त्राता, जस जाको त्रिभुवन जन गाता। आ.।२।
जनम धरयो जिण कासी, अविकारी अविचल अविनासी। आ.।३।
सुंदर सूरत रे सोहै, मुखडानै मटकै मन मोहै। आ.।४।
धवल कमल दल काया, प्रभु चिंतामणि पुन्यै आया। आ.।५।
हस्त वदन हित धारी वारी, जाउँ वार हजारी। आ.।६।
भल भल गुण मणि भरियो, सुमता रसनौ जांणै दरीयो। आ.।७।
आनंद घन उपगारी, सहिजानंद सुगुण चित धारी। आ.।८।
केवल लील विलासी, अनुभव रसनां जे अभ्यासी। आ.।९।
मूलातम मन रंगै, धरता साहिब अति उछरंगै। आ.।१०।
साचो साहिबजी हियो पायो, 'अमरसिंधुर' चरणौ चित लायो।११।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—मधुर वसन्त

मेरे चिंतामणिजी के चरणकमल युग, नमतां नवनिध पावै।
नमतां नवनिध पावै,
चरणयुग नमतां नवनिध पावै। श्री चिंता०।
अष्ट सिद्धि अणचिंती आवै,
लीला लाछ सुहावै। श्री चिंता०।१।
सोम निजर सहुनैं संपेखै,
महिरवांन सम भावै। श्री चिंता०।
सरस सरस दौलत दरसावै तो,
पातिक दूर पुलावै। श्री चिंता०।२।
सुख सागर नागर नित बाधै,
आरत निकट न आवै। श्री चिंता०।
अतिसयवंत महंत है साहिब,
लायक विरुद लहावै। श्री चिंता०।३।
जग नायक जयवंत जगतपति,
सिंघ सकल मन भावै। श्री चिंता०।
"मसुईपुर" वसीयो प्रभु मेरो,
'अमर' आणंद बधावै। श्री चिंता०।४।

—०७—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—परभाती

जय चिंतामणि जगपति, कीरति छती रे।
त्रिभुवन में सिरताज, प्रहसम प्रणमीयै रे।१।

तेवीसम जिन जग तिलो,
महिमा निलो रे, दीनानाथ दयाल। प्रह० ।२।

सोम निजर सहु पर करै,
आरती हरै रे, करुणावंत कृपाल। प्रह० ।३।

पूजंता पातिक पुलै,
वंछित मिलै रे, पतित जनां प्रतिपाल। प्रह० ।४।

जग बंधव जग तारणो,
दुख वारणो रे, सहजानंद सरूप। प्रह० ।५।

"मुंबई" बिंदर मै मुदा,
सोभै सदा रे, महिरवान महाराज। प्रह० ।६।

भव भव सेवा दीजीयै,
जस लीजियै रे, 'अमर' लहै आनंद। प्रह० ।७।

—:x:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—फाग

चिंतामणि सुप्रसन आज भयो, चिंतामणि० ।

अपणौ जांणी चित हित आंणी,
दयावंत भल दरस दीयो । चिंता० ।१।

भविजन तारे विघन निवारे,
लायक बहु विध सुजस लीयो । चिंता० ।२।

कासीपुर वाको जनम कल्याणक,
साहिब शिवपुर को वासी । चिंता० ।३।

निराकार निकलंकित साहिब,
करम अरी जिण दूर कीयो । चिंता० ।४।

ठवणा जिण "ममुईपुर" ठवीयो,
देखत ही दुख दूर गयो । चिंता० ।५।

भविजन मिलकै पूज रचत है,
सफलो जिन अवतार कीयो । चिंता० ।६।

दरस सरस देखत दिल हुलसै,
"अमरसिंधुर" आणंद भयो । चिंता० ।७।

——x०x——

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—मल्हार

मलो देव मन भायो चिंतामणि, घणीय चिंतामणि ध्यायो ।
चिंतामणि चित ध्यायो, मेरै मन चिंतामणि चित ध्यायो ।
सुंदर सूरत मूरत निरखत, परमानंद मै पायो । मेरै. चिंता.।१।
घणीय आंण सिर ऊपर धरतां, दोहग दूर गमायो ।
सुंदर पारस दरस परस तैं, लोह कुं कनक करायो । मेरै. चिंता.।२।
ऐ साहिब है अलवेसर, पूरव पुन्यै पायो ।
उपसम रस अनुभव अभ्यासी, परम कृपाल कहायो । मे. चि.।३।
काम क्रोध जाकै निकट न आयो, मोह मिथ्यात हटायो ।
परहर पाप अढारह थानक, दरस केवल दीपायो । मेरै. चिंता.।४।
कासी अविनासी शिववासी, ठवण जिणां ठहरायो ।
"मंबुई" बिंदर मै मन रंगै, देवल (सरस) दीपायो । मेरै. चिंता.।५।
तूं जग तारक भव भय वारक, सेवक सरणै आयो ।
महिर करो साहिब तुम मेरा, 'अमर' दे सुक्ख सवायो। मेरै. चिं.६।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—केदारो

अधिक आणंद लह्यौ, आज मैं,
सुणि प्यारे जिनजी, अधिक आणंद लह्यौ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री "चिंतामणि" सुखकर साहिब,
अचल रहै शिवराज मैं । सुणि०।
"मंबुई" बिंदर ठवणा मूरत,
दरस ताको लह्यो आज मैं । सुणि०।१।
सुगुण साहिब को संग गहंता,
कोडि सुधारै काज मैं । सुणि०।२।
भव जल निध भय दूर भग्यो है,
जांणौ बैठे जंगी जिहाज मैं । सुणि०।३।
पूरव पुन्य उदै मैं पायो,
महिर वान महाराज मैं । सुणि०।४।
दास खास भव भव हुँ तेरो,
राज गरीब निवाज मैं । सुणि०।५।
दरस सरस ए अविचल दौलत,
'अमर' कहै लही आज मैं । सुणि०।६।

चिन्तामणिपार्श्व-स्तवन

(पुनः चाल पूरवली वसन्त)

तुं तो चिन्तामणि चित धर रे,
हुँ तो कहुँ रे (२) सुगुरु ने सीख दई। तुँ तो.।
प्रभुजी को समरण है सुखदाई,
अहि निशि यह ऊचर रे (२) हुँ तो। तुँ तो.।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाप संताप निवारक तारक,
ता तै तुं समरण कर रे (२) हुँ तो. । तुं तो. ।२।
तरण तारण त्रिभुवन पति साहिब,
भव जल नी ए तर रे (२) हुँ तो. । तुं तो. ।३।
परम दयाल कृपाल कहीजै,
एतो संत सुधारस घर रे (२) हुँ तो. । तुं तो. ।४।
परमानंद परम पद दायक,
लायक नायक वर रे (२) हुँ तो. । तुँ तो. ।५।
सुन्दर सूरत मूरत सोहै,
एतो "मंबुई" बिंदर पुर वर रे (२) हुँ तो. । तुँ तो. ।६।
सकल सिंघ कुं वंछित दायक,
सुख संपत घर घर रे (२) हुँ तो. । तुं तो. ।७।
"अमर" समर चिंतामणि चित धर,
पुण्य भंडार कुं भर रे (२) हुँ तो. । तुं तो. ।८।

—:०:—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

(पुनः तेहिज चाल में वसन्त)

दरसण देखी सांम नो रे, अधिक लह्यो आणंद सहियां। द.।
श्री चिंतामणि भेटतां रे, दूर गया दुख दंद सहियां। द.।१।
फलिया मनोरथ मन तणा रे, अधिक लह्यो आणंद सहियां। द.।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मेरो सुकयथ साहिबो रे, निरख्यां नयणाणंद सहियां। द.।३।
चिंतामणि मुझ चित वसै रे, जेम चकोरा चंद सहियां। द.।४।
दास खास जाणी करी रे, विबुध दिये सुख वृन्द सहियां। द.।५।
सुनिजर जोवौ साहिबा रे, जगनायक जिणचंद सहियां। द.।६।
महिर लहिर लटकै करी रे, 'अमर' लहै आणंद सहियां। द.।७।

—०००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—अलहीयो वेलावल

मैं चरणन को चेरो, प्रभु तेरो।

चरण कमल को चेरो, प्रभु तेरो चरण०।
चोगत चौरासी मैं भटकत, फिरयो अनंतो फेरो। प्रभु०।१।
इग वि ति चौरिंदी चौवट मैं, घन करमै मो घेरयो।
दुरगत केरे बहु दुख देखे, पूरव संचित प्रेरयो। प्रभु०।२।
मैं हुँ पतित अनाथ प्रभूजी, तारक विरुद है तेरो।
"चिंतामणि" हिव चित हित धरीयो, चरण शरण ग्रह्यो तेरो।३।
समरथ साहिब शिव सुख दीजै, क्या कहीयै अधिकेरो।
'अमरसिंधुर' नी आशा पूरो, दास खास हुँ तेरो। प्रभु०।४।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

(पुनः वसन्त पूर्वली चाल)

या जिनराज सो देव नहीं,
तूं तो चिन्तामणि धर चित में । एरी सखि.।

पर उपगारी जग परमेसर,
वसीए मोख नगर में । ए. या. व. ।१।

जग में देव बहुत फिर जोए,
घेर जोयो तन घर में । ए. या. घे. ।२।

सकलंकित सुर सेव करत ही,
भूलत है क्युं भर में । ए. या. भू. ।३।

दीन दयाल जगतपति जिनवर,
तारत है भव जर में । ए. या. ता. ।४।

साचै मन से सेव करत नित,
सुख संपत ता घर में । ए. या. सु. ।५।

"अमर" आणंद लहै निस वासर,
प्रभु जी की महिर लहर में । ए. या. प्र. ।६।

—०×०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-अंगी-वर्णन-स्तवन

राग—जंगलौ

अंगीया सुरंगीया सोहै, मेर मन मांनी सही रै। अंगी०।
अंगी चंगी अति भली, देख्यां दिल हुलसंत।
हीयडौ विकसै पुहप ज्युं, दोहग दह दिस जंत। अं०। १।
जरकस को जामौ वन्यौ, कंठी कसवादार।
आगल बंधी अजब गत, छवि अति कंत उदार। अं०। २।
कोरदार है केवड़ा, मोपै कहे न जाय।
घुंडी कर की सुघरता, दीठां आवै दाय। अं०। ३।
ग्रह बंधी भल गात है, विच बुँटी नवरंग।
चाल चलत है चुंपकी, सोभा वणी सुचंग। अं०। ४।
कोर कनारी फाबती, सोभै भली संजाफ।
महाराज की अंगीया, ऐसी है असराफ। अं०। ५।
मणि जडिया सोभै मुकट, कांनै कुन्डल सार।
बाजु बंधनै बहु रखा, हीयडै नव सर हार। अं०। ६।
फूल बाग विच फबत है, राजत है महाराज।
भामंडल आभा भली, तीन छत्र सिरताज। अं०। ७।
बींझै चामर दोय दिस, देवल देव बिमांन।
वाजित्रे वाजै विवध पर, गुणी करत है गान। अं०। ८।
नरनारी वन्दन करै, भाव भलै ससनूर।
मन मयूर नाटक करत, दुःख दोहग जाय दूर। अं०। ९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अंगी देख अनूपता, सहु को करै सराह ।
धन "चिंतामणि" जग धणी, वाह प्रभू तुँ वाह । अं० ।१०।
पूरव पुन्यै मैं लह्यौ, साचो समरथ सांम ।
भवजन वंदौ भांवसुं, 'अमर' आसा विसराम । अं० ।११।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—वसन्त अडाणौ

धणिय एक चिन्तामणि ध्यावो,
भर भर मोतियन थाल वधावो ।
पय प्रणमी नै पूजा कीजै,
गुण याकै मधुरे सुर गावो । ध० ।१। भ० ।
जुगत भगत भल जाप जपीजै,
तो दुरगति दुख कुंकबहु न पावो । ध० ।२। भ० ।
दीन दयाल कृपाल कहीजै,
प्रीतम इण सम अवर न पावो । ध० ।३। भ० ।
छति अधिकी ओपम प्रभु छाजै,
जात्री जन मिल मिल के आवो । ध० ।४। भ० ।
सुजस त्रंबाल जगत में गाजै,
'अमर' संपद सुख वेग वधावो । ध० ।५। भ० ।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—वसन्त

मेरे मन मिंदरियै प्रभुजी पधारे, तो आज भयौ आनंद । मेरे०।
मिथ्या ताप गयौ अब मेरो, समकत उदय अमंद । मेरे०।१।
सम्यक ज्ञान चरण दरसणतो, दीपत जाण जिणंद ।
अब अनुभवता उदयो मेरे, फट गये भ्रम के फंद । मेरे०।२।
तीन तत्त्व की सरधा पाई, उल्हस्यौ मन मकरंद ।
करण अपूरवता गुण प्रगट्यौ, पाम्यौ परमानंद । मेरे०।३।
चौघन घाती तप घण ताड़े, क्रोधादिक निःकंद ।
राग द्वेष दो दूर विडारे, झीले सुमत समंद । मेरे०।४।
चिन्तामणि सुनिजर सीतलता, ज्ञान सु सुरतरु कंद ।
सो सफलौ फल्यो अम्ह घर आंगण, 'अमर' भयौ आणंद।मे०।५।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—सोरठी (करवो) वसन्त
(पिचकारण रंगवरसै गोकल में पि०, ए चाल)

चिन्तामणि मेरे चित में वसे हैं,
निस वासर नित मन में । एरी सखि निस०।
पलक एक विसरूँ नहिं प्रीतम,
जाप जपत छिन छिन में । एरी० ।१। चि०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेवीसम जिन जग जन तारक,
न रहै भव जल निध में। एरी० न०।२। चि०।
सुमता सागर गुण मणि आगर,
न परे क्रम वागुर में। एरी० न०।३। चि०।
उपशम दरियो ज्ञान सुं भरियो,
भूले नहीं भव भर में। एरी० भू०।४। चि०।
अनुभव अभ्यासी है अनुपम,
वसीए मोख नगर में। एरी० व०।५। चि०।
ए प्रभु ध्यावो नवै निध पावो,
'अमर' सुजस लहौ जग में। एरी० अ०।६। चि०।

—:o:—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

(सखी मेरो अंचरो पकर कै गयो, ऐसो नेह भयो न भयो, मेरो०, ए चाल)

मेरो पास जिणंद जयो,
और न ऐसो देव भयो, मेरो पास०। आंकणी०।
श्री चिन्तामणि जिनवर जपतां,
पातिक गयो री गयो। सखी री पा.। और.।१। मे. पा.।
पूरव पुण्य तणौ सुपसाये,
दरसण लह्यो री लह्यो। सखी री द.। और.।२। मे. पा.।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सकलाई जग साची निरखी,
"मंबुई" ठयो री ठयो। सखी री मं.। और.।३। मे. पा.।
सकल संघ कुं सुख को दायक,
सुप्रसन्न भयो री भयो। सखी री सु.। और.।४। मे. पा.।
जाप जपंता पूज करंतां,
पातिक गयो री गयो। सखी री पा.। और.।५। मे. पा.।
तेवीसम जिन जग जन तारक,
जग त्रय जयो री जयो। सखी री ज.। और.।६। मे. पा.।
"अमरसिंधुर" प्रभु ने सुपसायें,
आणंद लह्यो री लह्यो। सखी री आ.। और.।७। मे. पा.।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—वसन्त धमाल

चरण कमल जिनराज ना हो,
नमतां नव निध होय हो, मेरे ललना न०।
अष्ट करम उपसम थकी हो,
अड सिध नी प्रापत जोय।१।
रंगीली आतम रंग भरी हो।
पूज्यां पुण्य वधै घणौ हो,
प्रणम्यां जायै पाप, मेरे ललना प्रण०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एक मनां आराधतां हो,
दुरगत नां टलय संताप ।२। रंगी० ।
ध्येय सरूपै ध्यावतां हो,
करम नी तूटै कोड़ि हो, मेरे ललना कर० ।
चिंतामणि चित में धरो हो,
मिथ्यातम नांखसे तोड़ ।३। रंगी० ।
एहवो साहिब आपणो हो,
सकल देव सिरताज, हो मेरे ललना स० ।
"अमर" दियै सुख संपदा हो,
महाज गरीब निवाज ।४। रंगी० ।

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—वसन्त

[ऐसे कन्हईए लाल गोपिन में डारे गुलाल मुठी भरके, ए चाल]

बाबो चिन्तामणि पास विराजै,
महिर निजर सब पर निरखै ।
मन हरखै चित हरखै, बाबो चि०,
सुनिजर महिर से सब निरखै ।बा०। आं० ।
सकल संघ कुँ सुख को दायक,
नेह निजर सै सब परखै ।बा०।१। म०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रिभुवन साहिब तखत विराजे,
अभवी जन हियरा धरकै। बा०।२। म०।
विबुध नयन की बुंद झरत है,
वाणि सुधारस घन वरसै। बा०।३। म०।
पाप ताप सब दूर विडारे,
हित धर के दिल में हरखै। बा०।४। म०।
सुमता सागर गुण के आगर,
अनुभव रस गुण आकरषै। बा०।५। म०।
दीन दयाल सुधम धन दाता,
दुरित दोष कुं ए घरषै। बा०।६। म०।
'अमर' मुगट मणि सब ए राजै,
सुर बीजे नहि या लिखवै। बा०।७। म०।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग---सोरठी वसन्त

श्री चिन्तामणि पास की मै पूज रचाउँ री।
अरी अरी मै पूज रचाउँ री,
भलां भलां पूज रचाउँ री। श्री चि.।
तन मन वचन करी इक तानें,
गुण मणि गाउँ री। अरी २ गुण.। श्री चि.।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऐसो सांम जगत में जोता,
अवर न पाउँ री। अरी २ अव.। श्री चि.।२।
रात दिवस इक रंगै रातो,
ध्यान सु ध्याउँ री। अरी २ ध्या.। श्री चि.।३।
सुन्दर सूरत मूरत निरखी,
हरष भराउँ री। अरी २ हर.। श्री चि.।४।
महिर लहिर नो लटको लहिनें,
आनंद भराउँ री। अरी २ आ.। श्री चि.।५।
मोह निद्रा गई मुद्रा निरखत,
भव्य कहाउँ री। अरी २ भ.। श्री चि.।६।
दास खास हुं "अमर" तुहारो,
विरुद धराउँ री। अरी २ वि.। श्री चि.।७।

—००:०—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—फाग

चिन्तामणि दरसण भल पायो, चिन्तामणि०।
दुख दोहग सब दूर गये हैं, सोहग सुख संपत पायो। चिं.१।
प्रभुनी महिर लहिर नें लटकै, हरष हीयै बहु हुलसायो। चिं.२।
तेवीसम जिन जग जन तारक, लायक विरुद मै ललचायो। चिं.३।
सुंदर सूरत मूरत निरखी, देव अवर नहीं दिल भायो। चि.४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रात दिवस इक रंगै रातौ, चरण कमल मै चित लायो। चिं.५।
सफल भयो मांनव भव मेरो, गुण मणि बहु विध मै गायो। चिं.६।
श्री चिंतामणि दरस परसतैं, 'अमर' आतम गुण दरसायो। चिं.७।

—०÷०—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—सोरठ मल्हार

होजी चिंतामणि लागै प्यारो प्यारो रे,
वामादेवी नो नंदन प्यारो। होजी चि०। आं०
धवल कमल दल घन ए मूरत,
सूरत ए सुख सारो रे। होजी चिं०।१।
हस्त वदन निरखंता हित घर,
म्हांनुं लागै अति घणुं प्यारो रे। होजी चिं०।२।
सुनिजर जलधर घन प्रभु वरषित,
गयो जो मिथ्या तप म्हारो। होजी चिं०।३।
दोष अढार दुकाल गमांए,
समकित अन भयो सारो रे। होजी चिं०।४।
"अमरसिंधुर" सुख संपत बाधी,
अपनो काज सुधारो रे। होजी चिं०।५।
प्यारो रे वामा०॥

—०००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—चलित मधुर वसन्त

चिन्तामणि मुझ चित वसै, मन रंगै वाधै उछरंग ।
रात दिवस लीणौ रहै, पोयण सै जिम रातौ भृंग । चिं.।१।
देव न दूजौ दिल धरूँ, प्रभुजी से बांध्यौ बहु प्रेम ।
इक तारी मुझ ए सही, देव दूजौ नमिवा नौ नेम । चिं.।२।
सुरतरु तजि नै साहिबा, बांवल नै कुण घालै बाथ ।
रतन तजी मन रंग सुं, पाहण नै किम लीजै हाथ । चिं.।३।
पूरब पुण्य संयोग सुं, साहिब नी पामी चरण नी सेव ।
तरण तारण त्रिभुवन जयो, दुनिया में तूँ साचौ देव । चिं.।४।
चरण शरण भव भय हरू, सुखदाई मुझ साचौ सांम ।
'अमरसिंधुर' नै भव भवै, आंणंदी थे आतमराम । चिं.।५।

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—वसन्तेपि पूरबी

जय जय चिन्तामणि जगदीसर,
त्रिभुवन तेज सवायो, वारी त्रि० ।
दरस सरस लहि देव तुहारो,
परमानंद सुख पायो, वारी पर० ।१। जै० ।
मूलातम गुण कुं उलसायो,
अध्यातम उलसायो वारी अ० ।
संत सनेही साजन मिलतां,
हिव हुओ हरख सवायौ वारी हि० ।२। जै० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लघु संसार तणौ गुण लायौ,
सो मेरे मन भायो वारी सो० ।
अनुपम अनुभव अमृत पानें,
मिथ्या विष मिटायौ वारी मि० ।३। जै० ।
रोचक समकित गुण रो चायौ,
देव निरंजन ध्यायो वारी देव० ।
अब तो महिर लहिर नौ लटकौ,
करतां सुजस सवायो वारी कर० ।४। जै० ।
अपणौ जाणी नै अलवेसर,
देव रूप दरसायो वारी देव० ।
'अमरसिंधुर' आतम गुण लायो,
चरण सेव चित धायो वारी० ।५। जै० ।

—००००—

चिन्तामणि-पार्श्व स्तवन

राग—वसन्त फाग

जै बोलो जै बोलो पास चिंतामणि की, जै बोलो ।
कुमति कुनारी कह्यो री न मांनो,
सुमति सुनार सैं हस बोलो । जै बोलो.।१।
सुमता प्रभुता अतिह सुचंगी,
तास सुभाव अछै भोलो । जै बोलो.।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निज सुभाव रस रंगै रमतां,
राग दोस गंठी खोलो। जै बोलो.।३।
दिल साचै रस रंगै राचौ,
पाप पंक न रहै तोलो। जै बोलो.।४।
महिमा तीन भुवन में मोटी,
सुरगुरु पिण न लहै तोलो। जै बोलो.।५।
सकल देव सिरताज सु सोहै,
दरस सरस लहि गुण बोलो। जै बोलो.।६।
सुद्ध देव की सेव न जांणी,
"अमरसिंधुर" आतम भोलो। जै बोलो.।७।

—०:❀:०—

चिन्तामणि-पार्श्व-वीनती

राग—काफी बसन्त

दरसण द्यो महाराज,
मो पर महिर करीजै। दर०।
दास खास जांणी नै जगगुरु,
सफल करो शुभ काज। दर०। मो पर०।१।
अपणो जांणो चित हित आणो,
लाख बधारो लाज।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पतित उधारो पार उतारो,
राज गरीब निवाज । दर० । मो पर० ।२।
दया करी जैं वंछित दीजै,
तारण तरण जिहाज । दर० । मो पर० ।३।
एसो साहिब अवर न पाउँ,
परतिख शिवपुर पाज ।
अपणायत जांणी अलवेसर,
वगसो चढत दिवाज । दर० । मो पर० ।४।
चिन्ता चूरो परता पूरो,
दूर हरो दुख दाझ ।
'अमरसिंधुर' अपणांयत जाणी,
सुख संपति द्यौ साज । दर० । मो पर० ।५।

—x+x—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—धमाल

जग नायक चिंतामणि जिणंद,
सेवा जसु सारै मिल सुरिंद । जग० ॥१॥
कामित दायक सुरतरु सुकन्द,
नृप आससेन वामाजु कै नंद । जग० ॥२॥
महिमा जस मोटी जिम समंद,
दुरगत दुख मेटै दूर दंद । जग० ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उपकारी जांणी नें अमंद,
फणि मिस सेवा सारै फुणिंद । जग० ॥४॥
सीतल सुखदाई सरद चंद,
वंदै मुनिजन जाकै चरण वृन्द । जग० ॥५॥
फैडीजै साहिब दुरत फंद,
"अमरेस" भणी दीजै आणंद । जग० ॥६॥

—०७००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—सोरठ

वण्यो री म्हांरै या प्रभू सै रंग, वण्यो री० ।
अभिनव नेह लग्यो जिनजी सै,
पलक न छोडुं संग । वण्यो री०॥१॥
प्रीत रीत निरविष बहु बाधी,
जिम पोयण नें भृङ्ग । वण्यो री०॥२॥
"श्री चिंतामणि" दरस परसतै,
भयोरी पातिक को भंग । वण्यो री०॥३॥
सुंदर सूरत मूरत निरखी,
बाधी रंग तरंग । वण्यो री०॥४॥
आलसआंनें सनमुख आई,
जांणै वहिनें गंग । वण्यो री०॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

'अमरसिंधुर' चित हित धर राचौ,
अविचल प्रीत अभंग । वरयो री०॥६॥

—००—

चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—कैरवो

आनंद घन उपगारी निरंतर, आनंद० ।
सहिजानंद सकल को ज्ञायक,
अविनासी अविकारी । निरंतर आनंद०॥१॥
जगदानंदी जग परमेसर,
चिदानंद चित धारी । जिणेसर आ० ॥२॥
ज्ञानानंदी गुणमणि आगर,
लोकोत्तर आचारी । निरंतर आनंद०॥३॥
उपसम भरीयो जांणै दरीयो,
सदानंद सुखकारी । निरंतर आनंद०॥४॥
श्री चिंतामणि नित चित हित धर,
दुरगत दूर विडारी । निरंतर आनंद०॥५॥
ए प्रभु ध्यायो नव निध पावो,
'अमर' संपद अधिकारी । निरंतर आनंद०॥६॥

—०÷०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—जंगलो

घणुं समझायो घर मैं, मेरो मनुआ मांनै नहीं रे। घणुं. मे.।
सकलंकित सुर सेवतां, करता हरै न कर्म।
सविषी विष कुं ना हरै, भूला म पडो भर्म। घणुं. मे.।१।
देव बहुल देखै दुनी, कैतै कहीयै नांम।
ब्रह्मा विसन महेस वर, सरै न त्यां सुं काम। घणुं. मे.।२।
राग द्वेष याकै नहीं, मरम नहीं मन मांहि।
वरजि तजै विषया रसै, त्रिविध सेवीयै तांहि। घणुं. मे.।३।
उपसम रस भरिया अमल, कमल धवल सम काय।
सो "चिन्तामणि" चित धरो, कमणा न रहे काय। घणुं. मे.।४।
तरण तारण त्रिभुवन जयो, तेवीसम जग तात।
"आससेन" कुल अवतरयो, "वामादे" जसु मात। घणुं. मे.।५।
ज्ञानानंदी गुण भरयो, सहिजानंद सरूप।
केवल कमला जिण लही, भल आतम गुण भूप। घणुं. मे.।६।
परम दयाल कृपाल भल, सकल देव सिरताज।
पर उपगारी परम गुरु, महिर वान महाराज। घणुं. मे.।७।
दरसण करतां दुख टलै, प्रणम्यां जाये पाप।
जाप जपंता इक मनां, न रहै निकट संताप। घणुं. मे.।८।
समरथ मेरो साहिबो, दयावंत दातार।
"अमर" समर हित चित धरी, जपतां जै जै कार। घणुं. मे.।९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—खम्भायती

राज रै वधाई वाजै आज ।
"श्रीचिंतामणि" जिनवर भेटे, सफल जनम भयो आज । राज रै.।१।
प्रभुनी महिर लहिर नें लटकै, सफल फले सब काज । राज रै.।२।
सकलाई जग मै स लहीजै, सकल देव सिरताज । राज रै.।३
सेवक जांणी सुखीया कीजै, सुख संपत्ति द्यो साज । राज रै.।४।
अपणौ जाणी चित हित आणी, राज बधारो लाज । राज रै.।५।
अवधारो ए अरज "अमर" पति, राज गरीब निवाज । राज रै.।६।

—:०:—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

जय जय जिणवर भव भय दुखहर,
सुखकर साहिब बेग सवायो । जय०। आं०।
साचो तारक विरुद श्रवण सुणि,
चरण कमल तोरै चित लायो । जय०॥ १ ॥
पूरव पुन्य उदै जब प्रगट्यो,
दरस सरस देखी सुख पायो ।
सोहनो सूरत मोहनी मूरती,
छवि मुख देखत चंद छिपायो । जय०॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री चिंतामणि चित मै वसीयो,
रसीयो चरण कमल चित लायो।
'अमरसिंधुर' पर सोम निजर कर,
सुख संपद द्यो वेग सवायो। जय०॥ ३॥

चिन्तामणिपार्श्व-स्तवन

राग—जंगलो

ध्याया ध्याया ध्याया वे,
"चिंतामणि" चित मै ध्याया वे। चिं०।
सुध समकित गुण के सुख दायिक,
लालच तिण चित लाया वे। चिं०॥१॥
सुद्धातम गुण की संभरणा,
चरण कमल चित लाया वे। चिं०॥२॥
सहिजानंद संपद सुविलासी,
प्रभुता प्रभु कहिवाया वे। चिं०॥३॥
"अमर" समर ऐसे अलवेसर,
पूरव पुन्यै पाया वे। चिं०॥४॥

—:×:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—सारंग मल्हार

प्रभु चिंतामणि जस जग जयो, प्रभु० ।
दरस सरस लहि पुन्य पसायै, आज कृतारथ मैं भयो । प्रभु.१।
वामा नंदन जगदा वंदन, साचो साहिब मै लह्यौ । प्रभु.२।
तरण तारण को विरुद श्रवण सुणि, हरष भरांणो मुझ हीयो । प्र.३।
परमानंदी जग परमेसर, भेटत दुख दोहग गयो । प्रभु.४।
परमानंदी जग परमेसर, "अमर" समर आणंद भयो । प्रभु.५।

——×०×——

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—मल्हार

सहेली म्हारा पूजो चिंतामणि पास, पूरै मन नी आस । सहेली.।
आससेन कुल दिन मणि उदयो, राजिंद दै सुख रास । सहेली.१।
तन मन वचन करी इक तानें, समरो सासो सास । सहेली.।
सुख संपद वंछित वर लहीयै, हुय रहीयै जो दास । सहेली.२।
रे भवि प्राणि चित हित आणी, मन मै एम विमास । सहेली.।
रतन लही कुण कांचै राचै, ए "ओखाणो" खास । सहेली.३।
प्रभु ए तारक दुरगत वारक, खिजमत करीयै खास । सहेली.।
प्रीत रीत सै पद युग प्रणमो, 'अमर' धरो उल्हास । सहेली'४।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—मल्हार

आज सु जलधर आयो, सखी मेरी आज०।
प्रभु कै चरण पखालण कारण,
इंद जलधि वणि आयो। सखी मेरी आज०।१।
"श्री चिंतामणि" दरस सरस कर,
हरष हीयै नहि मायो।
वाय सु वाय सु भावन भावै,
गरज मिसै गुण गायो। सखी मेरी आज०।२।
सूरत देख घनी अति सुन्दर,
दांमनि दुति दीपायो।
'अमरसिंधुर' ए दरसण कारण,
इंद जलध मिस आयो। सखी मेरी आज०।३।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—मल्हार

धणीय "चिंतामणि" ध्यावो, सुगुण नर. धणी०।
देव न इण सम जग मैं देख्यो,
अवर जंजाल म लावो। सुगुण०।१। ध०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेवीसम जिनवर त्रिभुवन पति,
अह सम पूज रचावो।
भविजन मिल भावन भल भावो,
गुण जणि गुण मणि गावो। सुगुण०।२। ध०।
शिव सुख दायिक नायक लायक,
दिन दिन चढतो दावो।
साचै दिल साहिब सेवंता,
"अमर" आणंद बधावो। सुगुण०।३। ध०।

—•—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—अडाणो मल्हार

लटकालै जिनजी सैं लय लागी।
"श्री चिंतामणि" है सोभागी,
लायक जिनजी सैं०। श्रीचिं०। लट०।१।
भावठ भय तज सब ही भागो,
राजंद चरण को मैं भयो रागी। लायक०।२।
पथ शिवपुर को है प्रभु पागी,
नीच निठुर गत नाठी नागी। लटका०।३।
जालम सुमत त्रिया जब जागी,
कुमत कुनार गई तब आगी। लायक०।४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्या मोह को भयो जब त्यागी,
सदगुण संभारे जब सागी। लटका०।५।
थिर जिन घरे भए जब थागी,
लहिर 'अमर' तव जिनजी सें लागी। लायक०।६।

इति मल्हार रागे स्तवना, अष्ट दशस्तुतिस्तोष्येरिदम्।

—०००—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

जय जय श्री जगनाथ, "चिंतामणि" चिरजयो।
प्रगट्यो पुन्य पंडूर, दोहग दूरै गयो॥
दरस सरस लहि देव, हुलसीयो मुझ हीयो।
भल ऊगो ए भांण, लाह अधिको लीयो॥ १॥

जग त्रय नायक लायक, दायक सुख सदा।
तूं तूठो जग नाथ, दीयै संपत सदा॥
परम दयाल कृपाल, किती कीरत कहुँ।
लख जीहे गुण ग्राम, कहो किण विध लहुँ॥ २॥

सेवित सुर नर इंद, चंद चरणे रहै।
देखी तुम्ह दीदार, सीतलता गुण लहै॥
जायै पाप संताप, ध्यान तोरो धरै।
दुरगत जायै दूर, सुगत संपद वरै॥ ३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भव भव चरण नी सेव, देव मो दीजीयै ।
विरुद गरीब निवाज, लाइक जस लीजीयै ॥
दास खास नी आस, पास जी पूरीयै ।
हीयडै आंणी हेज, दोहग दुख चूरीयै ॥ ४ ॥

अवगुण माहरा देख, रीस नहि आण स्यो ।
मोटा छो मावीत, छोरू कर जाण स्यो ॥
पतित जणां प्रतिपाल, चाल जो इण चलो ।
भविक जीवना नाथ, करै स्यो तो भलो ॥ ५ ॥

आपणां जाणी हेज, हीयै नही आण स्यो ।
तो पहुवी मैं परसिद्ध, सुजस किम पाम स्यो ॥
तिण सै त्रिभुवन नाथ, जगत जस लीजीयै ।
"अमरचंद" आणंद सदा सुख दीजीयै ॥ ६ ॥

इति श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवनम् ।

—०×०—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

वाधै रंग वधाई सवाई वाधत रंग. ।
"श्री चिंतामणि" प्रभु नै पूजित,
पातिक दूर पुलाई । सवाई० वाधै० ।१।
भावन भावो जिनगुण गावो,
आज घडी भल आई । सवाई० वाधत०।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुन्दर सूरत मूरत निरखी,
अंग मै आणंद न माई । सवाई० वाधत०।३।
सकलाई साची जग निरखो,
नमन करै नर राई । सवाई० वाधत०।४।
साचो समरथ साहिब पायो,
कुमणा हिव नही काई । सवाई० वाधत०।५।
"अमर" आनंदै ए प्रभु सेवत,
संपद सनमुख आई । सवाई० वाधत०।६।

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

चित हित धर "चिन्तामणि" भज रे ।
काम क्रोध है दुरगत दायक, तिसनां कुं अब तज रे । चित.।१।
तन मन वचन करी इक तांनें, सेवो भल पद कज रे । चित.।२।
जायै करम अरी जिन सेवन, सिंह दरस जिम गज रे । चित.।३।
भाव वरख वरखत जब जोरै, रहै कहो किम रज रे । चित.।४।
जाको जस परमल जग जाचो, ज्युं देवल पर धज रे । चित.।५।
'अमर' लह्यो साहब आनंदे, जनम सफल कर निज रे । चित.।६।

—०७—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—ख्याल की

श्री चिन्तामणि साम है साचौ,
सुख संपति कौ दाता।
मैं वारी जाउँ सुख संपत को दाता,
चिंतामणि साहिब है साचौ। सुख०।१। आं०।
सांचै मन जे सेव करत नित,
सोई लहत है साता। मैं वा०। सो०।२। श्रीचिं.।
अपणायत जांणौ अलवेसर,
पालै जिम सुत माता। मैं वा०। पा०।३। श्रीचिं.।
या प्रभु की सुनिजर सुपायै,
दोहग दूर पुलाता। मैं वा०। दो०।४। श्रीचिं.।
रात दीह प्रभु रंगे राचौ,
दायिक वांछित दाता। मैं वा०। दा०।५। श्रीचिं.।
त्रिभुवन तारक भव भय वारक,
गुणियण मिल गुण गाता। मैं वा०। गु०।६। श्रीचिं.।
भविजन भल प्रभु भावन भावो,
'अमर' सुजस अखियाता। मैं वा०।अ०।७। श्रीचिं.।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग— कैरवी

मनवा कर कर मौज सुं रे,
मेरै साहिब की भल सेव।
तारक है त्रिहुं लोक मै रे (एतो),
दुतीय न या सम देव। मनवा० मेरै०।१।

प्रीत रीत चित हित धरी रे वाल्हा,
करतां कोउ कल्यांण। मनवा०।
हृदय कमल उलसित थीयै रे वाल्हा,
भोर उदय जिम भांण। मनवा० मेरै०।२।

चंद चकोरा प्रीतडी रे वाल्हा,
मेंह अनें जिम मोर। मनवा०।
अविहड प्रीत अनादनी रे वाल्हा,
मधुप कमल ने जोर। मनवा० मेर०।३।

स विष प्रीत आधिक नहीं रे वाल्हा,
निर विष प्रीत नो लाग। मनवा०।
एतो ज्ञानानंदी गुण वरचो रे वाल्हा,
ए तो वाल्हमीयो वीतराग। मनवा० मेरै०।४।

एतो कासी वासी जय जयो रे वाल्हा,
एतो शिव रमणी सिणगार। मनवा०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहिजानंदी साहबो रे वाल्हा,
हीयडलानो हार । मनवा० मेरै०।५।
एतो अजरामर पद दायिक सही रे वाल्हा,
चिंतामणि चित धार । मनवा० ।
समरथ साहिब ए लह्यौ रे वाल्हा,
सुख संपत दातार । मनवा० मेरै०।६।

—०८००—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—छन्द बन्ध

जय जय चिंतामणि जन नायक, पायक पद क जभृङ्ग रे।
सुर असुरादिक जासु फुणिंदं, सेव करै धर रंग रे। जै जै.१।
जगत्रय नायक शिव सुख दायिक, लायक जगदा धारं रे।
अनुपम तनु छवि कंत उदारं, सोम निजर सुखकार रे। जै जै.२।
पर उपगार प्रसिध जस धारं, नमत सुर नर नारं रे।
अद्भुत गुण मणि महिर अपारं, कहीयै किम विस्तारं रे। जै जै.३।
सुमता सारं दुक्ख निवारं, केवल कमला धारं रे।
जोति रूप लोकोत्तम सारं, शिवा रामा शृङ्गार रे। जै जै.४।
सकल देव मझ सोहै इन्दं, तारागण जिम चंदं रे।
'अमरसिंधुर' सेवे आनंदं, त्रिकरण सुध सुखकंदं रे। जै जै.५।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—प्रभाती

नित लीजै प्रभु नाम तुहारो । नित० ।
चिंतामणि चिंतामणि जपतां,
सफल होत है मुझ जमवारो । नित० ॥१॥
नाम नांव चढीयो हुँ निरुपम,
भवसायर सै पार उतारो । नित० ॥२॥
वड वखती निज विरुद विचारो,
सेवक नां सुभ काज सुधारो । नित० ॥३॥
मैं हुँ दीन दयानिध तुम्ह हो,
सुगुणा तारक सुगुण संभारो । नित० ॥४॥
दास खास जांणी ने दाता,
वाल्हेसर मो वांन वधारो । नित० ॥५॥
"अमरसिंधुर" आणंद वधारो,
तौ ततखिण मन वंछित सारो । नित० ॥६॥

—००—

देशी चौपीनी

स्वस्ति श्री सुख दायिक सदा, दूरि गमाडै दूरितापदा ।
तेवीसम जग तारक जांण, बहु विध करीयै तासु वखांण ।१।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

महिर करो महाराज चिंतामणि,
सेवक पर सु निजर कीजै।
आद जुगादि तणौ अलवेसर,
दास खास कर जांणिजै। महिर०॥१॥

मैं इक तारी ए मन धारी,
थिर ए साहिब थापीजै।
अपणायत आणी नैं साहिब,
सुख संपत नित वगसीजै। महिर०॥२॥

तारै ते त्रिभुवन जन केते,
गिणतां ज्ञांन सो न गिणीजै।
तुं रीझवार दातार दया निधी,
हेत हीयै बहु आंणीजै। महिर०॥३॥

पर उपगारी होय रमेसर,
कीरत केती तुझ कीजै।
"अमरसिंघुर" ने अपणौ जांणी,
मन वंछित ततखिण दीजै। महिर०॥४॥

—००००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग---देशी चौपीनी

"श्री चिंतामणि" जिण जगचंद,
कामित दायिक सुरतरु कंद ।
आससेन कुल उदयो भांण,
अवनी मांझ अखंडित आंण ॥ १ ॥

लोपै नहि को सुर नर लीह,
वड वखती साहिब निर बीह ।
कर केहर भय दूरै हरैं,
निज सेवक नें निरभय करै ॥ २ ॥

सिंह सरप जल बंधन टलैं,
रोग शत्रु भय परहा पुलैं ।
राजा रूठो सुप्रसन जोई,
झगडो झूठो कबहु न होइ ॥ ३ ॥

सकजा सुत नें सुन्दर नार,
दिन दिन लीला लहै अपार ।
सुख संपद वाधै त्यां सदा,
महिरवान ज्यां होवै मुदा ॥ ४ ॥

कांमण डुंमण न लागै कदा,
अधिक आणंद लहै ते सदा ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छल छिद्र डाकण आकण टलैं,
मन वंछित सुख आवी मिलैं ॥ ५ ॥

सुपनें ही संकट नव होय,
दिन दिन चढती दोलत होय ।
चिन्तामणि चिन्तामणि कहो,
लीला लाछ घणी जिम लहो ॥ ६ ॥

चिंतामणि जो होय सहाय,
दुख दोहग तिहां निकट न आय ।
चिंतामणि नों जपतां जाप,
परहो जायै पाप संताप ॥ ७ ॥

चिंतामणि सेवैं इक चित्त,
रली रंग वाधै घर नित्त ।
श्री चिन्तामणि हीयडै मैं धरो,
जग जय कमला नित प्रत वरो ॥ ८ ॥

अह निसि पामैं अधिक आणंद,
जय जय रव करैं जाचक वृन्द ।
ते पसाय चिंतामणि तणो,
भविजन गुण माला नित गुणो ॥ ९ ॥

उभय लोक साधन ए भलो,
तेवीसम जिन जग सिर तिलो ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रणवक्षर पहिलो पभणीयै,
माया बीजह मन आणीयै ॥१०॥
श्रीँ अर्हं चिन्तामणि नमो,
दुरत आपदा दूरै गमौ।
चिन्तामणि नो धरीयै ध्यांन,
तो पामी जै कोड कल्याण ॥११॥
कल मझ साचौ सुरतरु कंद,
जयवंतौ सिरि पास जिणंद।
मोला परदेसे किम भमौ,
गिरवाई किम आलै गमो ॥१२॥
घर बैठांही करो घमंड,
मांडो चिंतामणि सुं मंड।
सेवो साहिब साचो सदा,
"अमर" चिन्तामण दैं संपदा ॥१३॥

इति श्री चिंतामणि स्तवनम्।

—००—

चिन्तामणि पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—घाटौ कैरवो चलित

क्रीयो रे चिंतामणि जपलै, फेडै भव भय फंद। जीया०।१।
सुख संपति को दाता, साचौ सुरतरु कंद। जीया०।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सांभल श्रवण सु सोभा, सेवै मुनिजन वृन्द । जीया०।३।
सुर असुरादिक कोटी, आणी अधिक आनंद । जीया०।४।
प्रह सम पूज रचावै, मिलि इन्द ने चंद । जीया०।५।
अपछर गुण मणि गावै, आणी भाव अमंद । जीया०।६।
तता थेई तांन मचावै, वाजित्र वाजै छंद । जीया०।७।
ध्येय स्वरूपै ध्यातां, पामै परमानंद । जीया०।८।
'अमर' समर दिल सुधै, रूडो लह्यो रे राजिंद । जीया०।९।

—:०:—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—कल्याण

श्री चिन्तामणि साचौ सांम, श्री चिं० ।
सुख संपत दायिक जग नायक, नित लीजै याको नांम । श्रीचिं.१।
पाय प्रणमीजै पूज रचीजै, कीजै उत्तम काम । श्रीचिं.२।
भावन भावो जिन गुण गावो, पुन्य संयोगै पामि । श्रीचिं.३।
तेवीसम त्रय जग जन तारक, अपणौ आतम राम । श्रीचिं.४।
घर इकतारी जे नर ध्यावै, कोड सुधारै काम । श्रीचिं.५।
चरण सरण गहि 'अमर' समर नित, हित धर पूरै हाम । श्रीचिं.६।

—०÷०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

चिन्तामणि चित धार, ए आतम आधार।
आज हो यारो रे, त्रिभुवन तारक ए जगपति जी ॥१॥
सुमता सागर सार, उपसम रस भंडार।
आज हो पायो रे, प्रभु पूरव पुन्य पसाय थी जी ॥२॥
पर उपगारी पास, ईहक पूरै आस।
आज हो पायो रे, मत सागर नागर मनहरूजी ॥३॥
जुंगी जांण जिहाज, परतिख शिवपुर पास।
आज हो पायो रे, साचो साहिब हित सुखकरूजी ॥४॥
दीजै भव भव देव, चरण कमल नी सेव।
आज हो धारो रे, ए अरज 'अमरसिंधुर' तणीजो ॥५॥

—०÷०—

चिन्तामणि-सम्यक्त्व-प्रार्थना

राग—कच्छी परभाती

तुम्ह दरसण विण मो मन नावा, दह दिस डोलै।
दह दिस डोलै रे वाल्हा, दह दिस डोलै। तुम्ह दरसण०।
रात दिवस न रहै इक रंगै, हींडै हिल्लोलै। तुम्ह०।१।
जनम जरा जल लहिर गहिर है, तास न को तोलै।
पामै पार न भवदधि भमतां, विबुध सु इम बोलै। तुम्ह०।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काम क्रोध बहु मगर मच्छ है, छकीया मद छोलै।
सनमुख आरत देखि भविकजन, भय लहै मन भोलै। तुम्ह०।३।
चरण शरण हिव तो चिंतामणि, आयो तुम्ह खोलै।
सुध समकित दरसण गुण दीजै, 'अमरसिंधुर' बोलै। तुम्ह०।४।

इति सम्यक्त्वपदमिदम्।

—x+x—

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—परभाती

जय जय जय जय पास जिणंद। जय०।
जनम नगर वणारसी याको,
कुल इक्खागै कमल दिनंद। जय० ॥१॥
वामादेवी है जसु माता,
नायक आससेन नृपनंद। जय० ॥२॥
नील कमल दल काया निरमल,
चावो लंछन याकै चरण फुणिंद। जय० ॥३॥
तारक तीन भुवन को जगपति,
चरण कमल नमै चौसठ इंद। जय० ॥४॥
भव भव देव सेव मो दीजै,
'अमर' चिंतामणि अधिक आणंद। जय० ॥५॥

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

ढाल—सूरती महिना नी

जय जय "चिंतामणि" जग नायक, शिव सुखदाय ।
धवल कमल–दल सोभा धारी, कोमल काय ॥
सुंदर सूरत मूरत सोहै, अतिस कलाप ।
प्रणमंता पातिक पुलै, सकल मिटै संताप ॥१॥

त्रिभुवन जग जन तारक, वारक क्रम अरि कंद ।
रयण तिमर कहो किम रहै, उदयै पूँनिम चंद ॥
दीठी मुद्रा निद्रा जायै दुख नी दूर ।
अंधकार अलगौ पुलै, जिम उगंतै सूर ॥२॥

सुमता सागर आगर, सुभ गुणमणिनां धाम ।
अलवेसर साहिब छो, अम्हचा आतमराम ॥
सहजानंद सरूपी ज्ञानानंदी गेह ।
सकल भविक जन उपर धरीयै अविहड नेह ॥३॥

हितकारी उपकारी साचा श्री जिनराज ।
भव जल भविजन तारे, जांणे जुँगी जिहाज ॥
महिर धरी मणिधारी, पतित जनां प्रतिपाल ।
सकल देव सिर सोहै, साचो दीन दयाल ॥४॥

दास खास छुं साचो, राच्यो तुझ गुण रंग ।
प्रीत रीत बहु बाधी, जिम पोयण ने भृङ्ग ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महिर तणो मटको लटको, कर श्री जिन देव ।
भव भव "अमरसिंधुर" नें, दीजै चरण नी सेव ॥५॥

—००००—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—ख्याल

श्री चिंतामणि पास प्रभु जी,
सरण तुहारै आयो, मैं वारी जाउँ । सरण.। श्री.।
भव अटवी चौगत में भमतां,
पुन्यै दरसण पायो । मैं वा.। श्रीचिं.।१।
पर उपगारी साचो परखी,
चरण कमल चित लायो । मैं वा.।
गुणमणि भरियो जांणै दरियो,
सगुण साहिब मैं पायो । मैं वा.। श्रीचिं.।२।
अतुलबली साहिब लहि एहवो,
मौ मन बहु ललचायो । मैं वा.।
महिर लहिर सुनिजर सुपसायै,
'अमर' अधिक सुख पायो । मैं वा.। श्रीचिं.।३।

—:x:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—गरबो

चिंतामणि चित मैं वसै सहेलडीयां,
रात दिवस इक रंग। रे गुण वेलडीयां ।
प्रीत लगी प्राणेस सुँ सहेलडीयां,
पलक न छोडुं संग । रे गुण० ॥१॥

सांचो साहिब मांहरो सहेलडीयां,
सुखदायक श्रीकार । रे गुण० ।
पर उपगारी परगडो सहेलडीयां,
भव भय भंजण हार । रे गुण० ॥२॥

सुमता सागर सलहीयै सहेलडीयां,
दयावन्त दातार । रे गुण० ।
सहिजानंदी साहिबो सहेलडीयां,
अनुपम एह उदार । रे गुण० ॥३॥

ज्ञानानंदी गुण भर्यो सहेलडीयां,
आनंद घन अवतार । रे गुण० ।
आप तर्या पर तार वै सहेलडीयां,
शिव सुख दायक सार । रे गुण० ॥४॥

चित हित नित जो सेवीयै सहेलड़ीयां,
कापै क्रमनां कंद । रे गुण० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए प्रभु नें सुपसायथी सहेलडीयां,
"अमर" लहै आणंद । रे गुण० ॥५॥

इति श्री चिंतामणि स्तवनम् ।

—००—

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

सुध समकित सहिनांणी आपौ,
भव भय मोरा कापो जी । सुध० ।
श्री चिंतामणि चित हित धरकै,
शिव सुख मोहि समापो जी । सुध० ।१।
करम अरी मुझ केड लगे है,
ता कुँ दूरै तापो जी । सुध० ।
खास दास मेरो है खासौ,
छापो एहवो छापो जी । सुध० ।२।
कोमल दृग सें देख कृपा निध,
महा भव्य गुण मापोजी । सुध० ।
"अमरसिंधुर" याचक है अपनो,
शिव सुख वेग समापो जी । सुध० ।३।

—० ०,०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन

राग—मल्हार

जगदानंद जयोरी "चिंतामणि" । जगदा० ।

प्रभु की महिर लहिर बरषा रित, आगम जलध भयो री । चि.ज.१।

पाप ताप सब दूर पुलाए, परम सिसरता भयो री ।

दुभिक्ष दुर्गत दूर गमाए, धरम सु धांन निपायो री । चिं.ज.२।

सुंदर सूरत मूरत निरखी, भाव सु बाव सुहायो री ।

ऐसी बरषा भई री अनोपम, 'अमर' आनंद बधायो री । चिं.ज.३।

चिन्तामणि-होरी

राग—बसन्त फाग

मिंदर में खूब मची होरी, मिन्दर में. ।

राजेसर चिंतामणि राजै, सुर नर नमै ताकूँ कर जोरी ।

देवल में, देवल में धूम मची होरी । आंकणी ।१।

सु विवेकी श्रावक मिल आये, दरस करत है कर जोरी ।२। मिं.।

ताल कंसाल मृदंग वजावत, फाग राग गावत होरी ।३। मिं.।

शुद्ध श्रद्धा सोई गहिर कशुंभा, पीवत कुमत दिसा तोरी ।४। मिं.।

अनुभव लहरी सुरखी आई, प्रीत प्रभुजी सें तब जोरी ।५। मिं.।

सुमता केसर रंगे रसिया, खेलत अनुभव सै टोरी ।६। मिं.।

भाव समीर नीर निर्मलता, ज्ञान गुलाल भरी होरी ।७। मिं.।

खेल मच्यो देखत है मुनिजन, काटत है क्रम की डोरी ।८। मिं.।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आतम अनुभव सूरज उदयो, मिथ्या मोह गयो दोरी।९। मिं.।
परम धरम को गुन प्रगटायो, 'अमर' संपद सुख पायोरी।१०। मिं.।

—·|·—

चिन्तामणि-होरी

राग—वसन्त

होरी आई रे, होरी आई रे,
अधिक चित हित दाई रे। होरी०।१।
नरनारी सब रंग सुरंगे,
पेखत प्रीत अधिक पाई रे। होरी०।२।
घर घर होरी खेल मचत है,
सिंघ सकल कै मन भाई रे। होरी०।३।
"चिंतामणि" जी कै चरण नमन कुँ,
भाव अधिक हित चित लाई रे। होरी०।४।
मंदिर आवै फागण गावै,
सुणतां श्रवण कुं सुखदाई रे। होरी०।५।
चंग वजावै गुण मणि गावै,
तालोटा दै मन भाई रे। होरी०।६।
दरस सरस करकै सुखदाई,
परम प्रीत भविजन पाई रे। होरी०।७।
भक्ति भाव केसर में भीना,
"अमर" संपदा जिन पाई रे। होरी०।८।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-फाग

राग—बसन्त

जिनजी के गुण गावो हांरे लाला जिन०,
मिंदर मिल आवो । जिन० मि० ।१।
"चिंतामणि" जी कै चरण कमल सें,
नित चित हित सैं लावो रे । मिं० जिन० ।२।
सुंदर सूरत मूरत निरखी,
परमानन्द सुख पावो रे । मिं० जिन० ।३।
तारक है त्रिभुवन पति जिनजी,
फाग राग गुण गावो रे । मिं० जिन० ।४।
केसर कुंकम कुँ छिडकावो,
लाल गुलाल उडावो रे । मिं० जिन० ।५।
चंग मृदंग ने ताल बजावो,
लहिरी आणंद लावोरे । मिं० जिन० ।६।
भगत जुगत सें भावन भावो,
पुन्य भंडार भरावो रे । मिं० जिन० ।७।
इण विध होरी ख्याल बनावो,
'अमर' सदा सुख पावो रे । मिं० जिन० ।८।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि-पार्श्व-स्तवन

राग—फाग

ए होरी भाव भले आयो,
ए होरी, ए होरी भाव०। आंकणी।

सुविवेकी जिन मंदर आये,
राग फाग मिल मिल गायो। ए होरी. ।१।

ताल कंसाल मृदंग वजत है,
श्रवण सुणत अति सुख पायो। ए होरी. ।२।

त्रिभुवन साहिब तखत विराजे,
दरस सरस कर सुख पायो। ए होरी. ।३।

सुन्दर सूरत मूरत निरखी,
जिन चरणन सैं चित लायो। ए होरी. ।४।

"चिंतामण" चित नित मन धरतां,
पुन्य प्रबल सनमुख आयो। ए होरी. ।५।

सुत संपत ने सुक्ख सवायो,
पूजक भल श्रावक पायो। ए होरी. ।६।

"अमरसिंधुर" आणंद वधायो,
होरी अनुभव भल आयो। ए होरी. ।७।

(लेखन प्रशस्ति—)संवत् १८८८ रा मिति चैत्र वदि १ रजोत्सव दिने प्रथम प्रहरे लिखितं वा. अमरसिन्धुर गणि शिष्य पं० रूपचंद वाचनार्थं। श्री मंबुई विंदरे एकादशमी चतुर्मासी कृता, श्री चिंतामणिजी प्रसादात् श्रेयो सदैव भव।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिन-मंदिर-स्तवन

राग—परज खम्भायती

[पिचकारण रंग वरसै गोकल में पिच०, मैं जमना में जल भर जात ही ज्युं ज्युं जोवा तरसै गोकल में पिच०] ए चाल ।

आज आनंद घन वरसै मिंदर में, आज आनंद० ।

प्रभुजी की महिर महाघन वरसत,
पाप ताप गए तरसै । मिंदर०।१। आ०।

सकल संघ को साथ मिल्यो है,
भाव मलै मन हरसै । मिंदर०।२। आ०।

त्रिभुवन साहिब तखत विराजे,
मुखरो जाको दरसै । मिंदर०।३। आ०।

महिरवान महाराज बड़े हैं,
पुण्य योग से परसै । मिंदर०।४। आ०।

महानंद सुख दायक लायक,
दुख दोहग कूँ हरस्यै । मिंदर०।५। आ०।

"अमर" सुसंपद सुख को दायक,
अहनिश नाम उचरस्यै । मिंदर०।६। आ०।

—००००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनराज-स्तवन

राग—कल्याण

ऐसै जिनराज आज नैन सै निहारे, ऐसै० ।
नहीं या कै कोह लोह मोह मांन मारे,
वेद कुं अवेद जांण विषया रस वारे । ऐसै०।१।
करी अरी दूर हरी आठ ही अढारे,
जैत लही तै जिनंद उपसम असधारै । ऐसै०।२।
संपदा सुचंग गहि ज्ञान गुण धारै,
दीन कै दयाल प्रभु आतम उजवारे । ऐसै०।३।
आस रास पूरो पास केते जन तारे,
"अमर" समर एक रंग आतम आधारे । ऐसै०।४।

इति श्री चिंतामणिजी स्तवनम् ।

—०००—

जिन-स्तवन

राग—सोरठी रेखतो

(हजार बार सलम चाह सै बुलाते थे, ए चाल में)

जब हु ते जिणंद चंद इंद मिल आते थे ।
इन्द्र मिल आते थे, सहिज सुख पाते थे । जब०।१।
.....
भक्ति सै भरे भराव सीस, भी नमाते थे । जब०।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देव कोडि हाथ जोडि, हाजरी रहाते थे।
समोसरण अति सुचंग, रंग सै रचाते थे। जब०।३।
छत्र तीन शीश छाजै, चामर भी बींझाते थे।
तखत वेसै वखतवार, दरस चौ दिखाते थे। जब०।४।
चौविह सु संघ पास, सेव भी कराते थे।
देशना सुधा समान, सबन कुं सुनाते थे। जब०।५।
भक्ति अमर अमर संग, गंद्रब गुण गाते थे।
तांन सेती तान लाय, बाजा भी बजाते थे। जब०।६।
अप्सरा मिलि आणंद, नाच भी नचाते थे।
तता थेई थेई थेई, बीछीया बजाते थे। जब०।७।
दीन के दयाल नाथ, धरम कुँ दिपाते थे।
'अमर' समर अति आणंद, ज्ञान गुण धरातेथे। जब०।८।

—:०:—

जिन-स्तवन

राग—अडाणो मल्हार

नवल लग्यो है अब जिनजी सै नेहरा,
तीन लोक कै है सिर सेहरा। नवल०॥१॥
विनय विवेक वणे भल सेहरा,
महा गुण ज्ञान सो वुंदांवनी मेहरा। नवल०॥२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निज जांणग सो अनुभव लहिरा,
मूलातम गुण सोभाव देहरा। नवल०॥३॥
विवहार नय सों गरज भई गहिरा,
आया है कुगति कुमति का छेहरा। नवल०॥४॥
मिथ्या मत मिट गए तन वहरा,
'अमर' लग्यो तब प्रभु जी सैं नेहरा। नवल०॥५॥

—००—

जप-माला-गीत

राग—बसन्त

जीया रे तजीयै जंजाला, जपियै जिन गुण जप माला री। त.।

सुरत समाध सो दोरि बनी है, गुण मोतिन सुविशाला।
धीरजता कौ मेर धरचो है, असी है अनुभव माला री।१। त.।

तन मन वचन करी इक तानै, थिर आसन दृढ ताला।
जाप जपंतां इण विधि जीयरा, कटत दुकृत क्रम जाला री।२। त.।

अनुभव चिदानंद चित हित धर, ग्यान ध्यान गुण माला।
'चिन्तामणि' सुख संपत दायक, जपीयै 'अमर' जप मालारी।३। त.।

—०÷—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनवाणी-गीतम्

(पिचकारण रंग वरसै गोकुल में पिचकारण०, ए चाल)

वांणी सुधारस वरसै, प्रभू तेरी वांणी सुधा० ।
अमृत सम जिन वाणी अनोपम,
सुणवै कुं जीय तरसै । प्रभु तेरी वांणी०।१।
श्रवण सुणत जब सुख बहु उपजत,
हेत हीयै बहु हुलसै । प्रभु तेरी वांणी०।२।
ए जिन वाणी चित हित धरस्यै,
ते ते भविजन तरसै । प्रभु तेरी वाणी०।३।
रोहणीयै पर मत रोचवस्यै,
निज आतम गुण गहिस्यै । प्रभु तेरी वाणी०।४।
'अमरसिंधुर' सो लहै अवचल पद,
शिव सुंदर सुख वरस्यै । प्रभु तेरी वाणी०।५।

—००—

सिद्धाचल-स्तवन

(सं० १८६० दिशि यात्रा बम्बई में)

धन धन जंबूद्वीप दक्षिण धरारे, दीपै सोरठ देश ।
सकल सैल गिरराज नें ए सेहरो रे, सेवित सरव सुरेस ।
श्री सिधगिरि ए भावै भेटियै रे ।१।
चित हित अधिक आणंद, विमलाचल ए विमलातम करैरे ।
फेडै दुरमति फंद, श्री सिद्धाचल भावै भेटियै रे ।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सासय तीरथ जग मैं सलहीयै रे, त्रिभुवन तिलक समान।
पाप संताप तिमिर गण मेटवारे, भल हल उदयो भांण।
श्री शत्रुंजयगिरि भावै भेटियै रे ।३।

पूरव निवाणुं वार पधारीया रे, आदै आद जिणंद।
पांच कोडि मुनि सुँ पुंडरीक जी, शिव पद लह्योजी आणंद।
श्री उज्जलगिरि भावैं भेटियै रे ।४।

नमि विनमि विद्याधर मुनिवरा रे, आव्या इण गिरराज।
फागुण सुदि दसमी शिवपद लही रे, सारचा आतम काज।
श्री कंचन गिरि भावैं भेटियै रे ।५।

दस कोडि मुनि सै भल दीपता रे, द्रावड नें वारखिल्ल।
शिव रमणी सासय सुखनी वरी रे, जीतो मोह मह्ल्ल।
श्री सुरगिर नें भावै भेटियै रे ।६।

नमि विनमी राजानी नंदनी रे, चौसठे चित चंग।
सिव गिरि ऊपर शिव कमला वरी रे, राची अविहड रंग।
श्री सासयगिरि भावै भेटियै रे ।७।

दसरथ सुत दस कोडि सैं परवचो रे, रामचंद्र रिखराज।
पांडव वीश कोड परगडा रे, पामी शिवपुर पाज।
श्री अवचलगिरि भावै भेटियै रे ।८।

थावच्चासुख शैलक गणि वरू रे, नव नारद बहु नेह।
संव प्रजू'न करम कोडी हणी रे, गहि शिव सुंदर गेह।
श्री पुष्फदंत गिरि भावै भेटियै रे ।९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इण परि काल अनंतानंत मै रे, साधु अनंती कोडि ।
श्रीसिधगिरि परि शिव कमला वरी रे, वंदूं बेकर जोडि ।
श्री पुष्पदंतगिरि भावै भेटियै रे ।१०।

श्री सिधगिरि ए परवत सासतो रे, जंपै जगदाधार ।
तिलक समो ए सहु तीरथ सिरै रे, सकल गिरां सिणगार ।
महातीरथ ए भावै भेटियै रे ।११।

इण गिरि सनमुख जात्रा आवतां रे, पग पग पंथ प्रमांण ।
कोड कोड भव नां पातिक पुलै रे, वीर वदै इम वांण ।
श्री गिरिराज ए भावै भेटियै रे ।१२।

अहरी पालै जात्रा जे करै रे, भाव सहित भरपूर ।
जोनी संकट नां जोखम टलै रे, दुःख दोहग जाय दूर ।
श्री सेलगिरिवर भावै भेटियै रे ।१३।

"दिस" जात्रा ए कीधी दीपती जी, "मंबुईपुर" मन रंग ।
"अढारैनेऊ" आणंद सुँ जी, "अमरसिंधुर" चित चंग ।
महागिरि ए नमीयै नेह सुँ रे ।१४।

इति श्री सिद्धाचल स्तवनम् ।

ज्ञान-पंचमी-स्तवन

श्री जिन शासन नंदन वन समोरे, श्रुत सागर सुख कंद ।
एक मना नित प्रति आराधतां रे, अधिक लह्यौ आनंद ।
भविजन भावै ज्ञान आराधीयै रे ।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल भवणे, सांभलतां जिण सुख लहै रे।
फलय मनोरथ माल, भविजन भावै ज्ञान आराधीयै रे।२।
मूल सूत्र ते थुड नें साख छै रे, निक्षेपा प्रतिशाख।
नय भूङ्गी रंगीली लुंयरे रै, सूत्रारथ पत्र दाख। भवि.।३।
जिण सांभलतां सुरनां सुख लहै रे, पुहप तेहिज सु प्रमाण।
अनुभव लहिरी ऊल्हसै रे, अक्षय सुख फल जाण। भवि.।४।
नंदन वन सम पुस्तक परगडारे, श्री जिन शासन सार।
पूजंतां पातिक दूरै पुलै रे, एहिज सबल आधार। भवि.।५।
जग जन तारक वारक क्रम तणो रे, भव नो भंजण हार।
मोक्ष नगर नें मार्ग मलपता रे, एहिज सबल आधार। भवि.।६।
कमल सेठ जिम शिव कमला वरी रे, सुणतां श्रवण सिद्धांत।
तिम जिनवांणी आंखि ने हीये रे, सुणजो धरिय निभ्रांत। भवि.७।
शुभ घृत दीप धूप अक्षत भला रे, फल ने फूल नें प्रधान।
केसर सें पूजीजें हित धरी रे, 'अमरसिंधुर' सु प्रधान। भवि.।८।

इति ज्ञान पञ्चमी स्तवनम्।

——×०×——

ज्ञान-पंचमी-स्तवन

(वादली निहालु रे बीजा जिन तणी रे, ए ढाल)

आराधो भवि भावै अहनिसै रे, अधिक धरी आणंद।
निस वासर ए ज्ञान सु सेवना रे, कलि मैं सुरतरु कंद।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भवियण भावै ज्ञान आराधीयै रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल ।
ए पुस्तक उपगारी आपणां रे, भांजै भ्रम जंजाल । भवि.।२।
गणधर भाष्या सूत्र सिद्धांत ए रे, सुणतां श्रवण सदीव ।
अरथ एहनां अरिहंत उपदिस्या रे, बोध लहै जिण जीव । भवि.३।
नयसाते निक्षेपा च्यार छै रे, नवतत्व जीवाजीव ।
करम आठ नां कारण पिण कह्या रे, उत्तर भेद अतीव । भवि.।४।
ए श्रुत सागर नागर नित नमो रे, पूजो जै धर प्रेम ।
केशर पुष्प दीप धूपै करी रै, नैवेद्य फल धर नेम । भवि.।५।
गुरु मुख थी ज्ञानामृत पीवतां रे, भाजै कोड कलेस ।
रोहणीयै जिम गाथा इक सुणीरै, शिवपद लह्यो सुविशेष । भवि.६।
आज अछै श्रुत ज्ञान सिरोमणि रे, सकल जीव सुखकार ।
ज्ञान पंचमी ज्ञान आराधवा रे, 'अमरसिधुर' आधार । भवि.।७।

इति श्री ज्ञानपञ्चमी स्वाध्याय ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दादा-गुरु-गीतानि

जिनदत्तसूरि-गीत

राग—वसन्त

"श्रीजिनदत्तसूरि" सुख दायक, लायक दीजै साता । श्री.।
रात दीह अहिनिश इक रंगै, गुण मणि तोरा गाता । श्री.।१।
अरियण कंद उदालीयै साहिब, अलगी हरो जी असाता ।
"वल्लभ" ना पटधार वडालो, पालौ पुत्र ज्युं माता । श्री.।२।
महिरवान हिव महिर निजर कर, तुम्ह हिज मात नै त्राता ।
'अमरसिंधुर' वीनति अवधारी, दीजै वंछित दाता । श्री.।३।

—•—

दादा श्री जिनकुशलसूरिजी रो छंद

(२० सं० १८६१ बम्बई)

(दूहा)

विमल वाहिनी वर दीयै, महिर लहिर कर मात ।
गच्छनायक श्री "कुशलगुरु", आंखुं जस अवदात ।१।
"चंद" पटोधर चंदकुल, प्रगट्यो पूँनिमचंद ।
साचा गुरु देखी सकज, सेवै मुनिजन वृन्द ।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

"तैरे सैंतीसै" समै, अवतरीया गुरु आप।
सैंतालै संयम ग्रह्यौ, पहुवी वध्यौ प्रताप।३।
सूर मंत्र "सचितरै", पाम्यौ पुन्य पसाय।
तखत वखत दीपावियो, राजै "खरतरराय"।४।
सकल सूरि सिर सेहरो, मणधारी मछराल।
भविजन प्रतिबोधी भला, दाता दीन दयाल।५।
सुर सुख लह्या "नयासीयै", "देरावर" पुर देव।
साची सकलाई निरख, सुरनर सारै सेव।६।
कलियुग मैं चढती कला, निरखी नें नरनार।
थांन थांन थिर थापना, पूजै विविध प्रकार।७।

(छन्द-मोती दाम)

पूजो गुरु पाय सदा धर प्रेम, नमौ षट मास धरी नैं नेम।
आराध्यां आवै श्री गुरुराज, कृपानिध कोड सुधारै काज।८।
लहै सुकुलीणी सुंदर नार, भली सुत जोड लहै श्रीकार।
लाखीणी लच्छ वधै भंडार, कृपानिध तूँ सै जौ करतार।९।
आंधा नें आंख दीयै पंगु पाय, सूधै मन सेवै जो गुरु पाय।
तृषातुर देखी पावै तोय, हठीलौ साहिब हाजर होय।१०।
तरी बूडंती आणै तीर, न होय कदापि त्यां जोखम नीर।
दोषी नर देखी टालै दूर, चिंता नैं भांज करै चकचूर।११।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टालै वध बंधन कष्ट करूर, निरमल तास वधै मुख नूर ।
साचो गुरु धींगड मल्ल सधीर, चोखो जस वास वधारै चीर ।१२।
गमाडै रोग महागुरु राय, पूजै जे पूँनिम पूनिम पाय ।
करि अरि केहर दुठ कुद्धाल, महाभय दूर हरै आल माल ।१३।
खलां दल हुंत उधारचो आय, 'राठोड सुजाण बीकाण' नों राय ।
'सांगा' नें पुत्र दीयो श्रीकार, कथुं 'क्रमचंद' कुलै आधार ।१४।
मलेच्छे द्वेष कीयो 'मुलतांण', मोटौ 'जिनचंद' नो राख्यो मांन ।
'मोदी' ने पूत दीयो मन रंग, चोखी चित चाह पूरै गुरु चंग ।१५।
अनम्मी मानें आण अखंड, पुलायै जायै पाप प्रचंड ।
महा रींझवार दातार मुणिंद, चावो चिहुँ खंड पटोधर चंद ।१६।
कहुँ इक जीह किता अवदात, इला मझ तुम्ह तणी अखीयात ।
साचो गुरु राय सादूलो सींह, अहो अतुलीबल राज अबीह ।१७।
छोरू निज जाणी नें छत्राल, तुम्हें महाराज करो प्रतपाल ।
अम्हीणें तुझ तणों आधार, जपंता जाप करो जै कार ।१८।
अम्हीणां कोड सुधारो काज, नेहे धर नेह गरीब निवाज ।
साची इक तार तुम्हांरो सांम, अम्हीणों तुँहिज आतम राम ।१९।
साचो हुँ दास तुम्हारो खास, सदा सुख संपद दीजै रास ।
करूँ अरदास कहुँ कर जोडि, कृपानिध पूरो वंछित कोडि ।२०।

॥ कलश ॥

पूरो वंछित कोड सुगुरु श्री "कुशलसुरिंदा" ।
महिर करो महाराज अधिक मुज देह आणंदा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दायक वंछित दांन दुति नहि अवरन देवा।
अलवेसर आधार सारीयै निस दिन सेवा॥
"अढार इकाणुं" आसूऔं, "मंबुई" विंदर मनरली।
कुसलेस सुगुरु सुपसायथी, 'अमरसिंधुर' आशा फली।२१।

इति श्री दादा जिनकुशलसूरिजी रो छन्द।

—:o:—

जिनकुशलसूरि गीत

राग—जयत श्री

जुगवर जग जयो, सेवे श्री कुशल सुरिंद। जु०।१।
श्रुतसागर महिमा तिलो, एतो सुमता रस नो कंद।
पर उपगारी परगड़ो, एतो खरतरगच्छ नो इंद। जु०।२।
ठाम ठाम थिर थापना, वारी नमय सदा नर वृन्द।
पद युग में प्रेम सुं, गावै भल गुण छंद। जु०।३।
आराध्यां आवै मुदा वारी, फेड़े दोहग फंद।
सुख संपद दै सेवकां वारी, अधिक धरी आणंद। जु०।४।
देव न दूजो गुरु समो, वारी तेजे जांणि दिणंद।
'अमरसिंधुर' ओलग करै, वारी चंद्रोपम कुलचंद। जु०।५।

—:o:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनकुशलसूरि गीत

राग—फाग

जय बोलो कुशल सुरीसर की, जय बोलो।
नरनारी मिल फाग राग में,
गुण गावो निस दिन हरखी। जय०।१।
जैतसिरी माता भल जायो,
सूरत देव कुँवर सरखी। जय०।२।
मंत्री जेल्हागर कुल मंडण,
गुण मणि ग्रह्या जिण आकरषी। जय०।३।
वरस अढार में जिण व्रत लीनौ,
हित धर के मन में हरखी। जय०।४।
चंद पटोधर ए चिरजीवो,
बलिहारी राजेसर की। जय०।५।
भूमंडल भविजन प्रतिबोधे,
वाणि सुधारस घन वरषी। जय०।६।
तेर नयासी वरषे ततखिण,
सुरपति मघवा दुति सहरषी। जय०।७।
'अमरसिंधुर' ए अनुपम साहिब,
नमो सदा पद युग निरखी। जय०।८।

—००००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सूरत मंडप

जिनकुशलसूरि गीत

आज आनंद भयो, सुगुरु मेरे आज आनंद भयो ।
मणधारी गुरु महिर पसायै, दोहग दूर गयो। सु. आज.१।
"सूरत" विंदर सोहै मिंदर, आद् एह जयो। सु. आज.।
सहु नर नारी चित हित धारी, दरस सरस उमह्यो। सु. आज.२।
पद युग पूजै तसु अघ धूजै, लायक दरस लह्यो । सु. आज.।
विरुद वडालो सुगुरु छत्रालो, जग त्रय सुजस जयो। सु. आज.३।
सुप्रसन होवै सुनिजर जोवै, तसु दुख दूर गयो। सु. आज.।
दोलत दाता तिम सुख साता, 'अमर' आनंद भयो। सु. आज.४।
'कुशल' कुशल गुरु महिर पसायै, दोहग दुक्ख दह्यो। सु. आज.।
जे गुरु ध्यावै वंछित पावै, ए जस आद जयो । सु. आज.५।

—०:※:०—

जिनकुशलसूरि गीत

सुगुरु कुशलसुरिंद सेवो, सुगुरु० ।
अधिक धर उछरंग अहि निस, नमै जास नरिंद । सेवो.।१।
सकल सूरिसर मुकुट सम, देव मझ जिम इंद ।
चंद नों पटधार चावो, दीपै तेज दिणंद । सेवो.।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आराधीया गुरु तुरत आवै, वरदीयै सुखवृन्द ।
कष्ट चूरै विघन दूरै, फलै सुरतरु कंद । सेवो.।३।
वर पुत्र संपद कलत्र दायिक, गच्छ खरतर इंद ।
सुभसी संपद दीयै मुनिजन, प्रसिद्ध परमाणंद । सेवो.।४।
भूत प्रेत पिचाश नां भय, वले तसकर वृन्द ।
नाम मंत्रै निकट नावै, दफय हुए सहु दंद । सेवो.।५।
सेवक भणो दै सुख संपद, महिर धरीय मुणिंद ।
सकल सुख दायिक सुगुरु, ए चवै मुनि इम चंद । सेवो.।६।

—:o:—

जिनकुशलसूरि गीत

राग—रेखता

सुगुरु तै देव साचा है, रिदै तुझ ध्यान राता है ।
दुनी मैं देव बहु देखै, गिणंता ज्ञान नहि लेखै ॥१॥
चावो पटधार तुँ चंदा, इलायै अवतस्यो इंदा ।
नमै तो चरण नर नारी, "छाजैडां" वंश छत्र धारी ॥२॥
मोटो गुरुदेव मणधारी, वारी जाउँ तोहि बलिहारी ।
'कुशल' गुरु सकल सुख कीजै, संपदा 'अमर' मोहि दीजै ॥३॥

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनकुशलसूरि गीत

राग—परभाती

महिरवान महाराज बडे हैं, "श्रीजिकुशलसुरिंदा" ।
मौजी साहिब है मणिधारी, परतिख पूनिम चंदा । महिर.।१।
सकलाई साची जग निरखी, नमण करै नर वृन्दा ।
पूजक जननां वंछित पूरै, कल मझ सुरतरु कंदा । महिर.।२।
अपणां जांणी ने अलवेसर, समपीजै सुख वृन्दा ।
सुनिजर छत्र छांह कर सदगुरु, 'अमर' वधै आनंदा । महिर.।३।

—०×०—

जिनकुशलसूरि गीत

राग—बसन्त

मेरे सदगुरु कुशल सुरीसर जूकै तो, चरण कमल चित लावो ।
चरण कमल चित लावो, सुगुरुजी कैं चरण कमल चित लावो ।

सदगुरु कुशल सुरीसर जूकै,
मैं चरण कमल चित लावो ।
प्रहसम मिल नें पूज रचावौ तो,
भावन मन शुध भावो । मेरे सद.।१।

परसिध अष्ट सम्पदा पावो,
नव निध गेह बधावो ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सकजा सुत सुन्दर वर नारी,
लीला लच्छ लहावो । मेरे सद.।२।
आराध्यां गुरु ततखिण आवो तो,
दरस सरस दरसावो ।
महिर करो साहिब अब मेरा तो,
आणंद अधिक बधाओ । मेरे सद.।३।
साता दाता हो सदगुरुजी,
दिन दिन चढतो दावो ।
"अमरसिंधुर" की आसा पूरो,
तो परम सुजस जग पावो । मेरे सद.।४।

—x+x—

जिनकुशलसूरि गीत

राग—बसन्त

श्री जिनकुशल सुरिंदा रे,
पूजौ परमाणंदा । श्रीजिन. ।
श्री खरतरगच्छ नायक लायक,
चंद पटोधर चंदा रे । पू०।१। श्री०।
आराध्यां गुरु ततखिण आवै,
सनिजर धरिय सुरिंदा रे । पू०।२। श्री०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संकट तिमिर हरेवा साहिब,
दीपत तेज दिणंदा रे । पू०।३। श्री०।
चिंता चूरै परता पूरै,
वर दै वंछित वृन्दा रे । पू०।४। श्री०।
सुत संपत सुंदर सुख दायक,
कल मझ सुरतरु कंदा रे । पू०।५। श्री०।
अपणा दास जांणी अलवेसर,
दूर हरौ दुख दंदा रे । पू०।६। श्री०।
'अमर' समर श्री सदगुरु साचौ,
अहनिशि होय आणंदा रे । पू०।७। श्री०।

जिनकुशलसूरि गीत

राग—बसन्त

श्री जिनकुशल सूरीसर साहिब, चंद सुरिंद पटधारी ।
विरुद वडाला श्रवण सुणी नै, वारि जाऊँ वार हजारी ।१। श्री.।
अपणा जाणी नै अलवेसर, मत मूकौ वीसारी ।
अरियण जण ना कंद निकंदौ, ज्युँ कापै रूंख कुठारी ।२। श्री.।
सुख संपत दीजै गुरु मेरे, हेत हियै बहु धारी ।
'अमर' तणी आशा पूरीजै, सुनिजर निजर निहारी ।३। श्री.।

—०÷०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनकुशलसूरि-होरी

राग—पूरबी वसन्त

अैसे "कुशल" सुरिंद नीके रंग,
मंडप मझ होरी खेल मचाये। अैसे०।
ताल कंसाल मृदंग मनोहर,
वाजित्र चंग बजाए ॥ १ ॥ अैसे०।
मिल मिल सुश्रावक सुविवेकी,
गहिर वसंत गवाए ॥ २ ॥ अैसे०।
चंदन चोवा अवर अरगजा,
छिड़कत भक्ति सुभाए ॥ ३ ॥ अैसे०।
घटा मंडाणी जिम श्रावण घन,
अबीर गुलाल उडाए ॥ ४ ॥ अैसे०।
हस हस छंदै देत तरोड़ा,
आणंद अंग न माए ॥ ५ ॥ अैसे०।
मिल मिल टोरी खेलत होरी,
भवि गुरु भक्ति भराए ॥ ६ ॥ अैसे०।
'अमरसिंधुर' चित हित उछरंगे,
फाग वसन्त सुहाए ॥ ७ ॥ अैसे०।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिनकुशलसूरि-गीत

राग—वसन्त

कुशल सूरीसर ध्यावो रे, परमानंद पावो। कुशल०।
इल उदयो सुरतरु अवतारी, वारी जाऊँ वार हजारी रे। पर.१।
परचा साचा जग में पेखी, नमय सदा नर नारी रे। पर.२।
जल दातार विरुद जग चावौ, दिन २ चढ़ता दावो रे। पर.३।
भविजन मिलनै भावना भावौ, गहिर सुरै गुण गावो रे। पर.४।
'अमर' सेवक नै अपणो जाणी, सुख संपदा वधावो रे। पर.५।

—०:०—

जिनमहेन्द्रसूरि-गहूँली

देसी गरबानी

धन "सूरत" नगर सुचंग, राजै तिहां सिंघ सुरंग।
सुध समकित गुण जसु संग, गोरी मिल 'गोंहली' नित गावैं।
मणि मोतीय थाल वधावै। गोरा० ॥ १ ॥
वड वखती तखत विराजै, छति अधिकी ओपम छाजै।
भावठ भय दूरै भाजै। गोरी० ॥ २ ॥
"महेन्द्र" सूरि महाराजा, वाजै जस अवचल जस वाजा।
राजै "खरतर" गछ राजा। गोरी० ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मृग नयणी मिल मन रंगै, सभि सोलह शृङ्गार सुचंगै।
भोली मिल भाव अभंगै। गोरी० ॥ ४ ॥
अति चित हित अधिक आणंदैं, विनयै आयो गुरु वंदैं।
छिन में पातिक दल छंदैं। गोरी० ॥ ५ ॥
गोंहली कर मंगल गावै, निमुंछण करि भल भावैं।
वंदण करि वेग वधावैं। गोरी० ॥ ६ ॥
मुख मुलकै मधुरी वांणी, धर्मलाभ दीयै हित आंणी।
षट वरग सुगुरुगुण खांणी। गोरी० ॥ ७ ॥
कोडैं युग राज स कीजै, सहु सिंघ आपण जांणीजै।
आसीस 'अमर' एम दीजै। गोरी० ॥ ८ ॥

इती श्री पदम्।

जिनमहेन्द्रसूरि-गहूंली

(म्हांनुं घणुं रे पियारा हो जिनजी ए चाल मैं छै)

वड वखती साहिब, वहिला तखत पधारो। वहिला०।
ए अरज सुगुरु अवधारो हो। वड०।१।
सूर उदय थई वेला, शिक्षाय नें थईय अवेला हो। वड०।२।
श्रावक श्राविका आवै, भल सदगुरु वंदण भाव हो। वड०।३।
आसीस दायिक आवै, गंद्रफ मिलनें गुण गावैं हो। वड०।४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दरसण वहिलो दीजै, करुणाकर सुनिजर कीजै हो । वड०।५।
देशना वहिली दीजै, राजेसर सिंघ ज्युं रींझै हो । वड०।६।
मींठी श्री मुख वांणी, साकर नें द्राख समाणी हो । वड०।७।
"महिंद्रसूरि" महाराजा, वाजै जस अवचल वाजा हो । वड०।८।
'अमर' आसीस सदाई, वाधै नित रंग वधाई हो । वड०।९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भैरव-गीतानि

भैरव-मतवाला-गीत

राग—फाग

नित नमियै "भैरव" मतवाला, नित नमियै।
समकित अमृत पान के रसिये,
सोहै अरध चंद्र भाला। नित०॥ १॥
कालौ गोरौ महिमा धारी,
मरु "मंडोवर" गढ वाला। नित०॥ २॥
उदय करीजैं वीर तखत नौ,
"खरतरगच्छ" के रखवाला। नित०॥ ३॥
तेल सिन्दूर खोल तन सोहै,
कंठ धरै पुहप की माला। नित०॥ ४॥
सेवक जन पर करुणा कीजै,
पूरो वंछित ततकाला। नित०॥ ५॥
वर त्रिशूल डमरू कर शोभित,
तुम दुरजन के मद गाला। नित०॥ ६॥
कलियुग में अवतार धरचौ है,
तुम संकर का चर ताला। नित०॥ ७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

"गोवरधन" पर महिर निजर कर,
सुणियै एह अरज माला । नित० ॥ ८ ॥
मुझै सहाय करी दुख हरियै,
माता चामुन्ड के बाला । नित० ॥ ९ ॥

—०००००—

भैरव-गीत

राग—फाग

(दे गयौ गिरधारी गारी, ए चाल, राग-काफी में बसंत)

आयो री "भैरव" भूपाला,
ए तो पूजक जन प्रतिपाला री । भै.। आ.।
एतो मद छकिया मतवाला री,
भैरव भूपाला ।१। भै.। आ.।
शत्रु नीर सीर के शोषक,
काला महा कंकाला ।
भगत जनुं की भीर पधारत,
दायक सुर करसाला री ।२। भै.। आ.।
मौजी मणधारी मछराला,
चावा चामुंड बाला ।
डमरू डाक घूघर घमकाला,
चालै इम चर ताला री ।३। भै.। आ.।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राका पूनिम सम मुख राजैं,
अरधचंद्र सग भालो।
मस्तक मुकुट राजत फणिधर को,
एतो जागती जोत जटालो री।४। भै.। आ.।
उर विशाल वक्षस्थल अनुपम,
कंठ फबै फूल माला।
छवि अधिकी दूणी दुति छाजै,
एतो वरदायक विगताला री।५। भै.। आ.।
संघ सकल कुं सुख के दायक,
"खरतरगच्छ" के प्रतिपाला।
'अमरसिंधुर' वीनत अवधारौ,
अरियण कंद उदाला री।६। भै.। आ.।

—००००—

भैरव-होरी

राग—फाग

भैरव भूपाल रमै होरी, भैरवजी. भैरव भूपाल०।
खेतल भूपाल खेलै होरी, खेतलजी
खेतल भूपाल खेलै होरी।
वांवन वीरां मांहि विराजै,
चौसठ जोगणि की टोरी। भैरव०। १।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मस्तक वाकै मुगट विराजै,
कांनै कुंडल की जोरी । भैरव० । २ ।
पग पायजेभ घूघर कडि घमकै,
फिरती देत भमर फेरी । भैरव० । ३ ।
वीर मिले वाजित्र वजावै,
जोगणि फाग गावत गौरी । भैरव० । ४ ।
वीण वजावै नृत्य नचावै,
हस हसकै गाढत होरी । भैरव० । ५ ।
लाल गुलाल अबीर उडावत,
केसर कुंकम मझ घोरी । भैरव० । ६ ।
चौभुज धारी है अवतारी,
चितरो लेत सवन चोरी । भैरव० । ७ ।
वघरयालो मदमत वालो,
कापत संकट की कोरी । भैरव० । ८ ।
स्यांम भैरव है सुख को दायक,
सुप्रसन हुय दै सुत जोरी । भैरव० । ६ ।
आराध्यां ए ततखिण आवै,
धणी हमारो ध्रम धोरी । भैरव० । १० ।
"चिंतामणिजी" की चरण की सेवा,
रात दिवस करै कर जोरी । भैरव० । ११ ।
सेवक कुँ सुख संपत दायिक,
"अमर" आणंद दीयै सुख जोरी । भैरव० । १२ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पद-संग्रह

—०÷—

समकित-गीत

राग—फाग

सुध समकित सदगुरु दरसायो, सुध समकित० ।
मिथ्या तिमर हरन कै कारण,
ज्ञानामृत तिहां निपजायो । सुध० । १ ।
वचन सलाका कर अंजवायो,
हृदय नयण तब विकसायो । सुध० । २ ।
तीन तत्व की ललित त्रिभंगी,
प्रगट पणौ गुण परसायो । सुध० । ३ ।
देव सेव "चिंतामणि" चित धर,
सुगुरु साधु गुरु मन भायो । सुध० । ४ ।
दया मूल भ्रम कुं चित धरतां,
भव भय निकट नहीं आयो । सुध० । ५ ।
ज्ञान विवेक विनय चित धरतां,
तप जप ध्यान धरम आयो । सुध० । ६ ।
क्रम कोरी की दोरी तोरी,
केवल गुण तब भल पायो । सुध० । ७ ।
रमणी रसीया शिवपुर वसीयो,
अखय 'अमर' पद मन भायो । सुध० । ८ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

समकित-गीत

राग—कैरवो

पाया पाया पाया वे, सुगुण भवि समकित पाया वे। सुगुण नर.।
दोष अढार रहित नित दीपै,
देव निरंजन ध्याया वे। सुगुण०।१।
दश विधि साधु धर्म कै दीपक,
धन्य गुरु नाम धराया वे। सगुण०।२।
शील सन्नाह धरै जै साचो,
उपसम अनुभव लाया वे। सुगुण०।३।
ज्ञान विवेक विनय गुण राचे,
दया धर्म चित लाया वे। सुगुण०।४।
ऐसो समकित चित हित दायिक,
निस वासर मन भाया वे। सुगुण०।५।
सुध समकित सैजे जन राचे,
तेह "अमर" पद पाया वे। सुगुण०।६।

—००—

सत-दृढता-गीत

राग—अंगलै री, रागणी खम्भायती परज स्वरे

सत मत छोडि, सुगुण नर सुणरे। सत मत०।
सत राखण कुं नीर नींच घर, हरचंद राय भरे रे। सत०।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सतवादी भल भूप शिरोमणि, पांडव वन विचरै रे । सत०।२।
नल राजा दवदंती नारी, वर वन वास वरै रे । सत०।३।
सत सीता यौ जो मन धरियो, अनल सै नीर करै रे । सत०।४।
सत संसारे जग तस लहीजै, 'अमर' आणंद धरै रे । सत०।५।

—:०:—

शील-परस्त्रीसंग त्याग-गीत

राग—वसन्त

न कर नाह परनार तणौ संग,
कह्यौ हमारौ कर रे, हां नहीं रे ।१। न कर०।
निज कुल नें क्युं कलंक लगावै,
क्युँ भटकत घर घर रे, हां नहीं रे ।२। न कर०।
निस वासर में नींद न आवत,
पर घर में रहै डर रे, हां नहीं रे ।३। न कर०।
राज में दंडै लोक में भंडै,
अपजस नौ ए घर रे, हां नहीं रे ।४। न कर०।
धान पाणी नी होय न रुचता,
नीच कहावै नर रे, हां नहीं रे ।५। न कर०।
धन लुंटै चुंटै बल वीरज,
पग पग ताकै अरि रे, हां नहीं रे ।६। न कर०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शीलवंत हुय सिंह सरीखा,
कुण गंजै तसु नर रे, हां नहीं रे ।७। न कर०।
अँठौ भोजन किम आचरियै,
वमित वंछै कूकर रे, हां नहीं रे ।८। न कर०।
सुगुण सनाह निज सीख हियै धर,
'अमर' शील गुण धर रे, हां नहीं रे ।९। न कर०।

—००—

देराणी-जेठाणी-झगरा

देरांणी जेठांणी दोय बहु झगरी री।
डरपाई तौहि नांहिं डरी री,
देरांणी जेठांणी दोय अजब लरी री। १। दे०।
देराणी दिल की है झूठी,
मोहन मुँदरी तेन हरी री। २। दे०।

---

१. मोहनी राणी कुमता अने विवेक राजा नी राणी सुमता, एतले कुमता देराणी अने सुमता जेठाणी ए दोयां रै झगड़ौ लागौ एतले पर परणते कुमता ते कर्म सत्ता मूल गुण नै पाछी ठेलै छै द्रव्य क्रिया थी डरावै तौहि न डरै, एतले द्रव्य क्रिया करतां कुमत पाछी न पड़ै।

२. देराणी ते कुमत ते कर्म परिणती छै, ते झूठी विचारणा छै, ते भाव क्रिया मन प्रमोद करै एहवी भाव क्रिया उदे नहीं आवण देवै कपटी लीधी मुँ धड़ी।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जुलम कियो जेठाणी जाएयो,
नख सिख में तब रोष भरी री । ३ । दे० ।
नेउर उनकौ उन छिन लीनो,
सुरंग चूनरीया तिण फारी री । ४ । दे० ।
हार हिया कौ तिण हर लीनो,
देराणी तब रोस भरी री । ५ । दे० ।
पिउ पै जाय पुकारण लागी,
जेठ श्रवण सुणि चित्त धरी री । ६ । दे० ।
भोजाई सैं देवर लरीयौ,
ऐसी वाकूँ खबर परी री । ७ । दे० ।

---

३. एहवौ अन्याय जाणी सुमता जेठाणीयै वितर्क ते तरङ्ग भाव लहिरी मूल गुण विचारि नें ।

४. विनय मिथ्यात्व पगा नो गुण तद्रूपी नेउर खोस लीणों एतलै ४ मिथ्यात्व में झोलै छै । तिण देराणीयै जेठाणी नी आवरण रूप ओढणी फाड़ नांखी, तिवारै ।

५. देराणी कुमता रौ विनय मिथ्यात्व तेहनो विनयरूप मिथ्यात्व तेहनो कोमलता रूपी गुण हार ते ले लीधो । तिवारै कुमता देरांणी रोस भरांणी एतले कोमलता गई कठोर पणो आयो एतलै तीव्र घणौ मिथ्यात्व नै उदयै विशेषै कुमत मोहाशक्त थई ।

६. तिवारै विवेक राजाये आपणो येष्टता मूल गुण मन में धरी नें ।

७ सुमता सें मोह झगड़तौ जाण तेहनी खबर ज्ञान गुणे थी जाणि नें ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निज बंधव त्रिय निठुरा जाणी,
उन पर ममता कछु न धरो री । ८ । दे० ।
दोनां कुं देसवटो दीनों,
ऊभा न राख्या एक घरी री । ९ । दे० ।
अपनों राज अमरपुर कीनों,
लखमी लीला सुजस वरी री । १० । दे० ।
पिउ प्यारी बहु प्रीत बढाणी,
मुनिजन ताकी सोह करी री । ११ । दे० ।

—००—

निद्रा-त्याग-गीत

राग—फाग

नींदड़ली को संग नहीं कीजै, नींदड़ली, नींदड़ली को संग० ।
रंग मैं भंग करत है यारो,
छिटक छेह याकुं दीजै । नींदड़० । १ ।

८. मोह अनाद काल नों सगपण भाईपणा नो मित्राचार न गिण्यौ, तिण सैं स्नेह न गिण्यौ ते मोहनी कुमति स्त्री समेत देही थी मोह कुमता काढी देसवटो ते पर परत परही काढी १ घड़ी पिण न राख्या ।

९—१०. निज गुण चतुष्टयी धार नें अमर शिवनगरे वासौ । वस्यौ राज मुक्ति नगरे कीधौ । अनन्त ज्ञान लक्ष्मी तद्रूपी जस चेतन राय विवेक सहित सुमत स्त्री संघाते शिवनगर नौ राज करै ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान ध्यान की है या वैरण,
कबहु संग या को नहु कीजै । नींदड़० ।२।
पांच प्रमाद बडे है भाई,
वाको भी बेसास नहीं कीजै । नींदड़० ।३।
धम धन हरण करत प्रीतडली,
कपटी को क्या संग कीजै । नींदड़० ।४।
चोर मुसत है लोक हसत है,
नींदड़ली कहो किम कीजै । नींदड़० ।५।
नींद निवारो धर्म संभारो,
छिनमे करम अरी छीजै । नींदड़० ।६।
नव पद ध्यावो नव निधि पावो,
लायक लीला ज्युं लीजे । नींदड़० ।७।
"चिंतामणिजी" कै चरण कमल की,
'अमर' सेव मन सुध कीजै । नींदड़० ।८।

—००००—

अमल-नशा-गीत

अमली नैं अमल भलौ आयो ।
पटणी पूरब धर निपजायो, सो अपणौ नगरै आयो । अ.।१।
चटी देख कै कुंत करायो, साहूकारे लिवरायो । अ.।२।
चोखी देखी भाव करायो, आरोग्यां ततखिण आयो । अ.।३।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अमली अपणौ घर मझ लायो, गलणी चाढनें सोझायो। अ.।४।
केसर वरणौ जांण कसुंभो, सो खोभा भर भर पायो। अ.।५।
साकर देकै खार भंजायो, इतरै अमल तुरत आयो। अ.।६।
दूणो पोरस देह दिपायो, भोग जोग मैं सुख पायो। अ.।७।
'अमल' करै सिरदार सवायो, जय लखमी वर घर आयो। अ.।८।

—•—

भांग नशा-गीत

राग—फाग

भांगडली आज भली आई, भांगडली भां० ।
पाहडी भांग वखाणत पुरजन, सो पोठां भर भर आई। भां.। १ ।
भला पान वटदार विराजै, केसर वरणी कहवाई। भां.। २ ।
चोखी जाण चतुर घर लाई, स्यांणे नर मिल सांझाई। भां.। ३ ।
भलै ठाम लेनै भिजवाई, साफी घात कैं निचुवाई। भां.। ४ ।
घात कुंडी मैं घोट घुमाई, मांहै मिरचां ठेलाई। भां.। ५ ।
छयल मिलि नें तुरत छणाई, रंग सुरंग तिहां दिवराई। भां.। ६ ।
सौखी साई नांम न भाई, प्याला भर भर नें पाई। भां.। ७ ।
घडी दोय सै आई धाई, दिल खुस आंखें दरसाई। भां.। ८ ।
रंग तरंग लहर जब आई, मन मस्तानें भए भाई। भां.। ९ ।
बे परवाही मगन तन मन मैं, ऐसी भांग अजब आई। भां.।१०।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्यात्म-भंग

राग—वसन्त

भांगडली आज भली आई, भां० ।
विनय विवेक सो वसंत वणी है,
सरधा भूम है सुखदाई । भां० । १ ।
तप भेदादि बहुत है तरवर,
अनुभव फल फूलन छाई । भां० । २ ।
शुच संतोष नय जलपूरित है,
भविक जीव मिल मिल आई । भां० । ३ ।
करुणा रस की कुंडी कीनी,
भाव भांगडली मझ ठाई । भां० । ४ ।
ज्ञान घोटे से घात घुमाई,
मन दृढता मिरचां लाई । भां० । ५ ।
विविध भेद नय चीर छणाई,
प्रेम पियाले भर पाई । भां० । ६ ।
शुक्ल ध्यान की सुरखी आई,
मानुं जाण मफर खाई । भां० । ७ ।
समकित जिन मंदिर में बैठे,
मूल सुगुण प्रतमा ठाई । भां० । ८ ।
तन मन सै इकतारी लाई,
रंग तरंग गुण मणि गाई । भां० । ९ ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बेपरवाही भए मस्ताने,
ऐसी भांग अजब आई। भां० ।१०।
निहचै मंदिर बैठे निरखै,
"अमरसिंधुर" पदवी पाई। भां० ।११।

—००—

जीव-प्रबोध-प्रभाती

राग—परभाती

भोर भयो सुणि प्राणी हो, भविजन भोर०
मिथ्यामति निस दूर निवारी, दश दिश जोति भराणी हो।
भविजन भोर० ॥१॥
जाग जाग भ्रम माग लाग हिव, उपसम रस मन आणी।
पुन्य संयोगे नर भव पायो, गुरु मुख वाट पिछाणी हो।
भविजन भोर० ॥२॥
तीन तत्व मन सुध आरोधो, मोक्ष मारग निसांणी।
दान दया तप जप खप करतां, अजर 'अमर' हुय प्राणी हो।
भविजन भोर० ॥३॥

नींद-गीत

राग—परज

ऐसे सोए नींद मैं आणंद भरी री, ऐसे० आनंद भरी री।
मोहराय के महाराज मैं, ऐसै० आणंद० ।आंकणी।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चौगत चतुर ढोलीयै पोढे, प्रेम पथरणां लाया री।
अप मारग ओसीसा भाया, तब तन मन सुख पाया हांरी। ऐ.।आ.।१।
लोभ लहर कै जहर कह रहै, ता निद्रा भरमाया री।
कुमता नार लगी है केडै, वासै चित ललचाया हांरी। ऐ.।आ.।२।
काम क्रोध वाकै है संगी, मिथ्या मांन बढाया री।
रागद्वेष दो मीत मिलै है, जांणे मा का जाया हांरी। ऐ.। आ.।३।
चतुर न चेतै जोलुं मनमैं, तो लुं नींद हराया री।
'अमर' मूल आतम गुण जांणौ, चेतौ चेतन राया हांरी। ऐ.। आ.।४।

इति।

वैराग्य-पद

जगत मै को केहनौ नहीं जी, जीव विचारी नें जोय।
मात पिता सुत कामिनी जी, थिर काहूकै न होय। ज०।१।
साठ सहिस सुत सगरनां जी, सुलसानां सुत बत्तीस।
परते पहुंता सही जी, राम जंपै जगदीस। ज०।२।
जनक तजी जिन रचतै जी, परगत कीध प्रयांण।
दुरयोधन दुरगत गयो जी, मात पिता नव रह्यौ मांन। ज०।३।
पंचम करम प्रबंधता जी, मोचता ए मन धार।
धीरता ए मन धारज्यो जी, एह संसार असार। ज०।४।
धरम इक सार संसार में जी, सद्गत सुक्ख दातार।
धरम करो भवजल तरो जी, 'अमर' जग एह आधार। ज०।५।

इति पदम्।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एकत्व-पद

तुं नहि किसकौ को नहि तेरो, अवधू आप इकेला है।
चौगत केरी चहुट मची है, हटवाडै का मेला है। तुं०।१।
रामत नट नांगर ज्युं राजै, खिण इक केरा खेला है।
सांझ सराहि भरीसी दीसै, ग्रह सम खाली भेला है। तुं०।२।
किसका सुत पति सुन्दर नारी, किसका गुरुनें चेला है।
चेत चेत रे 'अमर' भमर तुं, आतम राम इकेला है। तुं०।३।

——×०×——

आतम-प्रबोध

राग—जंगलो

ऐसै कही जाय कैसैं, काया माया मेरी सही रे। ऐसै.। का.। १।
काया माया कारमी, पीपल जेहो पान।
चंचल जोबन आउखो, जेहो संध्या वान। ऐसै.। का.। २।
पर पुद्गल काया रची, जीव द्रव्य कै योग।
भावातम पुद्गल मिली, भोगवते हैं भोग। ऐसै.। का.। ३।
करता चेतन करम को, जाणत है सब कोई।
जो जैसी प्रापत करै, भुक्ता तौ सो होइ। ऐसै.। का.। ४।
करता कर्म वसै परै, निज गुण दृष्टि न जोय।
पर परणतसै परणमै, अनुभव अंधे होय। ऐसै.। का.। ५।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जडबुधी भए जीवडै, राचे रमणी रूप।
मद माते भए मांनवी, परत विषय कै कूप। ऐसै.। का.। ६।
पांच प्रधाने मिले जई, खलदल करम सै जाय।
तेवीसत संकर संग हुई, भ्रम धन लुंटै सोय। ऐसै.। का.। ७।
जोबनीयो जोरे चढै, राचै रमणी रंग।
वडपण आए वालहा, उड गए रंग पतंग। ऐसै.। का.। ८।
जोवन जाते सीस पर, वैस लागे वग्ग।
जोर जरा को जांण कै, उड गए काले कग्ग। ऐसै.। का.। ९।
जोबनीयो जातो रहै, निबले पंच रतन्न।
गत मति दंत गए गुणी, गय लोयण गय कन्न। ऐसै.। का.।१०।
सिथल अंग होवै सही, कह्यौ न मानै कोय।
धन धूती लै सुत सवे, कह्यौ न मांनै कोय। ऐसै.। का.।११।
पीछै पछतावै पडै, मैं हुवो मती हीन।
वहि तैवारै बापडा, भ्रम मैं न भयो लीन। ऐसै.। का.।१२।
ता तै चेता चतुर नर, करो कछु भ्रम काज।
'अमर' लहौ जिम आतमा, राचौ अवचल राज। ऐसै.। का.।१३।

—::००::—

जीव-प्रबोध-पद

राग—वसन्त

(भोरी है री मईया एतो, कपटी है बहुत कन्हैया. भोरी०, ए चाल)

अनुपम देश लही आरजकुल,
लह्यो श्रावक कुल सुखकर रे।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुणि सीख रे भईया,
हां रे मैं तो लेत हुँ तेरी बलईया । सुणि०॥१॥
सुगुरु तणो संयोग लह्यो है,
तो तूँ सूत्रारथ कुं सुणि रे । सुणि०॥२॥
तीन तत्त्व धरियै चित हित धर,
एतौ सुध समकित नो घर रे । सुणि०॥३॥
चौकड़ी च्यार कषाय विडारी,
एतो राग द्वेष परिहर रे । सुणि०॥४॥
सुमता सागर मझ झीली ने,
तूं तो पातिक मल परिहर रे । सुणि०॥५॥
करम आठ अरि दूर करी ने,
तूं तो ज्ञानादिक गुण वर रे । सुणि०॥६॥
एहवो समकित भल आराधी,
"अमर" संपद आदर रे । सुणि०॥७॥

—०:::०—

जीव-प्रबोध-गीत

राग—सांमेरी

रे जीव कोधी जेह कमाई, किधी. रे जीव भोगवीयै तौ भाई । रे०।
तुं सुख संपति केरै कारण, कोड करै चतुराई ।
पूरव पाप प्रसंगे प्राणी, मिलै कहो किम आई । रे जीव०।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाहे पेड आक के अंगण, अंब मिलै किम आई।
किधी जीवै जेह कमाई, धुरते मिलसी धाई। रे जीव०।२।
लिखीया लेख टरै नहि टारे, मन न रहौ मुरझाई।
'अमर' एक धीरज मन धरतां, बांधै रंग वधाई। रे जीव०।३।

—:०:—

चिन्ता-निवारण-गीत

राग—सांमेरी

रे जीव चिंता चित नव धरीयै, लहिणो हुयसो लहियै। रे जीव.।
तुं झुरझुर कैं नीर क्युँ नांखत, अपनो एह न कहीयै।
अपनों हो तौ क्युं उठ जातो, साचौ ए सरदहीयै। रे जीव.।१
लहिणायत ज्युं लेखैं कारण, पर घर वार पठईयै।
लेखैं कीधैं वार न लावै, फिर घर पीछो पुलईयै। रे जीव.।२
ताहरौ नहीं, नहीं तुं इनकौ, मोह न किनसैं करीयै।
'अमर' एक अवचल धम तेरो, याकुँ नित चित धरीयै। रे जीव.।३

—:०:—

मन-प्रबोध-गीत

राग—अलहीयो बेलावल

भजय न क्यौं भगवान,
मनारे तुं भजय न क्यौं भगवान।
उत्तम कुल लहि कै श्रावक को,
भयो सब जुगत को जांण। मनारे०। भ०।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काम क्रोध अब करे है कुसंगी,
किहां गयो तेरो विज्ञान।
लालच सैं बहु चित ललचायो,
भ्रम धन की कर हांन। मनारे०। म०।२।
अब ही चेत आतम गुण आदर,
सदगुरु की सुखि वांणि।
मन वच काया कर एकांते,
धरम सुकल धर ध्यांन। मनारे०। म०।३।
सब संसार स्वारथीयो दीसै,
परसिध तुं पहिचान।
'अमर' एक है धर्म सखाई,
परमानंद निधांन। मनारे०। म०।४।

—००—

प्रेरणा-गीत

राग—परभाती

भज रे जीव निरंजन भोला,
क्या उपजावत अवर किलोला। भजरे०।
शिववासी अविचल अविनासी,
ज्ञानानंदी सुगुण अमोला।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहिजानंद सरूपी साहिब,
आनंदघन वाको कुण करैं तोला। भजरे०।१।
निराकार निकलंक निरंजन,
निरलेपी नवि बोलत बोला।
नहिं इन्द्री नहि वेद है वाकैं,
नहि राग नहि द्वेष सतोला। भजरे०।२।
शिव मंदिर में सुख सेजडली,
शिव सुन्दर से प्रीत अतोला।
भुगता भोग को 'अमर' समर भल,
तुं पिण सुख पामीस तिण तोला। भजरे०।३।

—०:०:०—

अनुभव-पद्

राग—सारंग

आतम अनुभव रस पीजीयै, अनुभव अमृत रस पीजियै।
काम क्रोध मद माया मोडी, गुरु मुख ज्ञान लहीजीयै। आ.।१।
परगुणसुं कहुँ प्रीत न करीयै, निज गुण ज्ञान गहीजीयै। आ.।२।
जे जिन आठ अरीगण जीता, ताको ध्यान धरीजीयै। आ.।३।
तन मन वचन करी इकतानें, उपसम अंग धरीजीयै। आ.।४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आठ करम ए छै अतुली बल, पिशुन वसै न परीजीयै। आ.।५।
'अमरसिंधुर' अनुभव अभ्यासैं, सिवपुर नां सुख लीजीयै। आ.।६।

—०:※:०—

आत्म-शिक्षा-सिझाय

(सुणि गोवालणी गोरसडा वाली तुं अलगी रहिनें, ए देसी)

सुणि साजनजी करम लग्या छै केड कुमति मति आपै।
सुध समकित जी सुमति त्रियानो संग मिली तौ कापै॥ आं.।
ए आदी अनादी तणां वैरी, जे जीव भणी कोधौ जेरी,
जे भटकावै छै भव फेरी। सुणि०।१।
ध्रम कारज करतां धमकावै, ए सुभमति गति सैं अटकावै,
ए लालच लोभ दिसा लावै। सुणि०।२।
ए काम क्रोध नें उपजावै, ए माया ममता मन लावै,
ए मद मच्छर मैं नहि मावै। सुणि०।३।
अविरत एहनें छै पटरांणी, ते मोहराय नें मन मांनी,
जे नरक तणी छै नींसाणी। सुणि०।४।
पर परणितसै जे जीयराता, ते केम लहे स्यै सुख साता,
दुरगत दोहग नां छै दाता। सुणि०।५।
सदगुरु शीखडली मन धरीयै, सुध समकित करणी नित करीयै,
भल सुजस सोभाग तदा वरीयै। सुणि०।६।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तप जप संयम कुं जे राता, ते सदा लहेसी सुख साता।
गुणी जन तेहनां गुण गाता। सुणि०। ७।
तातै क्रम अरि दूरै कीजै, पातिक नों पडदौ जिम छीजै,
अनुभव अमृत रस तिण पीजै। सुणि०। ८।
शुध श्रावक धम नें धारीजैं, विषया रस दूरै वारीजै,
मानव भव सफलो इम कीजै। सुणि०। ९।
साची धम शीख हीयडै धरीयै, वर अखय महाशिव सुख वरीयै,
ए 'अमर' वाणि गुण मणि गहियै। सुणि०। १०।

इति आत्म-शिक्षा-शिक्षाय।

—:०:—

चेतन-सुमति-गीत

राग—सोरठी वसन्त

नाह मेरो अब निठुर भयो है।
कहो सखी कैसै कीजै एरी सखी॥ कहो सखी०।
मो तजकै अब और भजत है, कपटी कुटल कहीजै,
एरी सखी कपटी०। नाह०। कहो०॥१॥
कुलवट मारग कहि समझायो, छिन भर तोहि न छीजै,
एरी सखी छिन०।
निगुण नाह हठ शठ वादी, राग नहीं किम रीझै,
एरी सखी राग०। नाह०। कहो०॥२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हित नी बात कहुँ हित जांणी, तौ खिण खिण मैं खीजै,
एरी सखी तौ० ।

पर घर अपणौ जांणि रहित है, निरबुध ते पभणीजै,
एरी सखी निरबुध० । नाह० । कहो०॥३॥

मदमातो मोहन है मेरो, निज पर सुध न लहीजै,
एरी सखी निज० ।

निज नारी की सोध न जांणै, बालम विकल भणीजै,
एरी सखी बालम० । नाह० । कहो०॥४॥

कुलटा कैं यो केड लग्यो है, मेरो कह्यो न मनीजै,
एरी सखी मेरो० ।

'अमर' सोभाग बधै घर आयां, चेतन चित्त धरीजै,
एरी सखी चेतन० । नाह० । कहो०॥५॥

—०:०:०—

चेतन-सुमति-गीत

राग—सोरठी वसन्त

मेरो पिया मेरो कह्यो री न मानत,
पैस रमै पर घर मैं, एरी सखी पैस रमै० । मेरो० ।

पूरवली पिण प्रीत न जांणी,
कुटल मती भयो करमै । एरी सखी. कु.। मे.।१।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वा कुलटा है नीत अनीती,
धन धूती लियै छिन मैं । एरी सखी. ध.। मे.।
जनम फकीर भयो जब जाणैं,
छेह देत इक छिन मैं । एरी सखी. छे.। मे.।२।
या कुमता मेरे केड लगी है,
भरमायो तिण भरमैं । एरी सखी. भ.। मे.।
प्रसिध विवेक मंत्री पाठवायकै,
घेर अणावुं घर मैं । एरी सखी. घे.। मे.।३।
सुमति सोहागण नांमतो साचो,
खिजमत कर खिन खिन मैं । एरी सखी. खि.।मे.।
अवचल वास वसै पिउ अनुपम,
"अमर" प्रीत शिव घर मैं । एरी सखी. अ.। मे.।४।

—०×०—

चेतन-सुमति-गीत

राग—रामकली पुनः अडाणो

आज आणंद भयो सुण सजनी री, आज०
रजनी सफल विहाणी री ।
प्राण जीवन निज गेह पधारे, हरष हीये बहु आणी री । आ.।१।
सरधा सुंदर मिंदर मांही, सुमता सेज विछाई री ।
राचडली मातडली करतां, सारी सफल विहांणी री । आ.।२।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्या गणिकायै भरमायो, माल सबै मुसखायो री।
जनम फकीर भए जब जैसे, तब अपनें घर आयो री। आ.।३।
सुमति सोहामणि सैं मन लायो, प्रांण प्रीयै सुख पायो री।
अवचल प्रीत बधी अति अनुपम, अजर 'अमर' पद पायो री। आ.४।

चेतन-सुमति-गीत

राग—जंगलौ

नेहरो लगायो सहीयां, मेरो कह्यो मांनें नही रे। नेहरो०।
निगुणो भरमायो सहीयां, मेरो कह्यो मांने नहीं रे।
बहुरंगी मेरो बाल हो, महानली महाराय।
मदमातो रातो फिरै, राख्यौ ही न रहाय। ने.। मेरो.।१।
पहिली मो परणी हती, प्रीत रीत भल जोय।
रंग रमता इक सेज मैं, कपट न हुँतो कोय। ने.। मेरो.।२।
कुलटा जब कांने लगी, भरमायो तिण भूप।
निजघर तज भज गयो तासुघर, पड्यो रूडो देखे रूप। ने.। मे.।३।
वसीयो बालम तासु घर, पलक न छोडै संग।
कुमति नार केडै पडी, रातौ रंग पतंग। ने.। मेरो.।४।
रंग रसीयो वसीयो तिहाँ, सुगुणी नी तज सेज।
प्रीतम प्यारी तज गयो, निगुणौ नाह निहेज। ने.। मेरो.।५।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माल मुस्यो तिण माननी, निधन भयो जब नाह ।
जनमै जैसे जब भए, लह्यो नहीं कछु लाह । ने.। मेरो.।६।
निज घर आए नाह तब, मुझ सै कर मन मेल ।
प्रीत रीत वाधी प्रसिध, खूब मचायो खेल । ने.। मेरो.।७।
प्रिय प्यारी हिल मिल वसै, मुगत महिल में जाय ।
सुमत त्रिया चेतन सदा,'अमर' आनंद मनाय । ने.। मेरो.।८।
मेरो कह्यो मान्यो सहीरे.

—०÷०—

चेतन-सुमति-गीत

राग—वसन्त

आज आणंद भयो सखी मेरै तो, अधिक लह्यो आणंदा ।
मन मोहन मेरे अब घर आए, उलसे मन मकरंदा । आज.।१।
सुविवेक मंत्रीसर वाकै संगी, सोभी साथ कहंदा । आज.।२।
आज अम्हारै अंगना ऊगो तो, सुखकर सुरतरु कंदा । आज.।३।
मोतीयडे मेहडलो बूठौ तो, हरष हीयौ हुलसंदा । आज.।४।
पर घरणी साम्हो नवि पेखै तो, कुमत कपित दुखदंदा । आज.।५।
नाह हमारो निज घर आयो तो, हिल मिल केल करंदा । आज.।६।
परमानंद लहै पिउ प्यारो, विरहन कै गए धृन्दा । आज.।७।
चेतनराय नैं सुमति सोहागणि, 'अमर' लहै आनंदा । आज.।८।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीव-प्रबोध-गीत

पद

राग—धन्याश्री, अड़ाणो वसन्त

सुमति भज हो कुमति तज हो,
अरे जिय पाप करत खिन न न न न न न न हो। सु. कु. ।१।
इण संसार में अवतरि भविजन,
धरम करत सोइ धन न न न न न न न हो। सु. कु. ।२।
पाप संताप दुरित दव समिवा,
उलटी घटा घन न न न न न न न हो। सु. कु. ।३।
धरम पखै धंधै नित धावत,
भमर भमत भण न न न न न न न हो। सु. कु. ।४।
मिथ्यातम अघ दूर हरेवा,
उदयो तेज सुतरण न न न न न न न हो। सु. कु. ।५।
पंच प्रमाद तजौ भवि प्राणी,
धम उद्यम करो धन न न न न न न न हो। सु. कु. ।६।
"अमर" महा अविचल सुखदायक,
धरम करो जी तुम्हें भविजन न न न न न न न हो। सु. कु. ।७।

—:o:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीव-सीखामण-गीत

घर आवौ जी सुगुणा री सजनां ।
सुगुणां री सजनां न थइयै निगुणां । घर० । आंकणी ।

आवौ मेरे सजनां बैसो घर अंगनां,
कहै सो बात सुणो री अरधंगना । घर० ।१।

निज घर भजनां, पर घर तजना,
कथन हमारो कंतजी करणा । घर० ।२।

सुगत कुठारी, निपट निठारी,
प्रीत रीत यासै परहरणां । घर० ।३।

कुमत कुमारी की गत है री न्यारी,
यासै नेह न कबहु न करणा । घर० ।४।

ए नहीं परणी सुगत करणी,
चतुर न करत याकी आचरणा । घर० ।५।

ध्रम धन लूँटै बीरज बल चूंटै,
ऐसा री काम काहे कुं री करणा । घर० ।६।

सुमत सुनारी पिउ कुं प्यारी,
'अमर' प्रीत नीत याही सै करणां । घर० ।७।

—००—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीव-सिखावण-गीत

पद

राग—काफी

या अलबेली को रूप अनोपम,
तिणसैं सुरता लगी तेरी,
लगी तोरी रे नेह दोरी। या०।१। आं०।

प्राणनाथ प्रीतम मन मोहन,
मान लेहु सीखन मेरी। या०। २।

एन कुनारी बहु पति कीने,
लीधो धरम धन कुं हेरी। या०। ३।

मुख नी मीठी चितनो झूठी,
छल मै लेत हात छेरी। या०। ४।

याकौ कह्यो करिस जो प्रीतम,
नरक निसाणी सुगत वेरी। या०। ५।

कुमति कुनार को संग न करियै,
फंद परत नहि भव फेरी। या०। ६।

चेतनराय सुमत वच सुणिकर,
"अमर" प्रीत अवचल तेरी। या०। ७।

—:०:—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुमति-कुमति-गीत

राग—खम्भायती

मेरी राय चेतन नै सुध न लई,
विरहानल ताप सै दूबरी भई। मे०। १।
मिथ्या मंदर गणिका सुंदर,
कुमति कुनारी एक ठई। मे०। २।
तो कुं कुलटा कांन लगंतां,
तिण भुरकी सिर डार दई। मे०। ३।
परणी थी मुझ अधिकै प्रेमै,
ते तो प्रीत विसार दई। मे०। ४।
उनकुं अपने मिंदर राखी,
नवली सै भई प्रीत नई। मे०। ५।
लहुड़ी लाडी बहु भरमायक,
धन धम ताको खोस लई। मे०। ६।
निरधन हुयके निज घर आयो,
सिध बुध सारी भूल गई। मे०। ७।
कुमति कुनारी दूर गई तब,
सुमता सै फिर मेल भई। मे०। ८।
रस रंगे पिउ प्यारी रमतां,
विरह विथा सब दूर गई। मे०। ९।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मेरी राय चेतन ने शुद्ध लई,
तब विरह विथा सब दूर गई।
सुख संपत की रास बढाई,
अजर "अमर" पद वेग लई। मे० ।१०।

—००—

अनुभव वर्षा

राग--मल्हार

अनुभव वरषा आई सुचेतन. अनु० ।
विवेक बदरिया बहु बन आई,
सुरत घटा घन छाई। सखी. अनु. ।१।
सुभ भावन सो वाय सुहावत,
ज्ञान झरी झर लाई।
कुमति कुगत कुं दूर करी तब,
सुमति सुगति मन भाई। सुचे. अनु. ।२।
निहचै नयसो वनीय बीजरीया,
विवहार गरज गजाई।
सुमता रस जल सै भवि झीलत,
तनकी तपत बुझाई। सुचे. अनु. ।३।
ऐसी अनुभव वर्षा आवत,
तौ लहै सुजस सवाई।
सासय राज लहै शिवपुर को,
"अमर" आणंद वधाई। सुचे. अनु. ।४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चेतन-वसंत

राग--वसन्त

फागुण फाग सुहाए सखी मेरी, अलवेसर घर आए । फा.।
कुमति कुनारी केड लगी ताको, घर तज भज इहां धाए । फा.।१।
वैरण सौक विरह तन व्यापत, सो मेरे मन भाए । फा.।
चेतनराय चतुर अति चंचल, निज गुण सुध दरसाए । फा.।२।
सह चारण जांणि संतोषै, प्रीत रीत परसाए । फा.।
हित वंछक भ्रम धनकी संचक, लायक नेह लगाए । फा.।३।
अब मैं भई हूं परमानंदित, हरष हियै हुलसाए । फा.।
'अमर' आनंद लहै पिउ प्यारी, परम महा सुखपाए । फा.।४।

—❀—

अनुभव-होरी

राग---फाग

अनुभव रस, अनुभव रस अजब मची होरी । अनु.।
विनय विवेक सु वसंत वनी है, फाग राग गावत गोरी । अनु.।१।
ज्ञान ध्यान वनराज वण्यो है, मन मांजर आंवै मोरी । अनु.।२।
नय सातन की नदी वहत है, भविक भ्रमर आवत दोरी । अनु.।३।
चेतनराय चतुर अति चंगे, विरह विथा कुं नित तोरी । अनु.।४।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुमति सोहागण संग रमत है, ज्ञान गुलाल भरी झोरी। अनु.।५।
सुच संतोष भल केसर घोरी, जुगत मिली है या जोरी। अनु.।६।
प्रेम पिचरका उपसम जल भर, धार चलावत भ्रम धोरी। अनु.।७।
फाग मनायो अति सुख पायो, कप गई कर्म तणी कोरी। अनु.।८।
निज सुभाव रत रामत रमतां, पर परिणित दोरी तोरी। अनु.।९।
प्रीत रीत बाधी अनुपम, 'अमर' आनंद रमत होरी। अनु.१०।

—·|·—

सुमति-होरी

(राग—जंगलै री ठुमरी में होरी)

म्हांरे हरष सै आई होरी री, म्हांरे हरष० ।
सुमति सोहागण निज घर आई, जुगत भई अब जोरी री। म्हांरै.१।
पिउ चित हित की प्रीत पिछानी, कुमता कु करी कोरी री। म्हांरै.२।
दिल सुध समकित गुण दरसायो, गुणवंती या गोरी री। म्हांरै.३।
निस वासर रस रंगै रमतां, 'विरह' विथा कुं तोरी री। म्हांरै.४।
काम क्रोध याकै कछु नाहीं, भांमणि ऐसी भोरी री। म्हांरै.५।
पिउ प्यारी की जोरी है जुगति, हरष 'अमर' रमै होरी री। म्हांरै.६।

—०७—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होरी

(भलै री पेच मोपै डारयो री रसको, तेरी चितवन में करे जोरी कसको,
ए चाल मै छै, राग—वसंत अडाणो)

भल आई होरी रस रंग भरी री,
खेलत अनुभव हरष धरी री।
भल आई० खेलत० आंकणी॥

अविरति आद मिथ्यात न मोहै,
भूल अनादनीं जेह परी री। भल० खेलत०।१।

निज आतम गुण कुं निपजावै,
कोह लोह कूं दूर करी री। भल० खेलत०।२।

सुमति सोहागणि सै मन लायो,
सहिजानंदित सुविध वरी री। भल० खेलत०।३।

अनुभव ताकै घरमै आये,
अवचल लखमी सहज वरी री। भल० खेलत०।४।

केवल वरीयो सिव सुख दरीयो,
कोडि सूरज दुति मंदकरी री। भल० खेलत०।५।

आनंदघन अवचल पद पाए,
"अमरसिंधुर" ए होरी भली री। भल० खेलत०।६।

—०:::०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होरी

(पुनः राग अड़ाणौ मैं वसंत)

भल आई होरी, भल आई होरी ।
सुगुणि प्रिया सैं लगी रंग डोरी, भल० सुगुणि० ।
या चाहत मेरो हेत हीया को,
मैं चितरो लीधो चोरी री । भल०।१। सु०।
भलो री चाहत मेरै घर को भोरी,
मोकुं ललचायो बहु लहुरी । भल०।२। सु०।
माल हमारो सब मुसखायो,
कुमत नार की लहि खोरी री । भल०।३। सु०।
पछताय कै घर पीछे आए,
जुगति जांणीए जोरी री । भल०।४। सु०।
अब इनसैं इकलास भयो है,
काटैगे दोहग दुख की कोरी री । भल०।५। सु०।
प्रिउ प्यारी रस रंग रमतां,
'अमर' अनोपम भल होरी री । भल०।६। सु०।

इति श्री·····१८८८ सं० । १८८८ रा मिती फागुण सुदि १५ भृगुवारे।

—::००::—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चेतन-सुमति-होरी

राग—वसन्त जंगलो

ए तो हरख सै आई होरी रे, एतो हरख सै आई होरी।
सुमत सोहागण सैं रस रमतां, विरह विथा कुं तोरी रे। ए.।१।
अपने वालम से अंतर नांहीं, यह भामन है भोरी रे। ए.।२।
कुमति कुनार कौ संग निवारी, एतो धरमण थापी धोरी रे। ए.।३।
ए हरखाखी मोहित चाहै, इण सम नार न ओरी रे। ए.।४।
इतना दिन में या घरणी विन, दुख दीठा लख कोरी री। ए.।५।
अब तो भई रे आनंद वधाई, एतो 'अमर' संपद सुख पाई री। ए.६।

—◎—

सुमति-होरी

सुमत सोहागण राय चेतन भल,
ऐसे रमत होरी में एरी सखि। ऐ.।
श्रद्धा भूम सुसमकित बन है,
सफल फलत है छिन में। ए. स. स.।१। सु. ऐ.।
आगम नय सो नदियां अनुपम,
सलिल संतोष है जिन में। ए. स. स.।२। सु. ऐ.।
गुण गण टोरी भोरी मिली है,
सो रमती सुच जल में। ए. स. सो.।३। सु. ऐ.।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान गुलाल ने प्रेम पिचरका,
सो डारत छिन छिन में । ए. स. सो. ।४। सु. ऐ. ।
वाणी अनहद वाज वजत है,
हास हसत आंपन में । ए. स. हा. ।५। सु. ऐ. ।
गिरवाई सो गोठ जिमत है,
चतुरोई चौपर में । ए. स. च. ।६। सु. ऐ. ।
प्रीत रीत सो प्याले पीवत,
मन भए मस्ताई में । ए. स. म. ।७। सु. ऐ. ।
'अमरसिंधुर' ऐसे खेल मचत है,
अपणै अनुभव रस में । ए. स. अ. ।८। सु. ऐ. ।

—:०::०:—

वसंत-होरी

राग— वसन्त

वसंत सुवरषा आई, सखी मेरी वसंत० ।

निज घर से नर त्रिय वन आए, सो बादरीय बनाई ।
पिउ प्यारी हिल मिल के खेलत, सो सुभ बादल आई ।१। व०।
लाल गुलाल अबीर उडावत, सो रज नभ वन छाई ।
केसर की पिचकारी चलत है, सो वरषा झरीय लगाई ।२। व०।
डफ चंग वजत सु गाज गत है, रंग सु धनुष सुहाई ।
चंचल नयन सो दामनि चमकै, सुरत घटा घन छाई ।३। व०।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चोवा चंदन कीच मच्यौ है, तिसलन सुरत डिगाई।
बसंत में वरषा ऐसो बनी है, 'अमर' महा सुखदाई।४। व०।

—:०:—

चेतन-सुमति-होरी*

राग—वसन्त

नणद तुहारो नवल सनेही,
आज राज घर आयौ।
अम्ह प्रीतम सु सनेह धरी बहु,
वाणी मधुर बोलायो. वा० ॥१॥ न० ॥
संवर वाड़ी अतिह सुरंगी,
ताही मझ बैंसायौ. वारी ताही०।
मैं भी प्राण प्रिया संग रंगै,
ज्ञान गुलाल मंगायो. वारी ज्ञा० ॥२॥ न० ॥
भर भर झोरी होरी कै मिस,
अबीर कै बीच मिलायो. वा० अ०।
करुणा केसर अतिह अनोपम,
रंग सुरंग करायो. वारी रं० ॥३॥ न० ॥

*सुमता स्त्री चेतन राजानी कहै छै शुद्ध सम्यक्त नी ऊपनी श्रद्धा तद्रूपी नणद नै कहै छै तुम्हारा भर्त्तार अम्हारै घरे विवेक परधान अम्हारै भर्त्तार चेतन महाराज तिणा से आवा नै मिल्यौ छै।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेम पिचरका भाव सु जल भर,
ताकूँ खूब रमायो. वारी ता० ।
विनय विवेक दो साजन मिलनै,
राग फाग भल गायो. वारी रा० ॥४॥ न० ॥
राग द्वेष रज दूर उडांय कै,
समकित रव उजरायो. वा० स० ।
मैं भी पिया के संग रमतां,
'अमर' सोभाग वधायो. वा० अ० ॥५॥ न० ॥

—:०:—

सुमति-होरी

राग—कहरवै में वसन्त

महाराज मेरे संग भए हैं,
हित से रमेंगे होरी में । एरी सखि हि० ।
प्राणनाथ भल गेह पधारे,
मैं हरखित भई मन में । एरी सखि ह० ।१। म० ।
कुलटा याकै कान लगी थी,
कुमत देत छिन छिन में । एरी सखि कु० ।२। म० ।
धरम को धन तिण सब मुसखायो,
तब चेतन थयो तन में । एरी सखि त० ।३। म० ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूलगी प्यारी तब मन भाई,
घेर दे आयो घर में। एरी सखि घे० ।४। म०।
आदर देत बाग में आयो,
तब हरखित भई (तब) मन में। एरी सखि त० ।५। म०।
ज्ञान गुलाल क्षमा जल लायो,
छिरकत है छिन छिन में। एरी सखि छि०।६। म०।
प्रेम पियालो मैं भर पायो,
मस्त भए तब मन में। एरी सखि म० ।७। म०।
मगन भए यह मोक्ष नगर में,
"अमर" सुमत धर मन में। एरी सखि अ० ।८। म०।

—००००—

चेतन-सुमति-होरी

राग—बसन्त

सुनो री सखि ऐसे रमो होरी,
आठ करम की तोरियै कोरी। सु०।
राग द्वेष दोय दूर विडारी,
काम क्रोध ममता कुं मारी। सु०। १।
साधु संगत करियै सुखकारी,
सुच संतोष हियै में धारी। सु०। २।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तप जप संयम गुण उजवारी,
शील धरम नव वाड़ संभारी। सु०। ३।
केवल कमला लहि हितकारी,
चौ घन घाती दूर निवारी। सु०। ४।
मूलातम गुण तेम विचारी,
शिव रमणी परणी सुखकारी। सु०। ५।
सुमत प्रिया से प्रीत वधारी,
चेतनराय "अमर" पद धारी। सु०। ६।

—०'०'०—

अनुभव-होरी

राग- तोड़ी मारू वसन्त

हरष सुं अनुभव होरी आई,
सुविवेकी जनम रमत सदाई। हरष सुं०।
सुच संतोष सु सीतल जल है,
ज्ञान गुलाल सो गहिर बनाई।
प्रेम पिचरका छूटत छिन छिन,
भर भर मुट्ठीयां अबीर उडाई। हरष सुं०।१।
सात नयन की सतार भली है,
विविध नयन वाजिंत्र वजाई।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चंग मता सोइ चंग वण्यो है,
फाग राग सो गुण मणि गाई । हरष सुं०।२।
अैसे फाग वसंत अनोपम,
अनुभवतां सो अंग अनाई ।
"अमरसिंधुर" अपणो अलवेसर,
रमसी सो दिन रंग वधाई । हरष सुं०।३।

संवत् १८८८ वर्षे मिती फागुण सुदि ६ रवौ श्री मंबुई बिंदरे एकादशी चतुर्मासी कृता लिखतं वाचक अमरसिंधुर गणि पं० रूपचन्द्र पं । अणदा वाचनार्थं श्री बृहत्खर(तर) भट्टारक गच्छे श्री जिनकुशलसूरिशाखायां ।

—०:❀:०—

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पटवा संघ-तीर्थमाला स्तवन

(सं० १८६०)

स्वस्ति श्री सुखदायक लायक ऋषभ जिणंद ।
शेत्रुंज गिरि मंडण दुख खंडण सुरतरु कंद ॥
सकल करम खल कुंजर हरणे सिंह समान ।
सुगुरु मुखैं इम सांभल उल्हसो बुद्ध विनांन ॥ १ ॥

बाफणा गोत्र वदीतो "बहादरमल्ल" सुसेठ ।
लखमीधर लख ग्यांने अवर सहू तसु हेठ ॥
संघ शेत्रुंजा नो कीजै लीजै लखमी लाह ।
सकल सजाई इम चिंतसि मेली (कीधी) वाह वाह ॥ २ ॥

लघु बंधव च्यारे तेजवै ततखिण तांम ।
शेत्रुंज गिरनो संघ करावो अति अभिरांम ॥
वड बंधव नो वचन सुणी नें कीध प्रमांण ।
सफल जनम जांणी नें चित हित अधिको आंण ॥ ३ ॥

कंकोत्तरी कागद लिख मेल्या देस विदेश ।
"पालीपुर" संघ आव्यो वाध्यो हरष विशेष ॥
सरव जिनालय पूज करावैं भल सुभ भाव ।
दांन सुपात्रै दैता दिन दिन चढतै दाव ॥ ४ ॥

संघ तिलक कीधो "श्रीमहेंदसूरि" मुणिंद ।
सुरगण मझ सोहै अधिपति जिम सोहम इंद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

'जेसलमेर' 'उदयपुर' 'जालोर' 'जयपुर' जाण ।
'लखणेऊ' ना लायक श्रावक गुणमणि खांण ॥ ५ ॥

'अजमेरी' 'कोटाई' 'जोधपुर' धम कांम ।
जात्र करेवा आव्या करता प्रभु गुण गांम ॥
'मारवाडी' 'मेवाडी' 'गोढवाडी' पिण तांम ।
'गुजराती' 'नागोरी' 'अलकापुरी' मन नी हांम ॥ ६ ॥

'वड खरतरगछ' नायक "माहिंदसूरि" सूरिंद ।
"भावहर्ष" गछ खरतर, "पदमसूरि" आणंद ॥
'वड आचारिज' खरतर, "कीर्तिसूरि" पहिचांन ।
'पंजाबी पूज लौका' पूज "रामचंद" तिम जांन ॥ ७ ॥

'दिग अंबर' धारिक श्री "अनंतकीर्ति" पहिचांन ।
साधु सातसै सिंघ मांहे सोहै सुप्रमांण ॥
सिंघ संख्या इहां सोहै पनर सहस परिमांण ।
भोजन भगत करी अति जुगतै बहुविध आंण ॥ ८ ॥

सुभ वेला शुभ महूरत सिंघै कीध प्रमांण ।
चढत नगारा ठोर दीयैत चलंत नीसांण ॥
सूरा सावधांन हुय चालै चंचल चंग ।
गोरंगी मिल गायै, सिंघवी विरुद सुचंग ॥ ९ ॥

दैता दांन प्रमांण करी आव्या 'वरकांण' ।
हरष सवायै तंबू ऊँचा कीधा तांण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धन धन धूँनो जूनो तीरथ भेट्यो धांम ।
पूजा सतर प्रकारी करतां श्रावक भावैं तांम ॥१०॥

श्री "वरकांणापास" जुहार्या जगपति जांम ।
प्रथम तीरथ भेटंतां पाप पुलाया ताम ॥
"नाडोलै" जगनायक पदमप्रभु परसिद्ध ।
विविध प्रकारै पूज करी भई समकित वृद्ध ॥११॥

'नडुलाई' जिन नमीयै गमीयै राग नें रोस ।
सूधै मन सेवंतां समकित नो कर्यो पोस ॥
शांतीसर प्रभु पूज्या 'सादडी' नगर सुचंग ।
"राणपुरै" रिसहेसर पूज्यां भव भय भंग ॥१२॥

घण थाटै वहिवाटै आव्या 'घाणैराव' ।
श्री महावीर मुंछालो भेट्या दुरगत नो रल्यो दाव ॥
'सेमली' पास जुहार्या जूनो तीरथ जाण ।
'सीरोही' सुखदाई भेट्या भलहल मांण ॥१३॥

'वांभणवाडै' वीर जिणंद सदा सदा सुखकंद ।
'जीवतस्वांम' जुहार्या फट गए भव भय कंद ॥
आव्यो संघ 'अणादरें' गांमै केरी पाज ।
'आबू' अचल गिरंद भेट्या सिवपुर नी ए सांज ॥१४॥

'देवलवाडै' देव जुहार्या आद जिणंद ।
दरस सरस लहि संघ सकल लह्यो अधिक आणंद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यत भावत पूज करी मिल विविध प्रकार ।
सुश्रावक मिल सफल करै अपणो अवतार ॥१५॥

छप्पन कोड सोनईया छलबल करि नें जेण ।
भल प्रासाद करायो तीरथ भाव्यो तेण ॥
'वर्द्धमान' गुरुराज तणो लहि वर उपदेस ।
मांखण जिम दल कोराव्यो सोभा वधीय विशेष ॥१६॥

घोडै चढीयो विमल मंत्री प्रभु सनमुख जोय ।
निरखीह रख्या सिंघ लोक मन अचरिज होइ ॥
.....
.....
.....आगल सनमुख कीध प्रमांण ।
दिन २ हरख सवायो सुरगिरि निकटर्ता जांण ॥
सिंघ आगम सुणि 'पालीतांणा' नो चउविह संघ ।
सिंघ वधावै अधिक आणंदै धर उछरंग ॥२५॥

तलहटीयै डेरा कीया तंबू ऊँचा (कीधा) तांण ।
सोहामण सुंदर गुण गावै चतुर सुजांण ॥
'पालतणी' जात्र करी पहिली तेह प्रमांण ।
ऊँच मनै ऊँचा चढ बीजी जात्रा जांण ॥२६॥

मूल नायक मन रंगे भेट्या आद जिणंद ।
चौमुख षंभ जुहार्या फेड्या दुरगत फंद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरबे निनाणूँ वार समोसर्या रिषभ जिणंद ।
पगला रायण तल प्रणमंता सुख नो लह्यो कंद ॥
अजित शांति पुंडरीक नमंता नयणानंद ।
चेईय चैत्यवंदन कर पाम्यो परमानंद ॥२७॥

सुचता विनयें कीधी स्नात्र पवित्र उदार ।
सग क्षेत्रै धन खरचै प्रघल मनें अणपार ॥
वहु मोला आभरण चढावै प्रभु नें अंग ।
हेम घड्या नग जडीया राजै नवमन रंग ॥२८॥

कडा कंठी कुंडल नें हार वीजोरा सार ।
मुगट तिलक मणि जडीया कहितां नावै पार ॥
आदिनाथ भंडार भरावै उज्जल चित ।
उज्जल धर्म आराधै वहु विध खरचै वित्त ॥२९॥

वड भट्टारक खरतर "महिन्द्र सूरि" मुणिंद ।
चंद जेम चढती कला दीपै तेज दिणंद ॥
सिंघ माल पहिरावी "दानमल्ल" नै तांम ।
"जोरावर" जसधर ना सीधा वंछित काम ॥३०॥

इण पर भाव भगत भल कीधा दिन पचवीस ।
चढत नगारो दीधो सफली मन सुजगीस ॥
"नवखंड पास" जुहार्या नरभव नें लह्यो सार ।
"गवडी पास" जी भेट्या ए आतम आधार ॥३१॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिंघ समेलो सरव हुओ तिहाँ साठ हजार।
"मोरवाडै" जात्रा थई सहु करै जै जै कार॥
सिंघनी ओस पूरांणी अधिक वध्यो आणंद।
सुजस सवायो धवल अमल जिम पूँनिम चंद॥३२॥
"बाफणा" गोत्र वदीतो "बहादरमल्ल" वखांण।
"सवाईसिंघ" "मगनजी" "जोरावर" जग जांण॥
"परतापमल्ल" "दानमल" सिंघवी पदनो धार।
"जेसलमेरी" लखमी लाह लीयो सुखकार॥३३॥

—कलश—

संवत् 'अठारै तेणु' वच्छर मास आसाढ उदार ए।
सहु संघ समेलै तीर्थयात्रा कीध उदार ए॥
अति हेतु "वाचक अमरसिन्धुर" भाव भल चितधार ए।
भेट्या तीरथ जनम सफलो जात्र भल जयकार ए॥३३॥

इति तीर्थमाला स्तवनम्

पाछा पंथ पुलंता "राधनपुर" हितधार।
प्रासादैं जिन पूज्या, सुध समकित संभार॥

गाथा १६ तक गुटके में है, फिर लिखते हुये छोड़ा हुआ है। अन्त की गाथायें एक अन्य प्रति से– जिसका केवल अन्त पत्र ही प्राप्त है, दी गई है। उस पत्र के बोर्डर में निम्नोक्त २ पद्य और लिखे हुए हैं चिह्नित नहीं किया गया।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्व-स्तवन

जै जै ... ...

... ... हो लागै प्यारी । जै. जै. ॥२॥

बाल पणै तिहुं ज्ञान विराजित,
उरग तणो जे उपगारी॥ जै. जै. ॥ ३ ॥

कमठ सठी को मान विडारण,
धींगडमल्ल धनुषधारी ॥ जै. जै. ॥ ४ ॥

विषय विषोपम सरिखा जाणी,
मोह मान ममता मारी ॥ जै. जै. ५ ॥

केवल वरीयो शिवसुख दरीयो,
तरण तारण गुण संभारी ॥ जै. जै. ६ ॥

भविजन तारे पतित उधारे,
अविचल पद लहैं अवतारी ॥ जै. जै. ७ ॥

'अमरचंद' वंदै आणंदै,
तिम वंदे मिल नरनारी ॥ जै. जै. ८ ॥

शान्ति जिन स्तवन

शान्ति ... ...

...हक आस पूरण भणी, कलि मांहे उदयो सुरकंद ॥शां.३॥
अचरानंदन जग जयो, तुम सरिखो नहीं देव न कोय ।
'अमरसिंधुर' नैं आपीयैं, सुख संपत सुनिजर दृग जोय ॥शां.४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुशल गुरु छंद

.....

थूंभ देरावर जाण,
मरोट सुथान बहु माम ॥४६॥
बडी* गुरु शोभा बीकानेर,
जपतां† शत्रु थई गया जेर ।
मुलत्राणै पावौ सेवंता रमी,
साध्या जिहां पंच नदी पंच पीर ॥४७॥
किरोहर मालपुरै बहु क्रीत,
रिणी नवहर सोहे राजगीत ।
भला नर सेव करै भटनेर,
सुठांम दिपंतो सांगानेर ॥४८॥
लुलीने पाय लागंत लाहोर,
जागंती जोत गुरु जालोर ।
प्रसीधो पाटन सोहै पाट,
शेत्रुंजै लाग रह्या गहगाट ॥४९॥
गुरु नां पाय पूजै गिरनार,
खंभायत तेम महा मुखकार ।
सदा सुखदाई सूरत सांम,
ममोई विंदर बाधी मांम ॥५०॥

*वधी †जेपी ने शत्रु किया जिहां जेर ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भलो गुरु थांन सोहै भरवच्छ,
कहीजै भुज्ज देसावर कच्छ ।
मोटा गुरु मांडवीय मंडाण,
मुदै मुंदरे पुर वाधी वांन ॥५१॥
जोधांण सुंथान तणी भल जोड़,
राजै तिहां राज भलो राठोड़ ।
उदैपुर ईडर आद सुथान,
मोहंतो मालपुरै सुप्रमांण ॥५२॥
मेडतै नागोर सु मोमन्न,
चूरू चित चाह धरा कहै धन्न ।
गुढै गुरू वाहडमेर विशाल,
महिम्मा मालापुरै सुविशाल ॥५३॥
सोभूत जैतारण साचो सांम,
तौरणपुर तेम सुधारे कांम ।
अहो गुरू खेजडलै सुप्रधान,
देवीकोट देवगढै सुप्रमांण ॥५४॥
अहो इल कीरत आगरै आज,
जांणे दुख नीर नों तीर जिहाज ।
अहो वीरम्मपुरै राजरीत,
तवुं तिमरीपुर तेम प्रतीत ॥५५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ओपै भल थान अहिंमदाबाद,
भला भीद मांल महा सु प्रसाद ।
आबु† अमरासर कीरत आज,
तौरन्नें तेम गुरू सिरताज ॥५५॥
साचोर सेव कहै दिल शुद्ध,
दिल्ली पुर माँभू बधी बहु वृद्ध ।
आसा भल पूरै आगरै मांभू,
वदुं मिरजापुर तेम बखांण ॥५६॥
काशी सुखराशि पुरंतो प्रेम,
विहार विसाला नमुं नित नेम ।
राजै गुरू रंगपुरे भल रीत,
पाटलीपुर मांभू बाधी बहु प्रीत ॥५७॥
बालोचरे अजीमगंज बखाण,
कहुं कित्तै कीरत जांण ।
ढ़ाकै हुगलीपुर पूरै प्रेम,
दीपै गुरू देरै साचौ तेम ॥५८॥
सुरंगे पाटण साचौ सांम,
ब्रहाणपुरै पिण बखाण ।
आराध्याँ आवै श्री गुरूराज,
कृपानिध कोड़ सुधारै काज ॥५९॥

†आबू (टिप्पणी दो)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुरू गुण गावै गामो गाम,
थटांणा थुंद तिणै ठांम ठांम !
अहो इल माभू न दूजौ देव,
सुरिन्द मुणिंद करंत सु मेव ॥६०॥

पूजै गुरू पाय धरि बहु प्रेम,
नेहै भल जात करै नित नेम ।
आसा तिहां पूरै श्री (गुरू) राय,
दीयै सुखरास निवास सदाय ॥६१॥

सदा सकलाई साची जांण,
जात्री मिल आवै राजा रांण ।
घणां ज्यारै घोड़तां रा घमसांण,
पुणंतां तास न होय प्रमाण ॥६२॥

प्रणम्मै पाय धरां दीयै धोक,
सदा सुख त्यांह न व्यापै शोक ।
प्रणम्मै पुंनिम पुंनिम पाय,
लीला नैं लच्छ मिलै तियां आय ॥६३॥

जपै जिण काज गुरू नें जेह,
तुरत्त मिलावैं आणी तेह ।
न हैजे आय नमै नरनार,
तिहां घर बाधै जय जयकार ॥६४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कलश कवित्त

जपतां जयजयकार, सुगुरू सुखरास समापै ।
जपतां जयजयकार, कष्ट कंदल नै कापै ॥
जपतां जयजयकार, चित्त नी चिंता चूरै ।
जपतां जयजयकार, प्रघल मन आसा पूरै ॥

संवत् अढ़ार वाणू वरस, मुंबई विंदर मन रली ।
कुशलेस सुगुरू गुण गावतां, अमर सिंधुर आसा फली ॥६५॥

—इति श्री—

(अन्तिम तीसरा पत्रही प्राप्त)

चक्रेश्वरी-स्तवन

देशी—गरबानी

देवी चकेसरी, संघ सकल आधार नमूँ परमेश्वरी । देवी० ।

देवी आदीसर ओलग सारै देवी संत जनां नै साधारै ।
देवी आपद भय थी तुं तारै । देवी० ॥१॥

देवी जिन शासन नें उजवाले, देवी भक्त जनां ने प्रतिपालै ।
देवी सेत्रुंजा गिरी ऊपर माल्है । देवी० ॥२॥

देवी चिन्ता तूँ सगली चूरै, देवी प्रघल मनोरथ तूँ पूरै ।
देवी दुख दालिद्र हरै दूरै । देवी० ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देवी दीपै तुं चढते दावै, देवी गुणियन जन मिल गुण गावै ।
देवी म्हारी मोताजो री जोड़ी कोई नावै । देवी० ॥४॥

देवी सुख संपति मुझ ने दीजै, देवी कूरम दृग मो पर कीजै ।
देवी सकल मनोरथ मुझ सीझे । देवी० ॥५॥

ए अरज सुणी देवी आवौ, माय दिन दिन चढत करौ दावौ ।
माय तुझ चौ विरूद अठै चावौ । देवी० ॥६॥

भल अरज सुणी भीरै आवौ, देवी सुख दायक मुख फरमावौ ।
देवी वंछित "अमर" नै दिवरावौ । देवी० ॥७॥

अम्बिका–गीतम्

देशी—गरबानी

मां अंबाई,तो दरसण थी अड़सिध नवनिध पाई । माई.॥१॥
माई रेवंतगिरि ऊपर माल्है, माई गहिर गुणे नित प्रति गाजै ।
माई छत अधिकी ओपम छाजै ॥ माई० ॥२॥
माई नेमिसर ना चरण नमै, माई दोषी जननै तुरत दमै ।
माई गहिरो दुख नै तुरत दमै ॥ माई० ॥३॥
माई चिन्ता पिण मननी चूरै, माई प्रेम अधिक लखमी पूरै ।
माई चरण नमै उदयै सूरै ॥ माई० ॥४॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माय आराध्यां तताखिण आवै, देवी निज सेवक सुख पावै।
माय गोरंगो मिल ु गावै ॥ माई० ॥५॥
निज दास नी आसा तुरत पूरै, देवी नयणानंद चढते नूरै।
म अधिके पुण्य ने अंकूरै ॥ माई० ॥६॥
माय नेह निजर भर निरखीजै, माय वंछित सुख मुझनै दीजै।
माय कारज एतौ हिव कीजै ॥ माई० ॥७॥
वर सुजस त्रंबाल जगत बाजै, सबलो सिंघ असवारी छाजै।
भावठ भय तो दरसै भाजै ॥ माई० ॥८॥
वड वखती बीनति अवधारो, इक सबल भरोसो छै थारो।
अलवेसर आपद थी तारो ॥ माई० ॥९॥
आतंक अरी अलिगा हरिजो, देवी सुख संपत वहिला दीजो।
'अमरेस' आपणड़ा जाणी जै ॥ माई० ॥१०॥

इति अम्बिका गीतम्।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

JAIN PRINTING PRESS, KOTA.

Jain Education International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org